CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी काव्य
में
अलंकार-रस-छन्द

डॉ० व्रजभूषण मिश्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी काव्य में अलंकार-रस-छन्द

लेखक
डॉ० ब्रजभूषण मिश्र
बी० एस-सी०, एम० ए० (हिन्दी), पी-एच० डी०

भारती प्रकाशन
खजांची रोड, पटना-800 004

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Bhojpuri Kavya Men Alankar-Ras-Chhand
भोजपुरी काव्य में अलंकार-रस-छन्द

प्रकाशक
भारती प्रकाशन
खजांची रोड, पटना-800 004
फोन : 659115

लेखक
डॉ० ब्रजभूषण मिश्र
बी० एस-सी०, एम० ए० (हिन्दी), पी-एच० डी०
ई-18/3, कांटी थर्मल पावर, मुजफ्फरपुर-843130

© लेखक

मूल्य
छात्र संस्करण 20 रु०
पुस्तकालय संस्करण 60 रु०

मुद्रक
श्रमिक मुद्रणालय
महेन्द्रू, पटना-800 006

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- समर्पण—

सरगबासी बाबा हरिवंश मिश्र आ इया श्यामा देवी का
पुण्य स्मृति के
जेकर बोअल भोजपुरी संस्कार
हमरा में बिरवा के रूप
ले रहल बा।

—ब्रजभूषण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्व-पीठिका

(क)

हजार बरिस के जतरा के बाद आज भोजपुरी के साहित्य परिनिष्ठित आ परिष्कृत रूप ग्रहण कर चुकल बा। अब भोजपुरी भाषा आ साहित्य अध्ययन आ अध्यापन से जुड़ गइल बा। अध्ययन-अध्यापन के दिसाईं कुछ ग्रन्थन के लेखन-प्रकाशन जरूरी बुझाए लागल बा। अइसनके जरूरत वाला ग्रन्थन में काव्य शास्त्र के ग्रन्थ भी शामिल बा। अइसे संस्कृत आ हिन्दी में काव्य शास्त्र के एक से बढ़के एक ग्रन्थ प्रकाशित बा। रस, अलंकार आ छन्द पर ग्रन्थन के त पूछहीं के का बा। बाकिर, भोजपुरी में छिटफुट रूप से कुछ काम के अलावे पहिला प्रयास स्वनामधन्य शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी जी के देखाई पड़त बा। उहाँ के 'भोजपुरी छन्द मंजरी' आ 'भोजपुरी रस-अलंकार-दीपिका' आ 'गुण-दोष रीति-दर्पण' भोजपुरी के काव्य-शास्त्र सम्बन्धी तीन किताब बा, जवना में परम्परा के निर्वाह करत काव्यशास्त्रीय तत्वन के परिचय पद्य में दिहल गइल बा। उदाहरण भोजपुरी से कतहीं-कतहीएँ आ सकल बा। बहुत सारा उदाहरण आन-आन भाषा का कवितन के उल्था क के चाहे जइसे के तइसे आइल बा। स्व० शास्त्री जी के ई अवदान प्रणम्य आ प्रस्थान विन्दु बा।

'भोजपुरी प्रबन्ध-काव्य : वस्तु आ शिल्प' विषय पर पी-एच० डी० खातिर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करे के क्रम में रस, अलंकार, छन्द पर काम करे के अवसर मिलल आ ओही क्रम में भोजपुरी उदाहरण खोजाइल। बाद में भोजपुरी के विद्वान साहित्यिक श्री नगेन्द्र प्रसाद सिंह जी रस, अलकार आ छन्द वाला कार्य के आगे बढ़ावे खातिर प्रेरित कइनी, जवन पुस्तक रूप में रउरा सभन के सोझा बा। एह पुस्तक के प्रकाशन के समूचा श्रेय अगर केहू के दिहल जाई, त भोजपुरी के आन्दोलनी साहित्यकार आ जुझारू व्यक्तित्व वाला भाई पशुपतिनाथ सिंह जी के। उनका साथ-साथ उनका परिवारो के हम पुस्तक के प्रकाशन के क्रम में तंग करत रहल बानी। एह परिवार के आभार से हम जँताइल बानी। एह पुस्तक लिखला के क्रम में महाकवि आचार्य गणेशदत्त किरण जी के योगदान आ मार्गदर्शन हम आजीवन ना भुला सकीं, जे हमरा घरे रह के आ पूरा पाण्डुलिपि के पढ़के भूल आ त्रुटि के ओर संकेत कइनी। पं० गणेश चौबे जी, पाण्डेय कपिल जी, प्रो० ब्रजकिशोर जी आ विपिन बिहारी चौधरी जी के स्नेह हमरा साथ बराबर रहल बा, जवना के बल पर हम बिना सामर्थ्य आगे बढ़ रहल बानी। कवि मित्र कुमार विरल आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रजकिशोर दूबे जी एकर काफी चर्चा करत रहनी। डॉ० रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव जी एहि पुस्तक के प्रकाशन के ओर प्रेरित करके हमार उत्साह बढ़वनीं। हिन्दी के कवि स्व० नीतीश्वर शर्मा 'नीरज' आज एह पुस्तक के देख के कतना खुश होइतीं हम बुझ रहल बानी। पत्नी किरण के उत्साह आ तेयाग के कारण वित्तीय व्यवस्था हो सकल आ किताब प्रकाशित भइल।

एह पुस्तक के तीन गो मुख्य भाग बा—'भोजपुरी काव्य में अलंकार' जवना में प्रसिद्ध अलंकारन के संस्कृत परिभाषा देत (भोजपुरी व्याख्या सहित) भोजपुरी उदाहरण दिआइल बा। एह उदाहरण में अलंकार कइसे घटित हो रहल बा, बतावल गइल बा। उदाहरण के साथ कवि आ किताब के नाम आ पृष्ठ बतावे के कोशिश कइल गइल बा। 'भोजपुरी काव्य में रस' दोसर भाग बा; जवना में रस, रस सिद्धान्त, साधारणीकरण, मधुमति भूमिका सहित आन-आन तत्त्वन के संक्षिप्त परिचय दिआइल बा। साथ में रस-रसांग विवेचन कइल गइल बाटे आ उपयुक्त भोजपुरी उदाहरण देवे के ओर ध्यान दिहल गइल बा। अइसहीं तीसर भाग—'भोजपुरी काव्य में छन्द' में प्रसिद्ध लौकिक छन्दन के साथ लोकधुन के परिचय आ भोजपुरी उदाहरण, कवि आ किताब के नाम के साथ दिहल गइल बा। उर्दू-फ़ारसी आ विदेशी छन्दन के, जवना के प्रयोग भोजपुरी में हो रहल बा, परिचय आ उदाहरण दिआइल बा। भूमिका —'पूर्व पाठिका' (ख) में काव्य के परिचय, भेद, हेतु, प्रयोजन, गुण, दोष, रीति आ शब्द के परिचय संक्षेप में बा, जे विषय प्रवेश के काम करी। हम उमेद करत बानी कि विद्वान लोग कमी-बेशी के ओर संकेत करी, जवना से अगिला संस्करण के परिष्कृत करे में आसानी होई।

जय भोजपुरी !

—ब्रजभूषण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्व पीठिका

(ख)

काव्य-परिचय

'काव्य' शब्द के अर्थ बड़ा व्यापक बा। एकर सरूप आ परिभाषा निश्चित कइल बड़ा कठिन बा। तबहुँओ काव्यशास्त्र के आचार्य लोग अपना-अपना मत के हिसाब से काव्य का सरूप के परिकल्पना आ परिभाषा कइले बाड़ें। काव्य के कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषा देखल जा सकत बा—

तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि।

—मम्मट, काव्य प्रकाश

वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। —विश्वनाथ, साहित्य दर्पण

रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। —जगन्नाथ, रस गंगाधर

रीतिरात्मा काव्यस्य। - श्रीवामनाचार्य, काव्यालङ्कारसूत्र

उत्तर दिहल गइल परिभाषा सबसे काव्य में शब्द, अर्थ, गुण, दोष, अलंकार, रस, रीति आ रमणीयता के महत्त्वपूर्ण स्थान दिहल गइल बा।

काव्य के मुख्य रूप से दू पक्ष में बाँटल गइल बा—भाव पक्ष आ कला (शैली) पक्ष। संस्कृत का काव्यशास्त्रन में रस, अलंकार, रीति, छन्द विधान के अलगा-अलगा व्यापक अनुशीलन भइल बाटे। एह में रस के सर्वश्रेष्ठता सिद्ध बा एकरा के काव्य के आत्मा मानल जाला। रीति, गुण, अलंकार, छन्द, शरीर के सुन्दरता आ गहना के रूप में जानल जाला।

काव्य-भेद

काव्य के बँटवारा के कई आधार बा। जइसे—

(क) छन्द के सद्भाव आ अभाव के आधार पर—गद्य, पद्य, मिश्र।

(ख) सरूप का विज्ञान के आधार पर—दृश्य आ श्रव्य।

(ग) रमणीयता के आधार पर—उत्तम, मध्यम, अधम।

पहिला आधार

गद्य—छन्द रहित रचना के गद्य कहल जाला। जइसे—उपन्यास, कहानी, कथा, आख्यायिका आदि।

पद्य—छन्दबद्ध रचना, जइसे—हीरा-मोती, कुँअर सिंह, कोइलिया, महाभारत आदि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिश्र—छन्द रहित आ छन्दबद्ध रचना से मिलल-जुलल काव्य रूप मिश्र काव्य चाहे चम्पू काव्य कहल जाला।

दोसरका आधार

दृश्य—जवना काव्य के आनंद देख के उठावल जाए, ऊ दृश्य काव्य ह। जइसे—नाटक, एकांकी, प्रहसन आदि। अइसे एह सबके पढ़ियो-सुनियो के आनन्द मिलेला।

श्रव्य—जवना काव्य के आनन्द पढ़ आ सुन के मिले ऊ श्रव्य काव्य ह। एकर दूगो मुख्य भेद बा—प्रबंध आ मुक्तक।

प्रबंध काव्य—जवना में पद्य कथा वर्णन के अधीन रहेला आ परस्पर सम्बद्धो रहेला। जवन सम्बद्ध रूप से अपना विषय के ज्ञान करावेला, भाव में विभोर आ रस में सराबोर करेला। जइसे—कालजयी कुँवर सिंह, रूक जा बदरा, पाहुर, साहित्य रामायण आदि। प्रबंध काव्य के मुख्य रूप से दू भेद होला – महाकाव्य आ खण्डकाव्य।

महाकाव्य – महाकाव्य के कथावस्तु बड़हन होला, जवना में सम्पूर्ण जीवन के व्यापक चित्रण कइल जाला। जइसे—कालजयी कुँवर सिंह, नारायण वगैरह।

खण्डकाव्य—एह में जीवन के कवनो एक खण्ड के चित्रण होला। जइसे—सुदामा यात्रा, द्रौपदी आदि।

मुक्तक काव्य—मुक्तक काव्य ऊ ह, जवना पद्य में पूर्वापर सम्बन्ध ना होखे। प्रत्येक छन्द आ कविता अपने आपमें पूरा होला! जइसे—'पाँखि सतरंगी' आ 'किरिन छुअत दरपन' के गीत सब।

तीसरका आधार

उत्तम—ऊ काव्य ह, जवना में व्यंग्य अर्थ प्रधान होला। एकरा के ध्वनि काव्य भी कहल जाला।

मध्यम– ऊ काव्य ह, जवना में व्यंग्य अर्थ गौण होला। एकरा के गुणीभूत व्यंग्य काव्य कहल जाला।

अधम—ऊ काव्य ह, जवना में व्यंग्य अर्थ के अभाव होला आ अलंकार के प्रधानता होला।

काव्य हेतु

काव्य रचना के पीछे जवन कारण काम करेला आ जवना कारण से काव्य रचना संभव होखेला, ओह के काव्य हेतु कहल जाला। आचार्य लोग काव्य-रचना के पीछे तीन कारण के चर्चा कइले बाटे—शक्ति, व्युत्पत्ति आ अभ्यास।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्ति के अर्थ ह प्रतिभा, जवन जन्मजात होला। प्रतिभा प्रमुख तत्त्व ह। राम काव्य आ कृष्ण काव्य बहुत लोग लिखल, बाकिर तुलसीदास के राम काव्य आ सूरदास के कृष्ण काव्य का जे सोहरत मिलल, ऊ आन कवियन के काव्य का ना मिलल। तुलसीदास आ सूरदास के काव्य प्रतिभा से ही सर्वोच्च स्थान मिलल।

व्युत्पत्ति के अर्थ ह ज्ञान। ई दू प्रकार के होला—लौकिक आ शास्त्रीय। लौकिक व्युत्पत्ति से काव्य का विषय मिलेला आ शास्त्रीय व्युत्पत्ति से अभिव्यंजना के पद्धति। व्युत्पति के निपुणता भी कहल जाला। काव्य के उत्कर्ष कवि के प्रतिभा के समान ओकरा व्युत्पत्ति पर निर्भर करेला।

अभ्यास से काव्य रचना का सौकर्य मिलेला। अभ्यास से सुघरता आवेला। अभ्यास का अभाव में बढ़ियो प्रतिभा आ ज्ञान धोखा दे जा सकत बा। अभ्यास से सब तत्त्व के उपयोग आसानी से हो जाला।

शक्ति, व्युत्पत्ति आ अभ्याम से संपन्न कवि के रचना उत्कृष्टता प्राप्त करेला।

काव्य-प्रयोजन

काव्य का लक्षण के समान काव्य का प्रयोजन का बारे में भी आचार्य लोग में मतभेद रहल बा। तबहुँओ मम्मट द्वारा काव्य-प्रयोजन का बारे में साफ-साफ निर्देश दिहल गइल बा—

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिवृ्त्तये कान्ता सम्मिततयोपदेश युजे॥

मम्मट के एह श्लोक में यश, अर्थ, व्यवहार ज्ञान, अमंगल निवृत्ति, लोकोत्तर आनंद आ सरस मधुर उपदेश आदि छव गो काव्य के प्रयोजन स्पष्ट बाटे। एह परिभाषा में आउर आचार्य लोग के द्वारा दिहल गइल प्रयोजन समाहित बाटे।

काव्य से कवि का यश मिलेला। बाल्मीकि, व्यास, कबीर, सूर, तुलसी, भिखारी महेन्द्र मिश्र वगैरह एकर उदाहरण बाड़े। काव्य से कवि का धनो के लाभ मिलेला। बिहारी, भूषण वगैरह का खूब धन मिलल। काव्य से व्यवहारिक ज्ञान भी मिलेला। कवना परिस्थिति में का व्यवहार करे के चाहीं, काव्य के पाठक-प्रेक्षक का जानकारी मिलेला। अमंगलो निवृत्ति खातिर काव्य रचना कइल जाला। अइसन उदाहरण मिलेला कि कई कवि लोग अपना काव्य रचना से अमगल निवृत्ति कइल। काव्य से अलौकिक आनंद मिलेला, जे आन वस्तु से संभव नइखे। काव्य के आनंद रचनाकार आ पाठक दुनों के मिलेला। काव्य से सरस-मधुर उपदेश मिलेला। आनंद के साथ उपदेश बहुत दुलर्भ होला। काव्य के ई प्रयोजन खास करके पाठक-श्रोता-दर्शक खातिर बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह प्रकार, ई साफ-साफ पता चलत बा कि काव्य निष्प्रयोजन नइखे हो सकत। ई सप्रयोजन बाटे, एही से मानव जाति के एकरा से गाढ़ प्रेम बाटे।

काव्य : गुण

काव्य रस का नित्य धर्म के 'गुण' मानल जाला, काहे कि रस निष्पति खातिर ई जरूरी होला आ एकरा अभाव में रस के कल्पना ना कइल जा सके। गुण तीन प्रकार के होला— माधुर्य, ओज आ प्रसाद। जवना से हृदय पिघल जाए, द्रवित हो जाए; माधुर्य गुण कहल जाला। जवना काव्य में संयुक्ताक्षर के अभाव. 'र' आ 'ण' के अभाव, समास के अभाव आ टवर्ग के अभाव होई ऊहे माधुर्य गुण के व्यंजक होई। ओज हृदय में दीप्ति, जोश आवेग पैदा करे वाला होला। एकर व्यंजक वर्ण ह 'ट' वर्ग। जवना काव्य में संयुक्ताक्षर जादे होखे, 'र' आ 'ण' के उपयोग जादे होखे, जवना में सामासिक पद के समावेश होखे; ओज गुण व्यंजक होखे। अनायास हृदय में व्याप्त होखे वाला प्रसाद गुण स्वच्छन्दता, स्पष्टता के सहारा लेके काव्य अर्थ के स्वच्छ आ स्पष्ट करेला, जवना कारण अभिप्रेत बिना मेहनते कइले समझ में आ जाला। भोजपुरी काव्य में ई तीनो स्वाभाविक रूप से पावल जाला। उदाहरण—

माधुर्य गुण—

सखी न सहेली मैं तो पड़लीं अकेली, मोरी सोने-सी इजतिया बचाव
हथगोड़वा में मेंहदी लगल बलबीर मोर गिरल अँचरवा धराव
—रामकृष्ण वर्मा बलबीर, विरहा नायिका भेद

सुवास विलास बतास में जागल; पी काहाँ पी पपीहा धुन आइल
अचेत सचेत दुनों क उत्सव, चलीं जा रंगाई, प्रकृति रंगाइल
—सत्यनारायण सौरभ, उर्वशी।

ओज गुण—

कूदल कुश ब्रह्मास्त्र सम्हरले
गरवनि ठीक भरत के ताकि
गुत्थम - गुत्थ निरख के फउदी
फरके - फरके भागे झाँकि
झट से लव टूटल, तरकस से
छूटल जब महुरावल बान
भरत बेचारु ताके लगलन
चित्ते टुकुर - टुकुर असमान।
—कुंजन, सीता के लाल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसाद गुण

चढ़ि खराद पर हीरा जइसे
पावे नूतन कान्ति प्रखर
ओइसे गरिमा के जँचला से
पावे नर निखार पुरहर

—शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, सत्यनिष्ठ हरिश्चन्द्र ।

काव्य : दोष

काव्य के शब्द चाहे अर्थ चाहे दुनों के ग्रहण में बाधा उत्पन्न करे वाला तत्वन के दोष के संज्ञा दिहल जाला। काव्याचार्य लोग बहुत चेतनगर होके काव्य दोष से बचत रहल आ जब जेकरा जहाँ काव्य-ग्रहण में दिक्कदारी बुझाइल, ओतहीं काव्य में दोष घोषित कर दिहल। एही से काव्य में दोष के संख्या बहुत बा। तबहुँओ कुछ प्रमुख दोष से कविगण का बचे के चाहीं। भोजपुरी भाषा एगो जनभाषा से साहित्य भाषा के रूप ले रहल बा। एकर मुख्य आधार ग्रामीण अंचल बा, जवन कुछ अटपटा भइला के बावजूदो स्वाभाविक बा। एही से ग्राम्य दोष जइसन काव्य दोष भोजपुरी काव्य के दिसाईं दोष ना मानल जाई। कुछ दोष के उदाहरण इहाँ दिहल जा रहल बा—

शब्द दोष—

चुम्बन के मदिरा के प्रवाह में, रोमांच से सिहरत काँपत भइली
धरती के ओ काम विटप से ऊ सुन्दर सरग के कअलता लपटइली

संयोग शृंगार में माधुर्य व्यंजक वर्ण के प्रयोग होला। ऊपर के पाँतिन में संयुक्ताक्षर, सामासिक शब्द, 'र' वर्ण आ 'ट' वर्ण के प्रयोग से शब्द दोष आ गइल बा।

अर्थ दोष—

मिलन भगवान भगत के बा
मिलन सरगे जगत के बा
मिलन भूखा से भंडारी
मिलन चंदा नखत के बा
मिलन असरन सरन के बा
मिलन माथा चरन के बा
मिले अतमा से परमतमा
मिलन जीवन मरन के बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह पद्यांश में 'मिलन' शब्द के बार-बार आवृत्ति अनवीकृत दोष के उदाहरण बा, जे अर्थ दोष के एगो भेद ह।

छन्द दोष—

जाति निकट पहिचानि तरू, छाँह हिताय जे लोग
पावत अभिमत जगत कर, राव रंग सम भोग

दोहा के दोसरा चरण में ११ मात्रा के जगह पर १२ मात्रा हो गइला से छन्द दोष मानल जाई।

काव्य : रीति

रीति सम्प्रदायवादी भारतीय साहित्याचार्य लोग रीति के काव्य के आत्मा मनले बाड़े—'रीतिरात्मा काव्यस्य'। ई रीति विशिष्ट पद-रचना मानल गइल बाटे। आनन्दवर्द्धन आ मम्मट रीति के नियामक तत्त्वन में वक्ता, वाच्य, विषय आ रस के अनुकूलता अउर औचित्य के स्वीकार कइले बाड़न।

रीति के तीन भेद बा—वैदर्भी, गौड़ी आ पांचाली।

वैदर्भी—ई माधुर्य व्यंजक वर्ण से युक्त आ अल्प सामासिक होला। उदाहरण—

कसमस चोली कसल चुनरिया रँगल झमकल छागल
आइल चैत महीना फागुन रंग उड़ा के भागल

—रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

गौड़ी—ओज व्यंजक वर्ण से भरल आ समास बहुला शब्दावली के गौड़ी कहल जाला। उदाहरण—

वीर घुसें जवने दल में बल
देखि के झुण्ड के झुण्ड गिरेला,
आहि-त्राहि के सोर सुना
कहीं कुण्ड में जाके वितुण्ड गिरेला
ढाल गिरे, तलवार गिरेला
कहीं गजवाजि के मुण्ड गिरेला
सुण्ड पे वाजि के मुण्ड गिरे
कहीं मुण्ड की ऊपर सुण्ड गिरेला

—तारकेश्वर मिश्र 'राही'

पांचाली—गौड़ी आ वैदर्भी के बीच के स्थिति से समन्वित शब्दावली के पांचाली कहल जाला। उदाहरण—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सृष्टि कमल जरि में मृणाले
चिकन कमल दल तन्तुज जाले
मधु मकरंद परागनि - तूही
मन मधुकर मधुआवल

—कुबोध, के।

शब्द शक्ति

जवना शक्ति से शब्द अपना अभीष्ट अर्थ चाहे भाव-विचार के प्रकट करेला, ओही शक्ति के शब्द शक्ति कहल जाला।

काव्य के स्वरूप आ परिभाषा पर विचार कइला से शब्द आ अर्थ दुनों के महत्त्व पता लागत बा। शब्द अभिव्यक्ति के साधन बा अर्थ अनुभूति के रूप। बिना अर्थ शब्द के महत्त्व ना हो सके। शब्द ओह ध्वनि समूह के कहल जाला, जवना के कुछ अर्थ होला। कुछ शब्द के सीधा अर्थ लागेला, कुछ के घुमा के अर्थ लगावल जाला आ कुछ के एक अर्थ सीधा आ दोसर कई अर्थ लागेला। शब्द शक्ति के तीन रूप बा—अभिधा, लक्षणा आ व्यंजना।

अभिधा—शब्द के प्रचलित अर्थ के सीधे-सीधे ग्रहण कइल 'अभिधा' शब्द शक्ति ह। जइसे—'गाय चरत बिया' में गाय का चरला के सीधा-सीधा अर्थ लागत बा, दोसर ना। एह से ई अभिधा के उदाहरण बा।

लक्षणा—शब्द के मुख्य अर्थ बाधित भइला पर रूढ़ि चाहे प्रयोजन के कारण, जवना शक्ति से मुख्य अर्थ से सम्बद्ध गौण अर्थ के जानकारी होखे, लक्षणा शब्द शक्ति कहल जाई। 'रमेशवा त बैल ह' में बैल के अर्थ चौपाया जानवर ना हो के मन्दबुद्धि मेहनतकश के अर्थ के प्रतीति हो रहल बा। एही से ई लक्षणा के उदाहरण बा।

व्यंजना—अभिधा आ लक्षणा का सीमा के बाहर पड़ेवाला अर्थ के जवना शक्ति के द्वारा जानल जाला, ऊ व्यंजना ह। व्यजना शक्ति से एक ही शब्द के कई गो व्यंग्य अर्थ लगावल जा सकत बा। जइसे—'सुरूज डूब गइल'। एह वाक्य के नीचे लिखल कई गो अर्थ लगावल जा सकत बा—

(क) खेले वाला लइकन खातिर खेल बन्द करे के संकेत।
(ख) गाय चरावे वालन खातिर चरवाही बन्द करे के संकेत।
(ग) पूजा-पाठ करेवालन खातिर संध्या-पूजा के संकेत।
(घ) मजदूरन खातिर काम बन्द करे के संकेत।
(ङ) कवनो लमहर व्यक्तित्व के मरल।

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

अध्याय	पृष्ठ
१. पूर्व पीठिका (क)	क-ख
२. पूर्व पीठिका (ख) काव्य परिचय, काव्य भेद, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य गुण, काव्य दोष, शब्द शक्ति	१-७
३. भोजपुरी काव्य में अलंकार अलंकार : परिभाषा आ परिचय-९, अलंकार : भेद-१०, अलंकार : वर्गीकृत सूची-११, प्रसिद्ध अलंकारन के मान्य परिभाषा आ भोजपुरी काव्य से उदाहरण; शब्दालंकार-१२, अर्थालंकार-१६, शृंखलामूलक अलंकार-२४, अतिशय मूलक अलंकार-२६	९-३०
४. भोजपुरी काव्य में रस रस आ रस निष्पत्ति-३१, विभाव-३१, अनुभाव-३३, संचारी-३३, स्थायी-भाव-३५, रस-संख्या-३५, रस-सिद्धांत-३७, साधारणीकरण-३८, मधुमति भूमिका-३९, रस-रसांग-सारणी-४०, संचारियन के संक्षिप्त परिचय-४३, रस-४४, शृंगार रस-४४, वीर रस-४७, करुण रस-५१, रौद्र रस-५४, भयानक रस-५७, अद्‌भुत रस-६०, वीभत्स रस-६२, हास्य रस-६४, शांत रस-६६, भक्ति रस-७१, वात्सल्य रस-७५	३१-७६
५. भोजपुरी काव्य में छन्द छन्द : परिभाषा आ परिचय-७७, छन्दशास्त्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द-७९, भोजपुरी कवितन में प्रयुक्त कुछ लौकिक छन्द, ओकर परिचय आ उदाहरण-८०, दोहा-८०, सोरठा-८१, चौपाई-८१, राधिका-८२, गीतिका-८२, हरिगीतिका-८२, रौला-८३, आल्हा-८३, सरसी-८३, बरवै-८३, पीयुषवर्ष-८४, उल्लाला-८४, सुमेरु-८४, दिक्पाल-८४, मानव-८४, पंझटिका-८५, ताटंक-८५, डमरू ताटंक-८५, महाताटंक-८५, उपगीतिका-८६, उपगीति-८६, धाता-८६, विधाता-८६, विष्णुपद-८६, कुंडली-८७, कवित्त-८७, सवैया-८८, लोकधुन-८९, कुछ प्रसिद्ध लोकधुन के प्रकार आ उदाहरण—बिरहा-८९, पूरबी-९०, जोगिरा-९१, मंगल-९१, झुमर-९१, सोहर-९१, फगुआ-९२, चइता-९२, कजरी-९३, जँतसार-९४, बारहमासा-९४, उर्दू-फारसी से अपनावल गइल छन्द-९५, विदेशी छन्द-९६, सॉनेट-९७, हाइकू-९८	७७-९८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी काव्य में अलंकार

अलंकार : परिभाषा आ परिचय

दण्डी के कहनाम वा—"काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।"[1] मतलब ई कि "काव्य में शोभा आ सौन्दर्य लावे वाला साधन चाहे धर्म के अलंकार कहल जाला।" ओइसहूँ 'अलम्' के अर्थ होला गहना—भूषण। जे भूषित करे ऊहे अलंकार ह। आधुनिक भाषा में विद्वान लोग अलंकारशास्त्र के सौन्दर्य विज्ञान कहेला। काव्य में 'अलंकार' के महत्त्व 'रस' आ 'गुण' के बाद मानल जाला। वामन के मत वा—"काव्यशोभाया: कर्त्तारो गुणा:। तदतिशयहेतवश्चालंकारा:।"[2] 'गुण' काव्य में काव्यत्व लावे वाला धर्म ह आ 'अलंकार' काव्य के उत्कृष्ट बनावे वाला धर्म। वामन इहो कहले बाड़न कि अलंकारे के कारण काव्य ग्राह्य आ उपादेय होला आ इहे सौन्दर्य ह।[3] विश्वनाथो के कहनाम मिलत-जुलत बुझात वा—'शब्द, आ 'अर्थ' के जे शोभातिशायी अर्थात् सौन्दर्य के विभूति बढ़ावे वाला धर्म ह, उहे अलंकार ह।"[4]

अलंकार से रचना में प्रभावोत्पादकता, चातुर्य आ उक्ति वैचित्र्य के पुट लाग जाला। अलंकार से अभिप्राय जादा साफ हो जाला। जब हमनी कवनो लइका के देख के कहिला—'ई गुलाव के फूल बा' त हमनी के कहनाम में एगो खास चमत्कार आ जाला। 'गुलाव' लइका के सुन्नरपन, कोमलपन, आकर्षण वगैरह के बोध एके साथ करवा देत वा। 'ई बालक सुन्नर वा' कहला से ऊ चमत्कार पैदा नइखे हो पावंत। अइसहीं अगर केहू कहे—'फलनवा बड़ा दानी वा' त ई एगो सोझ वाक्य होई। एह में कवनो सौन्दर्य आ चमत्कार नइखे। एह से एकरा के काव्य ना कहल जा सके। अगर एकरे के अलंकृत करके कहल जाय त एह में सौन्दर्य, चमत्कार आ चातुरी स्वयं आ जाई। जइसे—

(क) ऊ त दान करे में कर्ण अस बा।—उपमा

(ख) ऊ त जइसे कर्ण के अवतार बा।—उत्प्रेक्षा

(ग) ऊ त दान के गंगा बहा रहल बा।—रूपक

---

1. दण्डी—काव्यादर्श
2. वामन—काव्यालंकार सूत्र
3. काव्यं ग्राह्यमलंकारात्। सौन्दर्यमलंकार:।—वामन, काव्यालंकार सूत्र।
4. शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्मा: शोभातिशायिन:।—विश्वनाथ, साहित्य दर्पण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(घ) ओकरा अइसन उहे दानी बा।--अनन्वय

एह अलंकृत वाक्यन में चमत्कार आ सौन्दर्य के प्रचुरता बा। उक्ति चातुरी के पुट बा। एही से पुराना आचार्य से ले के आधुनिक साहित्यकार तक, सब लोग काव्य में अलंकार के महत्त्वपूर्ण स्थान मनले बाड़न।

जहवाँ 'अलंकृत शब्दार्थ' के काव्य कहल गइल बा, उहवाँ अलंकार के काव्य के प्राण मानल गइल बा। एकरा साथ-साथ इहो निर्विवाद बात बाटे कि काव्य के उपादेयता अलंकारे पर निर्भर करेला। काव्य का काव्यत्व अलंकृत शब्द आ अलंकृत अर्थ द्वारा ही प्राप्त होला। अलंकार रस का उत्पत्ति में भी सहायक होला। भाषा चाहे विचार आ रचना-विधान में अलंकारन के बिना कबहूँ चमत्कार आइये नइखे सकत। अलंकार भाषा के स्वाभाविक अंग बा। अलंकार के भाषा से अलग नइखे कइल जा सकत। बिना अलंकार के भाव पूरा-पूरा प्रकट ना कइल जा सके आ ना भाषा बन सकेला। अलंकार कवि-प्रतिभा के स्वच्छन्द उड़ान आ सर्वतोन्मुखी गति में सहायता करेला। एह प्रकार ई सर्वमान्य सिद्धान्त बा कि काव्य के चमत्कार के मूल आधार अलंकारे बाटे।

अलंकार : भेद

तीन तरह से काव्य के सौन्दर्य बढ़ावे में अलंकार सहायक होला—

(१) शब्द चमत्कार से, (२) अर्थ चमत्कार से आ (३) शब्द आ अर्थ, दुनों के सम्मिलित चमत्कार के द्वारा। एही तीनों के आधार पर अलंकार के तीन भेद—(१) शब्दालंकार, (२) अर्थालंकार आ (३) उभयालंकार कइल गइल बाटे।

शब्दालंकार—जवना से खाली शब्दन में लालित्य आ चमत्कार आ जाए ऊ शब्दालंकार कहल जाला। एकर मतलब ई कि शब्दालंकारन में चमत्कार के मुख्य आधार कुछ शब्द होला। शब्दालंकार के तीन गो स्वरूप होला—

१. आवृत्ति मूलक—जवना में वर्ण, पद चाहे शब्द के आवृत्ति होखे।

२. श्लेषमूलक—जे श्लेष पर आधारित होला।

३. चित्रमूलक—जवना में वर्ण चाहे शब्द के विचित्रता होखे।

अर्थालंकार—जहाँ सौन्दर्य आ चमत्कार के आधार 'अर्थ' होखे, उहाँ अर्थालंकार होला। मतलब कि कवनो शब्द विशेष के ओकरा स्थान से हटा के ओकर पर्यायवाची शब्द रख दिहला पर उहे सौन्दर्य बनल रहे, उहे अर्थालंकार होला। अर्थालंकार में सौन्दर्य अर्थ पर निर्भर होला।

अर्थालंकार कई प्रकार के होला—साधर्म्यमूलक, विरोधगर्भमूलक, शृंखलामूलक, गूढ़ार्थ प्रतीतिमूलक, गोपनमूलक, लोकन्यायमूलक आ अतिशयमूलक अलंकार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उभयालंकार—उभयालंकार में 'शब्द' आ 'अर्थ' दुनों से चमत्कार पैदा होला।

एह तीनों प्रकार के अलंकारन के अतिरिक्त अउर-अउर नया-नया अलंकारन के समावेश भइल जात बा, जवना के शब्दालंकार, अर्थालंकार आ उभयालंकार में ना राखल जा सके। आज काल्ह कुछ पाश्चात्य अलंकारन के भी भारतीय साहित्य में प्रचुरता से प्रयोग हो रहल बा।

अलंकार : वर्गीकृत सूची

(क) **शब्दालंकार**—अनुप्रास (छेकानुप्रास, वृत्यानुप्रास आ लाटानुप्रास), यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्तवदाभास, वीप्सा, प्रहेलिका आ चित्र।

(ख) **अर्थालंकार**—(१) **साधर्म्यमूलक**—उपमा, मालोपमा, रशनोपमा, उपमेयोपमा, अनन्वय, रूपक, परिणाम, स्मरण, भ्रांतिमान्, संदेह, उल्लेख, अपह्नुति, प्रतिषेध, उत्प्रेक्षा, तुल्ययोगिता, दीपक, प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त, निदर्शना, व्यतिरेक, सहोक्ति, विनोक्ति, अर्थान्तिरन्यास आ विकस्वर।

२. **विरोधगर्भमूलक**—विरोध, असंभव, विभावना, विशेषोक्ति, सम, विचित्र, अधिक, अल्प, अन्योन्य, विशेष, मुद्रा, रत्नावली, व्याघात, विधि, असंगति, आक्षेप, विषम आ विषादन।

३. **शृंखलामूलक**—कारणमाला, एकावली, मालादीपक आ सार।

४. **गूढ़ार्थप्रतीतिमूलक**—सूक्ष्म, व्याजोक्ति, स्वभावोक्ति आ भाविक।

५. **गोपनमूलक**—पिहित, अप्रस्तुतप्रशंसा, प्रस्तुतांकुर, समासोक्ति, व्याजस्तुति, निरुक्ति, विवृतोक्ति, गूढ़ोक्ति, मिथ्याध्यवसिति, लेश, लोकोक्ति, छेकोक्ति, युक्ति, उल्लास, अवज्ञा, अनुज्ञा, ललित, परिकर आ परिकरांकुर।

६. **लोकन्यायमूलक अलंकार**—हेतु, अनुमान, काव्यलिंग, उत्तरसामान्य, विशेषक, अनुगुण, पूर्वरूप, तद्गुण, अतद्गुण, मीलित, उन्मीलित, प्रत्यनीक, प्रतीप, विकल्प, समुच्चय, समाधि, प्रहर्षण, परिसंख्या, यथासंख्य, परिवृत्ति, अर्थापत्ति आ पर्याय।

७. **अतिशयमूलक अलंकार**—अतिशयोक्ति, अत्युक्ति, उदात्त, प्रौढ़ोक्ति आ संभावना।

(ग) **उभयालंकार**—संसृष्टि आ संकर।

(घ) **अन्य**—शब्द श्लेष, प्रश्न, उत्तर, अर्थ श्लेष आदि।

(ङ) **पाश्चात्य अलंकार**—मानवीकरण, ध्वन्यर्थ व्यंजना आदि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसिद्ध अलंकारन के मान्य परिभाषा आ भोजपुरी काव्य से उदाहरण

शब्दालंकार

अनुप्रास—जहाँ व्यंजन के समता होखे, भले उनकर स्वर मिले चाहे ना; उहाँ अनुप्रास अलंकार होला। अनुप्रास में तीन खण्ड बा—अनु+प्र+आस। 'अनु' के मतलब होला आवृत्ति, 'प्र' के प्रकर्ष आ 'आस' के अर्थ होई राखल चाहे विन्यास कइल। मिला-जुला के एकर अर्थ भइल जहाँ पर वर्ण बार-बार आवृत्ति के साथ जवरे-जवरे राखल जाये। एकर कई भेद होला—

छेकानुप्रास—जब अनेक व्यंजन के एक बेर स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति होखे, त ओकरा के छेकानुप्रास कहल जाला। श्री विश्वनाथ कविराज के कहनाम बा—

"छेकोव्यंजनसंघस्य सकृत साम्यमनेकधा"।

—साहित्य दर्पण (दशम परिच्छेद, नवम् संस्करण, पृ० २७५)

उदाहरण—सुरपुर नरपुर नाग नगरिया
रंग विरंगी बाग बजरिया
अधरम धरम, करम कुकरम के

—रघुनाथशरण शुक्ल 'कुवोध' (के, पृ० ८)

इहाँ 'सुरपुर नरपुर' में र प र के; 'नाग नगरिया' में न आ ग के; 'रंग विरंगी' में र आ ग के; 'बाग बजरिया' में ब के; 'अधरम धरम' में ध र म के, आ 'करम कुकरम' में क र म के एक-एक बेर आवृत्ति से छेकानुप्रास होई।

वृत्यानुप्रास—अगर जे एक व्यंजन के एक बेर चाहे अनेक बेर, अनेक व्यंजन के एक बेर चाहे अनेक बेर स्वरूप से भा अनेक व्यंजन के स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति होखेला, त वृत्यानुप्रास कहल जाला। विश्वनाथ कविराज के कथन बा —

"अनेकस्येकधा साम्यमसकृतद्वापयनेकधा।
एकस्य सकृदप्येष कृत्यानुप्रास उच्यते॥४१॥"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० २७५

उदाहरण—दन दनात, दन-दनदनात दन-दन-दन-दन
फन फनात, फन-फनफनात फन-फन-फन-फन

—अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी' (सेवकायन, पृ० ५१)

इहाँ पहिलकी पाँति में द आ न के आउर दोसरका पाँति में फ आ न के कतना बेर स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति भइल बाटे। अइसहीं—

बगिया बेयरिया बहारे बसंत चाहे आवे ना आवे
केसिया किरिनिया सँवारे बसंत चाहे आवे ना आवे

कुमार विरल (किरिन छुअत दरपन, पृ० सतरह)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ पहिलकी पाँति में शब्द के शुरू में व व्यंजन के कई वेर आवृत्ति भइला से वृत्यानुप्रास के उदाहरण बा।

लाटानुप्रास—जहाँ शब्द आ अर्थ के आवृत्ति में अभिप्राय मात्र के भिन्नता होखे, उहाँ लाटानुप्रास होला। विश्वनाथ कविराज के अनुसार—

"शब्दार्थयो पौनरुक्त्यं भेदे तात्पर्यमात्रतः। लाटानुप्रास इत्युक्तो"।

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० २७७

उदाहरण—लोहन से लोह कटई, काँटन से काँट कढ़ई
पुतरी कऽचोट खाइ घायल पुतरिया।
बेंटन जब काठ क टँगारिन में लागि जाले
काटि देले काठन क मोट मोट डरिया।
जतिया कऽ बैरी बनि जाति बड़ि दुख देइ,
कुकुर के देखतई भूँकेली कुकुरिया।
गोरन की ओर से लड़ल डुमराँव राज
हाइ भोजपुरिया कि खाइ भोजपुरिया।

—चन्द्रशेखर मिश्र (कुअँर सिंह, पृ० २२८)

इहाँ लोहा, काँट, काठ, जाति, कुकुर आ भोजपुरिया शब्द के आ एकनी के अर्थ के एक रहलो पर तात्पर्य भेद बा। एगो लोहा काटे वाला, दोसर कटाये वाला, एक काँट गड़े वाला, एक गड़ल काँट काढ़े वाला, एगो काठ काटे वाला त दोसर कटाये वाला; एक जाति दुखी त दोसर दुख देवे वाला, एक कुकुर भूँके वाला त दोसर देखल जाए वाला आ एक भोजपुरिया धोखा देवे वाला त दोसर धोखा खाये वाला बाटे। एही से इहाँ लाटानुप्रास अलंकार बा।

यमक—जहवाँ एक शब्द शब्दांश चाहे वाक्य खंड के ओही क्रम से आवृत्ति होखे, बाकिर हर घड़ी अर्थ अलग-अलग होखे, त यमक अलंकार के सृष्टि होला। विश्वनाथ के कहनाम बा—

"सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वर व्यंजन संहते।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते ॥८॥"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० २८०

यमक अलंकार में स्वर सहित सार्थक आ निरर्थक दुनों तरह के वर्ण के आवृत्ति होला।

उदाहरण—पारथ भारत में महभारत
के के हराई आ के के जिताई

—रामवचन शास्त्री अँजोर (निरधन के घनश्याम, पृ० १३७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ पारथ-भारत में भारथ के अर्थ भीष्म आ महाभारत में भारत देश आ युद्ध के अर्थ में आइल बा।

फूट न कौड़ी काम के, ढोल गँवार अँगार।
फूट बढ़ावत दाम के, फूट कपास अँगार।

—लोक प्रचलित सूक्ति

इहाँ पहिलकी पाँति के 'फूट' बैर खातिर आइल बा। दोसरका पाँति में एक फूट के अर्थ परिपक्वता बा त दोसरका फूट के अर्थ फल बा।

समय रूप रूपइया लेके, अइलीं हम बजरिया हो,
बेसाहे खातिर ना कुछ नीमऽन सउदवा हो. बेसाहे खातिर ना।

--शिवनंदन मिश्र नंद (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० १८७)

इहाँ 'रूप रूपइया' में र प के आवृत्ति अलग-अलग अर्थ में होत बा, एही से ई यमक अलंकार के उदाहरण बाटे।

श्लेष—श्लिष्ट शब्दन से अनेक अर्थ के कथन के श्लेष अलंकार कहल जाला। जहवाँ एके शब्द से अनेक अर्थ निकले, उहाँ श्लेष अलंकार होला। विश्वनाथ कविराज के परिभाषा बाटे—

"श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते ॥
शब्दैः स्वभावदेकार्थैः श्लेषोऽनेकार्थवाचनम् ॥११॥"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० २८२

श्लेष के दू भेद—'अभंगश्लेष' आ 'सभंगश्लेष' होला। जहाँ पद के बिना भंगले अन्यार्थ के प्रतीति हो जाए, उहाँ अभंगश्लेष होई। जहाँ एक से अधिक अर्थ के प्रतीति श्लिष्ट शब्दन के अवयव के भंग करके कइल जाए, उहाँ सभंगश्लेष होई।

उदाहरण—आज बरसाइत रगरवा मचावो जिन नहके झगरवा उठाव
अपनो ही बरवा मैं पूजो बलबीरवा पीपरवा पूजन तूही जाव ॥

—रामकृष्ण वर्मा बलवीर (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० १४३)

इहाँ 'बरवा' के बिना भंग कइले 'बरगद के गाछ' आ 'प्रियतम' दू अर्थ निकलत बा; एही से इहाँ अभंगश्लेष बा। 'पीपरवा' में 'पीपर के गाछ' आ 'दोसरा के पिया' ई दू अर्थ निकलत बा। इहाँ सभंगश्लेष बा।

एक उदाहरण इहाँ आउर दिहल जा रहल बा—

चढ़ी जे कमान त कमान घूम भाग चली
चारा ना चली कबो पइब ना चारा तू
बानन के चोट खाके बान मय छूट जाई
तारा से देख लेब दुपहरिये तारा तू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उजड़ जाई नीर दूनू नयनन से नीर झड़ी
पारा के चढ़ते ढरकब बनि पारा तू
बाजी जब लागल तब बाजी ना तोहार चली
कारा का होते समा जइब कारा तू

—गणेशदत्त किरण (किरण बावनी)

इहाँ कमान, चारा, बान, तारा, नीर, पारा, बाजी आ कारा जइसन शब्दन से अनेक अर्थ निकलला के कारण श्लेषालंकार होई।

वीप्सा—जहवाँ एकदम आदर, आश्चर्य, उत्साह, घृणा, शोक, हर्ष आदि प्रकट करे खातिर शब्द के दोहरावल जाए, उहाँ वीप्सा अलंकार होला। भोज के अनुसार एकर परिभाषा बाटे—

स्वभावतश्च गौण्या च वीप्साभीक्ष्ण्यादिभिश्च सा।
नाम्नाद्विरुक्तिभिवाक्ये तद्नुप्रास उच्यते ।।"

—संस्कृत कण्ठाभरण, पृ० २/६६

उदाहरण—नदिया किनारे एक ठे चिता धुँधुआले
लुतिया उड़ि-उड़ि गगनवा में जाय।
लहकि-लहकि चिता लकड़ी जलावै,
धधकि-धधकि नदी के सनवा दिखावैं।

—ठाकुर विश्राम सिंह (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० २५४)

इहाँ 'उड़ि-उड़ि', 'लहकि-लहकि' आ 'धधकि-धधकि' में वीप्सा अलंकार बाटे।

वक्रोक्ति—अगर वक्ता के अन्यार्थक वाक्य के श्लेष चाहे काकु से श्रोता अलग अर्थ लगावे त वक्रोक्ति अलंकार होई। विश्वनाथ के परिभाषा बा—

"अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यम् अन्यथा योजयेद्यदि।
अन्य: श्लेषेषा काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततोधद्वि ।।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० २८०

काकु के अर्थ होला कंठ से विशेष ढंग से आवाज निकाल के बोलल।

उदाहरण—राजसूय यज्ञ भैल, शिशुपाल बधि भैल
अपने से धर्म के महान अब मनि हैं

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी)

इहाँ 'धर्म' के दू अर्थ हो सकत बा, एक जवन धारण कइल जाय आ दोसर युधिष्ठिर।

आउर सबै रंग दाबत - डूबत
अंबर चीरि पीतंबर आइल

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० १२६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ चीरहरण के समय चीर बढ़ावे के प्रसंग में ई पाँति आइल बाटे, जवना के अर्थ इहो बा कि आकाश मार्ग से श्रीकृष्ण अइलन। अम्बर के अर्थ कपड़ा आ आकाश दुनो होला अउर पीतंबर के पीअर कपड़ा आ श्रीकृष्ण दुनो।

अर्थालंकार

अर्थ के अलंकृत करेवाला अलंकार के अर्थालंकार कहल जाला, ई बतावल जा चुकल बा। अर्थालंकार में साधर्म्यमूलक अलंकार प्रधान होला।

उपमा—विश्वनाथ उपमा के परिभाषा देले बाड़न—

"साम्यं वाच्यं वैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः ।। १४ ।।"

—साहित्य दर्पण (द. प.), पृ० २९२

मतलब कि दू पदार्थ में भिन्नता के बावजूद समानता बतवला के 'उपमा' कहल जाला। अर्थालंकार के मूल आधार उपमा बाटे। उपमा के चार गो अंग होला—उपमेय, उपमान, धर्म आ वाचक। 'उपमेय' ओकरा के कहल जाला जेकर बराबरी देखावल जाए, मतलब कि वर्णनीय विषयवस्तु आ प्रकृति। 'उपमान' ओकरा के कहल जाला जवना से कवनो वस्तु के मेल देखावल जाला। 'धर्म' ओह गुण आ विशेषता के कहल जाला जवन उपमेय आ उपमान दुनों में पावल जाला। 'मुँह चंदा अस चमकत बा' में चंदा आ मुँह के चमकल 'धर्म' बाटे। उपमेय आ उपमान के बराबरी देखावेवाला शब्द के 'वाचक' कहल जाला। जस, अस, जइसन, अइसन, ओइसन आदि एकर उदाहरण बाटे।

उपमा के मुख्य रूप से दू भेद होला—'पूर्णोपमा' और 'लुप्तोपमा'।

पूर्णोपमा—विश्वनाथ के अनुसार—

"सा पूर्णा यदि सामान्य धर्म औपम्यवाचि च उपमेयं चोपमानं भवेद्वाच्यम्। (इयंपुनः) ।। १२ ।।"

मतलब कि, उपमा के चारो अंग के अगर शब्द के द्वारा कथन होखे त 'पूर्णोपमा' होई।

उदाहरण—**छुई मुई रानी सुकुआरि धान पान अस,**
चानके निसान अस देहिया के कजरी।

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ. २६)

इहाँ 'रानी' आ 'देह' उपमेय, 'धान-पान' आ 'चान' उपमान 'अस' वाचक आ सुकुआरि आ साँवलापन (कजरी) 'धर्म' बाटे। एही से इहाँ पूर्णोपमा बाटे।

लुप्तोपमा—विश्वनाथ लिखले बाड़न—

"लुप्ता सामान्यधर्मादेरेकस्य यदि वा द्वयो ।। १७ ।।"

साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० २९५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मतलब कि, उपमेय, उपमान, धर्म आ वाचक में से एगो कवनो गायब होखे त लुप्तोपमा अलंकार होखी।

उदाहरण—इहाँ के नारी विरताई,
दुर्गा काली के अवतार

—रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (किरनमयी, पृ० ६)

इहाँ 'भारतीय नारी' उपमेय, 'दुर्गा काली' उपमान आ 'वीरताई' धर्म बाटे। वाचक गायब वा। एही से इहाँ लुप्तोपमा अलंकार होई।

मालोपमा—विश्वनाथ के कथन बा—

"मालोपमा यदेकस्योपमानं बहु दृश्येत ॥"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३०१

जहवाँ एक उपमेय खातिर अनेक उपमान कहल जाला, उहाँ मालोपमा अलंकार के सृष्टि होला।

उदाहरण—बट अक्षयबट पुन्य प्रतीका।
मन मल नासक औषधि नीका ॥

—दुर्गा शंकर प्र० सिंह 'नाथ', 'साहित्य रामायण' (अयोध्या कांड), पृ० ११२

इहाँ बरगद के पेड़ के अक्षयवट-पुण्य के प्रतीक, मन का मइल के नास करे वाला आ एक प्रकार के औषधि उपमान बतावल गइल बा। इहाँ तीन उपमान से मालोपमा अलंकार के सृष्टि हो जाता।

आगे के उदाहरण में एक उपमेय विवाह योग्य लक्ष्मीबाई खातिर उपमान के झड़ी लगा दिहल गइल बा—

रेखिया उठान मन लूर बिना, बानी ना मीठ सहूर बिना
मदिरा लागे जइसे उदास, बनि के कवनो अंगूर बिना
शिव मंदिर के आंगन जइसे, लागेला सून धतूर बिना
तइसे लक्ष्मी लागे कुँवार, सब कुछ रहते सिन्दूर बिना

—गणेशदत्त 'किरण' (लक्ष्मीबाई, दूसर सर्ग)

उपमेयोपमा—विश्वनाथ के कथन बाटे—

"पर्यायेण द्वयोरेतदुपमायोपमा मता।"

साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३०३

उपमेय आ उपमान के परस्पर एक दोसरा के उपमान आ उपमेय कहल उपमेयोपमा अलंकार ह।

उदाहरण—माई जस गाई रहे. गाई जस माई रहे,
उपराँ से सरग जमीन पर उतार क।

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० ६९)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ माई के गाय के अइसन आ गाय के माई के अइसन बतावल गइल बा। दुनों के ममता आ छोह के बराबरी देखावल गइल बा। माई उपमेय के उपमान गाय आ गाय उपमेय के माई उपमान भइला से उपमेयोपमा अलंकार के सृष्टि होत बा।

अनन्वय—विश्वनाथ अनन्वय के परिभाषा देत लिखले बाड़न—

"उपमानोपमेयत्वमेकस्यै त्वनन्वयः ।। २६ ।।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३०२

मतलब कि, एक ही वस्तु के उपमेय आ उपमान कहला से अनन्वय अलंकार होला।

उदाहरण—अपने समान बस अपुनई बाटे जौन,
धरती पर जेकरे समान नहीं दुसरी।

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० २५)

इहाँ द्रौपदी के बारे में उनका जइसन उनकरे के बतावल गइल बाटे। एही से अनन्वय अलंकार के सृष्टि होत बा।

स्मरण—स्मरण अलंकार के परिभाषा देत राजानक रूय्यक के कहनाम बा—

"सादृश्यानुभवाद्वस्त्वन्तरस्मृतिः स्मरणम् ।"

—अलंकार सर्वस्व, पृ० ४०

पहिले से जानल-बूझल वस्तु के समान कवनो वस्तु (उपमान) के देखला-जानला से ओकर (उपमेय) के इयाद पड़ जाय, त स्मरण अलंकार होई।

उदाहरण—शीतल सोम अँजोर अंगार समान हिया मम दागत बाटे।
चन्द्रप्रभा तकले नभ के सिय-चन्द्रमुखी सुधि जागत बाटे ।।

—श्रद्धानन्द पांडेय (श्रीरामकथा, पृ० १३६)

इहाँ चन्द्रप्रभा आ चाँदनी के देख के चन्द्रमा के समान मुँहवाली सीता के इयाद श्रीराम के मन में आ जात बा। एही से इहाँ स्मरण अलंकार होई।

रूपक—विश्वनाथ रूपक के परिभाषा देत लिखले बाड़न—

"रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३०३

जहाँ उपमेय में उपमान के आरोप करके दुनों के अभेद वर्णन कइल जाय, त उहाँ रूपक अलंकार होई। आरोप के मतलब इहाँ रूप दिहला से बा। जहाँ उपमेय के ही रूप दे दिहल जाय, उहाँ रूपक अलंकार होला। आरोप में समानतावाचक पद के कथन ना कइल जाय। उपमेय के उपमान के रूप दिहल जाय, तबहुँओ उपमेय के साथ रहल जरूरी होला। रूपक में तीन बात जरूरी होला—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क) उपमेय के उपमान के रूप दिहल

(ख) वाचक पद के अभाव

(ग) उपमेय के भी साथ-साथ कथन।

उदाहरण—'**मुख चान बा**' कहला पर उपमेय 'मुख' के उपमान चाँद के रूप से दिआत बा। वाचक आ धर्म नइखे।

रूपक के तीन भेद होला—साङ्ग रूपक, निरंग रूपक आ परम्परित रूपक।

साङ्ग रूपक—विश्वनाथ के कहनाम बा—

'अङ्गिनो यदि साङ्गस्य रूपणं सांगमेवतत ।।३०।।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३०५

जहवाँ अंग सहित उपमेय में उपमान के आरोप कइल जाला, उहाँ साङ्गरूपक कहल जाई। एह में उपमेय के अवयवन में उपमान के अवयव के आरोप कइल जाला।

उदाहरण—कवनो रंगीन जवान भाव
विचार के मउरी पेन्हले
शब्दन के डोली पर परिछात
लाल पीयर पगड़ी बन्हले
अछरन के बरियात
अंगुरियन के पोर के सहारे
कलम कँहरिया के कान्ह पर
कल्पना के गाँव में आ रहल बा।

—कुमार विरल (भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, मई, ६०, पृ० १५६)

इहाँ 'कलम' उपमेय के कँहरिया उपमान के रूप दिआइल बा। कलम के काम बा तरह-तरह के अक्षरन के ढोअल (लिखल), ओही तरह 'कँहरिआ' के काम बरिआत ढोअल बाटे। इहाँ सब आरोप शब्द के द्वारा भइल बाटे। एही से इहाँ साङ्ग रूपक अलंकार के सृष्टि होत बा।

एगो दोसर उदाहरण देखल जा सकत बा—

भोर बयार सँगे उठि के छिछियात फिर भटके जियराई।

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० १४६)

'जियरा' उपमेय खातिर 'भोर' बयार उपमान के आरोप साधर्म्य छिछिअइला आ भटकला के सँगे कइल गइल बा। वाचक नइखे। एह से इहाँ साङ्गरूपक अलंकार बा।

निरंग रूपक—विश्वनाथ के अनुसार निरंग रूपक के परिभाषा बा—

"निरङ्ग केवलस्यैव रूपणं तदपि द्विधा ।।३२।।"

—साहित्य दपण (द० प०), पृ० ३०६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ माई के गाय के अइसन आ गाय के माई के अइसन बतावल गइल बा। दुनों के ममता आ छोह के बराबरी देखावल गइल बा। माई उपमेय के उपमान गाय आ गाय उपमेय के माई उपमान भइला से उपमेयोपमा अलंकार के सृष्टि होत बा।

अनन्वय—विश्वनाथ अनन्वय के परिभाषा देत लिखले बाड़न—

"उपमानोपमेयत्वमेकस्यैं त्वनन्वयः ।। २६ ।।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३०२

मतलब कि, एक ही वस्तु के उपमेय आ उपमान कहला से अनन्वय अलंकार होला।

उदाहरण—अपने समान बस अपुनई बाटे जौन,
धरती पर जेकरे समान नहीं दुसरी।

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० २५)

इहाँ द्रौपदी के बारे में उनका जइसन उनकरे के बतावल गइल बाटे। एही से अनन्वय अलंकार के सृष्टि होत बा।

स्मरण—स्मरण अलंकार के परिभाषा देत राजानक रूय्यक के कहनाम बा—

"सादृश्यानुभवाद्वस्त्वन्तरस्मृतिः स्मरणम् ।"

—अलंकार सर्वस्व, पृ० ४०

पहिले से जानल-बूझल वस्तु के समान कवनो वस्तु (उपमान) के देखला-जानला से ओकर (उपमेय) के इयाद पड़ जाय, त स्मरण अलंकार होई।

उदाहरण—शीतल सोम अँजोर अंगार समान हिया मम दागत बाटे।
चन्द्रप्रभा तकले नभ के सिय-चन्द्रमुखी सुधि जागत बाटे ।।

—श्रद्धानन्द पांडेय (श्रीरामकथा, पृ० १३६)

इहाँ चन्द्रप्रभा आ चाँदनी के देख के चन्द्रमा के समान मुँहवाली सीता के इयाद श्रीराम के मन में आ जात बा। एही से इहाँ स्मरण अलंकार होई।

रूपक—विश्वनाथ रूपक के परिभाषा देत लिखले बाड़न—

"रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३०३

जहाँ उपमेय में उपमान के आरोप करके दुनों के अभेद वर्णन कइल जाय, त उहाँ रूपक अलंकार होई। आरोप के मतलब इहाँ रूप दिहला से बा। जहाँ उपमेय के ही रूप दे दिहल जाय, उहाँ रूपक अलंकार होला। आरोप में समानतावाचक पद के कथन ना कइल जाय। उपमेय के उपमान के रूप दिहल जाय, तबहुँओ उपमेय के साथ रहल जरूरी होला। रूपक में तीन बात जरूरी होला—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क) उपमेय के उपमान के रूप दिहल

(ख) वाचक पद के अभाव

(ग) उपमेय के भी साथ-साथ कथन।

उदाहरण—'**मुख चान बा**' कहला पर उपमेय 'मुख' के उपमान चाँद के रूप से दिआत बा। वाचक आ धर्म नइखे।

रूपक के तीन भेद होला—साङ्ग रूपक, निरंग रूपक आ परम्परित रूपक।

साङ्ग रूपक—विश्वनाथ के कहनाम बा—

'अङ्गिनो यदि साङ्गस्य रूपणं सांगमेवतत ।।३०।।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३०५

जहवाँ अंग सहित उपमेय में उपमान के आरोप कइल जाला, उहाँ साङ्गरूपक कहल जाई। एह में उपमेय के अवयवन में उपमान के अवयव के आरोप कइल जाला।

उदाहरण—कवनो रंगीन जवान भाव

विचार के मउरी पेन्हले
शब्दन के डोली पर परिछात
लाल पीयर पगड़ी बन्हले
अछरन के बरियात
अंगुरियन के पोर के सहारे
कलम कँहरिया के कान्ह पर
कल्पना के गाँव में आ रहल बा।

—कुमार विरल (भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, मई, ९०, पृ० १५६)

इहाँ 'कलम' उपमेय के कँहरिया उपमान के रूप दिआइल बा। कलम के काम बा तरह-तरह के अक्षरन के ढोअल (लिखल), ओही तरह 'कँहरिआ' के काम बरिआत ढोअल बाटे। इहाँ सब आरोप शब्द के द्वारा भइल बाटे। एही से इहाँ साङ्ग रूपक अलंकार के सृष्टि होत बा।

एगो दोसर उदाहरण देखल जा सकत बा—

भोर बयार सँगे उठि के छिछियात फिर भटके जियराई।

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० १४६)

'जियरा' उपमेय खातिर 'भोर' बयार उपमान के आरोप साधर्म्य छिछिअइला आ भटकला के सँगे कइल गइल बा। वाचक नइखे। एह से इहाँ साङ्गरूपक अलंकार बा।

निरंग रूपक—विश्वनाथ के अनुसार निरंग रूपक के परिभाषा बा—

"निरङ्ग केवलस्यैव रूपणं तदपि द्विधा ।।३२।।"

—साहित्य दपण (द० प०), पृ० ३०६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवयव से रहित उपमान के जहाँ उपमेय में आरोप कइल जाय, उहाँ निरंग रूपक अलंकार होई।

उदाहरण—**तिरिअइतिन तन रतन अटारी**
बाँकी चितवन नयन कटारी

—रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० ३६)

इहाँ नयन कटारी में घायल करे के गुण के लेके रूपक बान्हल गइल बा। एह में अंग के वर्णन नइखे, एह से इहाँ रूपक अलंकार के सृष्टि होत बा।

परम्परित रूपक—विश्वनाथ के उक्ति बा—

"यत्र कस्यचिदारोपः परारोपण कारणम्। तत्परम्परितं।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३१५

जहवाँ एगो आरोप दोसरा आरोप के कारण होखे, उहाँ परम्परित रूपक होई।

उदाहरण —**आशा बेलि विरिछ लपिटावल**
आश विरिछिया भूईं नियरावल
आशा सुमन आस वास मय

—रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० ३६)

इहाँ एगो आशा (उपमेय) में उपमान फूल के आरोप अंगन के द्वारा भइल बा। जइसे; लतर, वृक्ष, फूल आ सुगन्ध के आरोप भइल बा। एही से इहाँ परम्परित रूपक बा।

उत्प्रेक्षा—उत्प्रेक्षा के बारे में विश्वनाथ के उक्ति बा—

"भवेत्संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३१५

जहाँ उपमेय में कल्पित उपमान के संभावना कइल जाय, उहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होई। उत्प्रेक्षा के अर्थ ह, उत्कट रूप में देखल; मतलब कि, उपमेय में उपमान के प्रबल रूप में देखल उत्प्रेक्षा ह। एकर तीन गो भेद बाटे। जहवाँ कवनो प्रकृत वस्तु में अप्रकृत वस्तु का स्वरूप के संभावना कहल जाय, उहाँ वस्तु उत्प्रेक्षा होई। जहाँ अहेतु में हेतु के संभावना कइल जाय, उहाँ हेतु उत्प्रेक्षा होई। अइसहीं जहाँ अफल में फल के संभावना कइल जाय, उहाँ फलोत्प्रेक्षा होई

उत्प्रेक्षा के उदाहरण—

जइसे विमल चनरमा संगे,
सोहे पूख पुनरवस जोड़ा।
उपरोहित तब बइठि बिरिछ तर,
राज कुँवर से अरज सुनवलन;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारिजात तर सुख से बइठल,
प्रिय जयंत के सरग लोक में,
गुरु वृहस्पति कहलन जइसे।

—दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती (वउधायन,, पृ० ६६)

प्रस्तुत उदाहरण में उपरोहित आ राज कुँवर के खातिर पुख-पुनरवस के जोड़ा आ विमल चनरमा, जयंत आ गुरु वृहस्पति के रूप में देखल गइल बा। एह से इहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार बा।

दृष्टान्त—विद्यानाथ दृष्टान्त के परिभाषा अइसे देले बाड़न—

"द्वयोरर्थयोर्द्विरूपादानं विम्बप्रतिविम्बभावः।"

—प्रतापरूद्रीय, पृ० ३११

जब पहिले कवनो बात कहि के ओकरा के समझावे खातिर दोसर बात कहल जाय आ जवन एके अइसन होखे, त दृष्टान्त अलंकार होई।

दृष्टान्त के मतलब उदाहरण भी ह। कवनो बात के कहके ओकर सच्चाई साबित करेला दोसर बात के कहल जाए त दृष्टान्त अलंकार होई।

उदाहरण—राम कृपा अघ दूर हटे
रवि से निशि के तम भागत लेखा।

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० ५६)

इहाँ पहिले कहल गइल बा कि राम के कृपा से पाप आ दुख दूर हटेला। फेर एह बात के समझावे खातिर ई कहल गइल बा कि जइसे सूर्य से रात के अन्हार भाग जाला, ओइसहीं राम कृपा से पाप भागेला। इहाँ पहिला बात के सच्चाई साबित करे खातिर ओइसनके दोसर बात कहल गइल बा।

सन्देह—विश्वनाथ के परिभाषा बा—

"सन्देहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३५

जहवाँ कवनो वस्तु के सम्बन्ध में सादृशमूलक सन्देह होखे, उहवाँ सन्देह अलंकार होई। कि, का वगैरह शब्दन के द्वारा संदेह प्रकट कइल जाला। कतहीं इनका बिना रहलहूँ काम चल जाला—

उदाहरण—खींचत सारी दुसासन हारी
आ बूड़न लागे समुन्दर सारी
देखि चिहाँ सँउसे दरबारी
कि सारी में नारी कि नारी में सारी

—रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (निरधन के घनश्याम, पृ० ५१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ सारी में नारी के आ नारी में सारी के स्थिति साफ-साफ नइखे बुझात, एही से सन्देह के सृष्टि होत बा।

भ्रांतिमान—भ्रांतिमान के बारे में विश्वनाथ के कथन बा—

"साम्यादतस्मिंस्तद्बुद्धिर्भ्रान्ति प्रतिभोत्थितः ।। ३६ ।।

साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३११

जहाँ भ्रम से कवनो वस्तु के कवनो आन वस्तु मान लिहल जाय, उहाँ भ्रांति चाहे भ्रम अलंकार होई।

उदाहरण—ऊपर से हरि सारी बढ़ावेलें
ज्यों झरना झरलें बहु रंगा,
चीर मुड़ै मुड़ि के सिकुड़ै,
नभ बीच बने बड़ छोट तरंगा।
ई छवि देख के डाह के मारे
मसान से दौड़ल बा सिव नंगा।
संकर कौन नया झटकारत
रोकत बा लटकारी में गंगा?

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० १२८)

इहाँ सारी में झरना के, चीर मुड़ के सिकुड़ला में लहर के आ एह से बनत स्थिति में गंगा के भ्रम पैदा होत बा, एही से इहाँ भ्रांतिमान अलंकार होई।

दीपक—विश्वनाथ दीपक के परिभाषा अइसे देले बाड़न—

"अप्रस्तुत प्रस्तुतयो दीपकं तु निगद्यते।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३२८

मतलब कि, प्रस्तुत आ अप्रस्तुत के एक धर्म कहला के दीपक अलंकार कहल जाला। जब अनेक क्रिया में एक ही कारक के योग होला त 'कारक दीपक' आ जब दू बात में एके क्रिया रहे त 'देहरी दीपक' होला।

उदाहरण—आ एगो बा साला
माँगतो बा, उतरातो बा, गुरनातो बा' बघुआतो बा!

—उदय प्रकाश (बेटी मरे त मरे कुँआर, पृ० १०)

इहाँ एगो कर्त्ता 'साला' खातिर 'माँगल', 'उतराइल', गुरनाइल' आ 'बघुआइल क्रिया आइल बाटे, एही से ई कारक दीपक अलंकार के उदाहरण बाटे। अब एगो देहरी दीपक अलंकार के उदाहरण देखल जाय।

छल न कपट रहे अस बेवहार व।

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० ६६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ दू बात 'छल' आ 'कपट' ख़ातिर एके गो क्रिया—'न रहै' आइल बा।

उल्लेख—विश्वनाथ के उक्ति बा—

"क्वचिद्भेदाद् ग्रहीतृणां विषयानाँ तथा क्वचित्।
एकस्यानेकधोल्लेखो यः, स उल्लेख उच्यते ॥"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३७

ज्ञातृभेद से चाहे विषय भेद से एक वस्तु के अनेक प्रकार के वर्णन उल्लेख अलंकार ह। मतलब कि एक वस्तु के अनेक प्रकार से वर्णन कइल उल्लेख ह।

उदाहरण—नारी पत्थल ह, पानी ह
नारी ह आग जवानी के
जीनगी के कथा कहानी ह
चमकत सिक्का ह चीनी के
लजवन्ती जंगल झाड़ी के
छुवला से कुम्हिला जाला
कुहकत कोइलर बँसवारी के
गावत-गावत रिसिया जाला
नारी माया ह बन्हन ह
हरताल तुतुहिया माहुर ह
नारी मलेयागिरि चन्नन ह
जस नीमन ह तस बाउर ह

—हरीन्द्र हिमकर (रमबोला, पृ० १५)

इहाँ नारी के विभिन्न रूप में उल्लेख बा।

अपह्नुति—विश्वनाथ अपह्नुति के परिभाषा देत लिखले बाड़न—
"निषिध्य विषयं साम्यादन्यारोपे ह्यपह्नुतिः।"—प्रतापरूद्रीय, पृ० २७६

उपमेय के निषेध करके उपमान के स्थापना कइल अपह्नुति ह। अपह्नुति के अर्थ ह छिपावल। एह अलंकार में ना, नाहीं जइसन निषेधवाचक शब्द के सहायता से उपमेय के निषेध कइल जाला।

उदाहरण—सुरमा आँखी में नाहीं ई तू छुलावत बाटऽ।
बाढ़ दुतर्फी बिछुआ पै चढ़ावत बाटऽ॥
अत्तर देही में नाहीं तू ई लगावंत बाटऽ।
जहर के पानी में तेरुआर बुझावत बाटऽ॥

—तेग अली 'तेग' (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० १३७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ 'आँखि में सुरमा लगवला' के निषेध करके (नाहीं शब्द से) छोड़हन तेगा पर शान चढ़वला' के स्थापना कइल गइल बा। ओइसही दोसरा शेर में भी 'देह में अत्तर लगवला' के निषेध करके 'जहर का पानी में तेरुआर बुझवला के स्थापना भइल बा। एह से इहाँ अपह्नुति अलंकार के सृष्टि होत बा।

विभावना---विश्वनाथ के अनुसार विभावना के परिभाषा बा—

"विभावना बिना हेतुं कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते ॥६६॥"

—साहित्य दर्पण (दशम् परिच्छेद), पृ० ३५०

कारण के अभाव में कार्य का उत्पत्ति के वर्णन से विभावना अलंकार के सृष्टि होला। विभावना में कवि कवनो विशेष कारण के बिना कार्य का उत्पत्ति के वर्णन करेला।

असबद श्रवण, परस बिनु मूरत
निसदिन ध्यान पुरूख बिनु सूरत
निरस रसत, सौरभ बिनु सूँघत
जोगी जनम नशावल।

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० ६७)

इहाँ बिना सबद के सुने के कार्य, बिना मूरत के देखे के कार्य, बिना सूरत के पुरुष के रोज ध्यान करे के कार्य, बिना रस के रस प्रवाह के कार्य आ बिना सुंघले सुगंध के कार्य के उत्पत्ति भइला से—वर्णन भइला से इहाँ विभावना के उपस्थिति हो जात बा।

शृंखलामूलक अलंकार

कारणमाला-- विश्वनाथ कारणमाला के परिभाषा देत लिखले बाड़न—

"परं-परं प्रति यदा पूर्वपूर्वस्य हेतुता ॥७६॥
तदा कारणमाला स्यात।"

— साहित्य दर्पण (द० प०), पृ० ३५५

जहाँ कारण आ कार्य के परम्परा कहल जाये, मतलब कि पहिले के कहल बाद के कहला के कारण हो जाये त उहाँ कारणमाला अलंकार होई।

उदाहरण—पावस पुरुआ के उसकावल,
पुरुआ नभ में घन उनहावल,
उनहल घन मधुवन पर मोहन
मंत्रित जल छिरकावल

—रघुनाथशरण शुक्ल कुबोध (के, पु० ३१)

इहाँ 'पावस' के कारण 'पुरवा', 'पुरुवा' के कारण 'घन' (बादल) आ 'घन' के कारण वर्षा (पावस) के शृंखला बन गइल बाटे। एह से इहाँ कारणमाला अलंकार होई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वभावोक्ति—विश्वनाथ के अनुसार—

"स्वभावोक्तिर्दुरुहार्थस्वक्रियारूपवर्णनम् ।।

—साहित्य दर्पण (दशम् परिच्छेद), ९२

स्वभावोक्ति अलंकार के परिभाषा बा। वस्तु के जइसे के तइसे वर्णन के स्वभावोक्ति अलंकार कहल जाला। जइसे—

दाँत बिना बिहँसे ललना मुख देखि हिया हुलसा अगराला
रेशम के अस केस कपार प, अंक लगावत जीव जुड़ाला
घूमल चाहत पारल कान्ह, परीकल बा अति बाल बुझाला
भाँ कइ भागत, नोहत-नोचत, आन करे खिसिया चिचिआला
भा बनि घूरल राम चले, कछु पाइ करे कसि के किलकारी
ठेहुन जात छिलाई त रोवत, धा तब गोद धरे महतारी

—श्रद्धानंद पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० ४३)

इहाँ भगवान श्रीराम के बाल रूप के स्वभाविक वर्णन भइला से स्वभावोक्ति अलंकार बा।

समासोक्ति—पंडितराज जगन्नाथ समासोक्ति के परिभाषा देत लिखले बाड़न—

"यत्रप्रस्तुत धर्मिको व्यवहारः साधारणविशेषणमात्रोपस्थापिताप्रस्तुत धार्मिक व्यवहार भेदेन भासते सा समासोक्ति ।।" —रस गंगाधर, पृ० ४६३

अगर प्रस्तुत के वर्णन कइला से अप्रस्तुत के प्रतीति होखे त समासोक्ति अलंकार होखेला। समासोक्ति के अर्थ ह संक्षेप कथन। एक के वर्णन कइला से दू के बोध होखे, इहाँ संक्षेप के मतलब इहे वा। ई तीन तरह से सम्भव बाटे—एक जइसन विशेषण से, एक जइसन कार्य से आ एक जइसन लिंग से।

उदाहरण—गोरकी बिटियवा टिकुली लगा के
पुरुब किनारे तलैय नहा के
चितवन से अपना जादू चला के
ललकी चुनरिया के अँचरा उड़ा के
तनिका लजा तब बिहँसि खिलखिला के
नुपुर बजावत किरिनिया के निकलल
अपना अटारी के खोललस खिरिकिया
फैलल फजिर के अँजोर।

—रामेश्वर सिंह 'काश्यप' (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० २५६)

इहाँ लिंग, कार्य वगैरह के कारण प्रस्तुत 'भोर' के वर्णन से अप्रस्तुत कवनो चंचल किशोरी के भी बोध भइला के कारण समासोक्ति अलंकार बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकोक्ति—लोकोक्ति के शाब्दिक अर्थ ह लोक के उक्ति चाहे कथन। एह अलंकार में लोक प्रसिद्ध कहावत आ मुहावरा के उल्लेख होला। एकर प्रयोग उचित प्रसंग में ही उचित रहेला। केशव मिश्र के उक्ति बा—

"लोकच्छेकार्भकोन्मत्तभेदादुक्तिश्चतुर्विधा।।"

—अलंकार शेखर, २-३

मतलब कि, लोक, छेक, अर्भक आ मत के कथन लोकोक्ति ह।

उदाहरण— चाँदनी रात में रोज सखी, हमरी अँचरा से अंगार झरेला
राहि के फेर चलीं केतनो अगवाँ दुखवा के पहाड़ परेला
साधि के रोज उठे अरथी, अपमान की आग में जाइ गिरेला
लउके ना धुँवा भले कतहीं हियरा में निरन्तर आगि बरेला

—तारकेश्वर मिश्र 'राही' (लव-कुश, पृ० २५)

इहाँ 'अंगार झरल', 'राहि फेर के चलल', 'आग में गिरल', 'पहाड़ परल' लोक प्रसिद्ध कहावत आ मुहावरा बाड़ें स। एही से ई लोकोक्ति अलंकार के उदाहरण बा।

प्रतीप—साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ के अनुसार प्रतीप अलंकार के परिभाषा बाटे—

"प्रसिद्धयोपमानस्योपमेयत्वकल्पनम्।
निष्फलत्वाभिधानं वा प्रतीपमिति कथ्यते।।"

—साहित्य दर्पण (द० प०), पृ०८७

प्रसिद्ध उपमान के उपमेय बना दिहल प्रतीप अलंकार ह।

उदाहरण—बिरहिन के नैना मतिन सावन के बदरा।
बरस-बरस भेंवेला धरती के अँचरा।।

—गणेशदत्त किरण' (अँजुरी भर गीत, पृ० ४५)

इहाँ 'सावन के बदरा' अस 'बिरहिन के लोर' ना बता के उलटे कहल गइल बा, जबकि प्रसिद्ध त इहे बा कि बिरहिन के लोर, सावन के बदरा अस होला। इहाँ प्रसिद्ध उपमान उपमेय बन गइला से प्रतीप अलंकार के सृष्टि करत बा।

अतिशय मूलक अलंकार

अतिशयोक्ति—विश्वनाथ अतिशयोक्ति अलंकार के परिभाषा देत लिखले बाड़न—

"सिद्धत्वेऽध्यवसायस्याति शयोक्तिर्निगद्यते।।४६।।"

साहित्य दर्पण (दशम् परिच्छेद), पृ० ३२३

उपमेय के छिपा के उपमान के साथ अभेद प्रतीति करावल अतिशयोक्ति अलंकार ह। अतिशयोक्ति के अर्थ ह बढ़ल-चढ़ल कथन। उपमेय के एकदम छिपा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के उपमान से ओकर अभेद देखावल—उपमान से ओकर अभिन्नता देखावल अतिशयोक्ति के विषय ह। दू अलग-अलग वस्तु में अभिन्नता देखा के, अभिन्न वस्तु में भिन्नता देखा के, सम्बन्ध रहला पर सम्बन्ध के अभाव बता के, सम्बन्ध के अभाव में सम्बन्ध बता के आ कहीं कार्य-कारण में सम्बन्ध गड़बड़ा के अतिशयोक्ति अलंकार के चमत्कार पैदा कइल जा सकेला।

उदाहरण—मउरल पात कुसुम कुम्हिलाइल,
मुरुछलि ललित लता लतराइल,
बिरस बिपिन बिनु गंध बिधूनल,
कुसुम कलि मटियावल।

—रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० ८३)

इहाँ उपमेय जीवन गायब बा, उपमान—पात, कुसुम, लता वगैरह के झड़ी लाग गइल बा, जवन जीवन के साथ आपन अभिन्नता बता रहल बा।

अत्युक्ति—जयदेव के अनुसार शौर्य, औदार्य के अद्भुत आ झूठ वर्णन में अत्युक्ति होला—

"अत्युक्तिरद्भुतातथ्यशौर्योदार्यादि वर्णनम् ॥"

—चन्द्रालोक, २/११६

रीतिकालीन आचार्य लोग एकर तीन गो रूप बतवले बा—

(क) कवनो पदार्थ के अतिशय वर्णन।

(ख) शौर्य आ औदार्य के झूठ वर्णन।

(ग) सौन्दर्य के अतिशय वर्णन।

उदाहरण—रूपवा के भरवा त गोरी के पयरवा रे सोझवा धरल नाहीं जाय।
लचि-लचि जाला दैया गोरी की कमरिया जोबनवाँ के बोझवा दबाय॥

—रामकृष्ण वर्मा 'बलवीर' (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० १४३)

इहाँ रूप के भार से पैर के सोझ ना रखल आ स्तन के भार से, मतलब कि बड़ा-बड़ा स्तन के बोझ के कारण कमर के लचक गइला के अतिशय कथन बा। एही से इहाँ अत्युक्ति अलंकार बन रहल बाटे।

संसृष्टि— दंडी के एह अलंकार के बारे में कहनाम बा—

"नानालङ्कार संसृष्टिः संसृष्टिस्तु निगद्यते।
अङ्गाङ्गिभावास्थाननं सर्वेषां समकक्षता॥
इत्यलङ्कारसंसृष्टेर्लक्षणीया द्वयी गतिः॥" काव्यादर्श-५, पृ० ३५९-६०

तिल-तण्डुल न्याय से परस्पर निरपेक्ष अनेक अलंकार के एकत्र स्थिति संसृष्टि अलंकार ह। संसृष्टि के अर्थ ह संसर्ग भा मेल। एही से अनेक अलंकार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेला के संसृष्टि कहल जाई। हँ, अलंकारन के स्थिति स्वतंत्र होखे के चाहीं। ई तीन तरह के होला—(१) शब्दालंकार-संसृष्टि—जहाँ अनेक शब्दालंकार के एकत्र स्वतंत्र रूप होखे, (२) अर्थालंकार-संसृष्टि—जहवाँ अनेक अर्थालंकार के एकत्र स्वतंत्र रूप से स्थिति होखे आ (३) उभयालंकार-संसृष्टि—जहवाँ शब्दालंकार आ अर्थालंकार दुनों के एकत्र स्वतंत्र स्थिति होखे। उभयलंकार संसृष्टि के एगो उदाहरण इहाँ दिहल जा रहल बा—

मोह तिलई के मछरी ह
बिछुड़ी तड़प-तड़प मरी जाई।

—हरीन्द्र हिमकर (रमबोला, पृ० २४)

इहाँ 'मोह' के 'मछरी' से 'उपमा' दिहल गइल बा। 'तड़प-तड़प' में 'वीप्सा' बा। एह से इहाँ अर्थालंकार—'उपमा' आ शब्दालंकार—'वीप्सा' के एकत्र स्वतंत्र स्थिति भइला से उभयलंकार संसृष्टि के स्थिति बनत बा।

अर्थश्लेष—विश्वनाथ के परिभाषा बा—

'शब्दैः स्वभावादेकार्थैः श्लेषोऽनेकार्थवाचनम्।'

—साहित्य दर्पण (दशम् परिच्छेद) पृ० ३४२

जहवाँ स्वभाव से एकार्थवाची शब्दन के द्वारा अनेक अर्थ के कथन कइल जाये त उहाँ 'अर्थश्लेष' अलंकार होई।

उदाहरण—बँहियाँ कटि गइल कटि जाए द,
हमहूँ के लेइ चलते रन में।

—चन्द्रशेखर मिश्र (कुँअर सिंह, पृ० २६८)

इहाँ 'कटि गइल' आ 'कटि जाए देवे' के दू अर्थ में एकार्थवाची 'बहियाँ' के कथन कइल गइल बा। एही से इहाँ अर्थ-श्लेष पैदा होत बा।

प्रश्न अलंकार—जहाँ कवनो अज्ञात जिज्ञासा के शान्ति खातिर प्रश्न मात्र कइल जाला, उहाँ प्रश्न अलंकार के सृष्टि होला।

उदाहरण—के गजराज महारथ नाधल,
कालचक्र के पहिया लागल,
कइल महा अभियान प्रजाहित,
अम्बर छत्र तनावल!
के सुतल के जगावल!

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुवोध' (के, पृ० १६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ सृष्टि रूपी गाड़ी के रचनाकार के बारे में पूछल गइल बा। एक अउर उदाहरण देखल जाव जवना में प्राकृतिक अनुगूँज के कर्त्ता के जाने के इच्छा जतावल गइल बा—

टेर रहल बाँसुरी बाँस पर पलास पर
ऊ के हऽ ? कुछ त कहऽ के हऽ ?

—डा० रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव (हीरा मोती, पृ० ४२)

उत्तर अलंकार—चमत्कारिक उत्तर जहाँ दिहल जाय, उहाँ उत्तर अलंकार होला। जहाँ उत्तर के सुनला भर से प्रश्न के अनुमान लगा लिहल जाय चाहे प्रश्न के संदिग्ध भा असंभाव्य उत्तर दिहल जाय, उहाँ उत्तर अलंकार होई। प्रश्न के वाक्य में ही उत्तर दे दिहला से भी उत्तर अलंकार होला। उदाहरण—

भइल गुलाम देस ई आपन
करी प्रतीष्ठा के के थापन
बन्धन में का प्राण सुनावे
कइसे कवनो बात सुनावे

—हरेन्द्रदेव नारायण (कुँवर सिंह, पृ० १४-१५)

पान सड़ल, घोड़ा अड़ल, से काहे ? फेरला बिना
गदहा दुखी, बाभन दुखी, से काहे ?—लोटे बिना

—लोक उक्ति

कहवाँ से जिव आइल, कहवाँ समाइल हो ?
कहवाँ कइल मुकाम, कहाँ लपटाइल हो ?
निरगुन से जीव आइल सगुन समाइल हो ?
काया गढ़ कइल मुकाम, माया लपटाइल हो ?

—धरमदास (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० ५६)

पाश्चात्य अलंकार—पछिमी साहित्य के अलंकारन में मानवीकरण, विशेषण विपर्यय आ ध्वन्यर्थ व्यंजना के आधुनिक भारतीय साहित्यकार बड़ा प्रेम से अपनवले बा। भला भोजपुरी के साहित्यकार एकरा से कइसे बाँच सकत बा।

मानवीकरण—एकरा के अंग्रेजी में 'पर्सोनिफिकेशन' कहल जाला। भावना में मानवगुण आ ओकरा अंग के, कार्य के आरोप कइल मानवीकरण ह। ई मूर्त्तिमता काव्य के भाषा में वक्रता आ चमत्कृति ला के ओकरा के प्रभावपूर्ण बना देला।

उदाहरण— सुधियन के उड़ल पाँख मनवाँ उत्पाती
ढरकल ना नेह लोर सपना के थाती

—कुमार विरल (किरिन छूअत दरपन, पृ० एकइस)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहवाँ 'सुधि (इयाद) के पाँख उड़ल', 'मन के उत्पाती भइल' मानवीकरण बा।

खुलि गइले पुरुब के रतन केंवड़िया
बिहँसि बिहँसि झाँके भोर
भोरवा के गोर-गोर रूपवा निरेखि देखि
रतिया लजाइ के अकास में लुकइली
आलस के जाल दुनिया से मेटि गइले
त चह-चह चिरइन अलख जगवली
मोहवा के मेटि गइले करिया अन्हरिया
फइलल सगरो अँजोर

—पाण्डेय कपिल (भोर हो गइल, पृ० २७)

इहवाँ 'बिहँसि-बिहँसि भोर के झाँकल' आ 'रात के लजा के लुका गइला में मानवीकरण बा।

ध्वन्यर्थ व्यंजना—ध्वन्यर्थ व्यंजना अलंकार के अभिप्राय काव्यगत शब्द के ओह ध्वनि से बा जे शब्द सामर्थ्य से ही प्रसंग आ अर्थ के उद्‌बोधन करा के एगो चित्र खड़ा कर देवेला। इहे ना काव्य के भीतरिया गुण से अनचिन्हार रहलो पर भाषा के बाहरी सौन्दर्य श्रोता आ पाठक के हृदय में एगो आकर्षण पैदा कर देवेला। एह में अनुप्रास आ यमक के आभास रहला के बावजूद ओह ओरी ध्यान ना जाय, बल्कि ध्वन्यर्थ के ओर ध्यान चल जाला।

आधुनिक कवि ध्वन्यर्थ व्यंजना के ओर खूब ध्यान दे रहल बा।

उदाहरण— 'अररर' अरकि अवनि हिय फाटल
अगिन पखान गलल 'भभ' भभकल
उड़ल फुलिंग, गगन ले सोटल
घुरुमि गगन बरमावल।

— रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० ६५)

इहवाँ धरती के हृदय फटला, आगी के भभकला, फुलिंग के उड़ला वगैरह में शब्द के साथे-साथे चित्र सोझा खाड़ हो जात बा।

भुला गइल/घंटी के टुनटुन/घर लवटत बैलन के
अब सांझी खा/गाँव-गाँव में/फूटत बाटे बम
ठाँय-ठाँय गूँजत बा सगरो/राइफल के आवाज

—ब्रजभूषण मिश्र (घाटी की आवाज, पृ० ६५)

इहाँ टुन-टुन, ठाँय-ठाँय जइसन ध्वन्यर्थक शब्दन के प्रयोग से कथन में गति आ जात बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी काव्य में रस

रस आ रस निष्पत्ति

"रस्यते आस्वाद्यते इति रसः' आ 'सरते इति रसः' के अनुसार साहित्यशास्त्र में रस के प्रयोग काव्यास्वाद भा काव्यानन्द खातिर भइल बा। भरत के नाट्यशास्त्र में 'विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' के विवेचना भइल बा, जवना के अनुसार साहित्य में विभाव (आलंबन आ उद्दीपन), अनुभाव (कायिक, आंगिक प्रकृति-चेष्टा वगैरह) अउर संचारी (व्यभिचारी) के संयोग से रस के निष्पत्ति होला। भारतीय काव्य-शास्त्र में जबकि भरत का एह स्थापना के कम चाहे बेसी रूप में स्वीकार कइला के बावजूद विभाव, अनुभाव आ संचारी के विविध भेद आ स्थितियन के 'संयोग' अउर निष्पत्ति पर मतभेद विवरण आ ग्रहण के सम्बन्ध में बहुत प्रकार से भइल बा।"[1]

विभाव

आचार्य विश्वनाथ विभाव के परिभाषा देत कहले बाड़न—"रत्याद्युद्बोधकाः लोके विभावाः काव्यनाट्ययो"[2] मतलब कि 'सामाजिक' के अन्तर्गत रति, हास वगैरह के जे आस्वादन के योग्य उत्पन्न करेला। ई विभाव आश्रय में भावन के जगइबो करेला आ उनका के उद्दीप्त भी करेला। एही चलते एकर 'आलम्बन' आ 'उद्दीपन' नाम से दू भाग कइल गइल बा।[3] आचार्य विश्वनाथ "आलम्बनो नायकादिस्तमालम्ब्य रसोद्गमात्"[4] कहले बाड़न, मतलब कि जवना वस्तु आ व्यक्ति के चलते कवनो व्यक्ति में कवनो भाव जागेला, ओह वस्तु भा व्यक्ति के ओह भाव के **आलम्बन विभाव** कहल जाला। आलम्बने विभाव असली रस भूमि ह। एकरा बिना काव्य रचना आ काव्यास्वाद दुनो असम्भव बा। जहवाँ आलम्बन स्पष्ट ना हो पावेला, उहवाँ प्रसंग के अनुकूल एकर आरोप कर लिहल जाला। ई आलम्बन दू रूप में उपस्थित होला। कबहीं त ई पात्र-विशेष का भाव के आलम्बन होला आ कबहीं-कबहीं खुद कवि का भाव के। भिन्न-भिन्न आलम्बन के प्रति एके भाव में अन्तर आ सकत बा। जइसे, अपना से आदरणीय का प्रति श्रद्धा

१. साहित्य कोश (भाग-१)—सं० डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ५१८।
२. साहित्य दर्पण—श्री विश्वनाथ कविराज, पृ० ६४।
३. साहित्य कोश (भाग-१)—सं० डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ७८०-८१।
४. साहित्य दर्पण—श्री विश्वनाथ कविराज, पृ० ६५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के, बराबर का प्रति प्रेम के, दीन का प्रति करुणा के रूप धारण कर लेवेला। एह प्रकार से भिन्न-भिन्न भाव के एके आलम्बन हो सकत बा। अर्थात्, अत्याचारी का प्रति केहू ओकरा से क्रोध प्रकट कर सकत बा, केहू ओकरा से घीना सकत बा आ केहू संत उपदेश देवे अउर माफ कर देवे खातिर तत्पर हो सकत बाटे।

भिन्न-भिन्न रस के विचार से आलम्बन भी भिन्न-भिन्न हो जाला। उदाहरण का रूप में श्रृंगार रस के आलम्बन मधुर, सुकुमार, रस-यौवन से भरल-पूरल तन्वंगी आ तरुण बाड़ें, जिनका के नायिका आ नायक कहल जाला। इनकरो सुभाव, आयु, कार्य वगैरह के अनुसार कतना भेद होला। एही तरह से टेंढ़-मेंढ़ आकार वाला, दोसरा का चेष्टा के नकल उतारेवाला हास्य रस के आलंबन होला। त्यागी, सत्य सम्पन्न, शूर-वीर, विक्रमशील व्यक्ति वीर-रस के; विचित्र आकृति आ आचारवाला अद्भुत रस के; बहुबाहु, बहुमुख, भीमद्रष्ट आ क्रूर, उद्धत अउर शठ वगैरह रौद्र रस के; कृष, विषण्ण, मलीन, रोगी, दुखी आ दरिद्र योह त करुण रस के; निंदित आकृति, वेश, कार्यवाला चाहे, रोगी, पिशाच वगैरह वीभत्स-रस के आलम्बन होलन। एही तरह एह सबके अउर भेद उपस्थित कइल जा सकेला। ई परम्परा आधुनिक काल में आके रूप बदल लेवेला। वीर-रस खातिर देश-सेवक, आत्म-वलिदानी, राष्ट्र उन्नायक, देश-सुधारक आ सत्याग्रही वीर लोग के; वीभत्स खातिर देशद्रोही, शत्रु के सहायता करेवाला; हास्य खातिर विशेष वेष-विन्यास चाहे आचरणवाला, मतदान माँगेवाला, प्राचीनतावादी वगैरह; करुण खातिर शोषित जनता, किसान आ निम्न वर्ग, अछूत, दलित आ पतित, निष्काषित शरणार्थी, विधवा चाहे त्रस्त आदमी नया आलम्बन बनल। नयकी कविता में कवि के ध्यान बाहरी सौन्दर्य से हटके भीतरी सौन्दर्य पर जादा जाए लागल। क्रोध के रूप व्यंग्य में खिल रहल बा आ ओकरा खातिर सामाजिक व्यवस्था के विशेष रूप से आलम्बन स्वीकार कइल गइल बा। प्रगतिपादी काव्य में ई नया आलम्बन विशेष रूप से अपनावल गइल बा। आज देश के व्यवस्था, चाहे प्रकृति, चाहे नागरिक-सौन्दर्य, प्रयोगवादी कविता के नया आलम्बन बन रहल बा।[5] एही तरह उद्दीपन के चर्चा करत आचार्य विश्वनाथ के कहनाम बा—"उद्दीपन विभावास्ते रसमउद्दीपयन्ति ये आलम्बनस्य चेष्टाद्या देशकालदयास्तथा"[6] मतलब कि रस के उद्दीप्त करेवाली चेष्टा वगैरह आ देशकाल के हालत उद्दीपन विभाव ह। रस के अनुसार उद्दीपन होला। शारदातनय प्रत्येक रस के अनुसार उद्दीपन के वर्गीकरण

---

५. साहित्य कोश (भाग-१)—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ६३-६४।

६. साहित्य दर्पण—श्री विश्वनाथ कविराज, पृ० ६३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत ओकर क्रमशः ललित, ललिताभास, स्थिर, चित्र, रूक्ष, खर निन्दित आ विकृत नाम से आठ भेद बतवले बाड़न। 'प्रतापरूद्रयशोभूषण' में आलम्बन के गुण, ओकर चेष्टा, ओकर अलंकरण आ तटस्थ के, इहे चार प्रकार के उद्दीपन मनले बाड़न।[7]

अनुभाव

भरत वाक्य आ अंग-संचालन के द्वारा व्यक्त अभिनय रूप भावनाभिव्यंजन के 'अनुभाव' कहल जाला। विश्वनाथ "उद्‌बुद्धं कारणैः स्वैः स्वैर्वहिर्भावः प्रकाशयन्"[8] मतलब कि आलम्वन, उद्दीपन आदि का चलते उत्पन्न भाव के प्रकाशित करेवाला कार्य के अनुभाव कहले बाड़न। हेमचन्द्र, भानुदत्त आ शारदा-तनय अनुभाव के हेतुरूप आ विश्वनाथ अउर पण्डितराज जगन्नाथ कार्यरूप मनले बाड़न। हरेक रस का विचार से ई अनुभाव भी अलग-अलग होला। इन्हनी के संख्या निश्चित ना कइल जा सके; तवहुँओ इनकर कायिक, मानसिक, आहार्य, वाचिक आ सात्विक नामक भेद कइल गइल बाटे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आश्रय मात्र का चेष्टा के अनुभाव मनले बाड़न आ हाव के आलम्वन के मोहक प्रभाव अउर ओकर रमणीयता बढ़ावेवाला मान के उन्हनीं के उद्दीपन विभाव भर मनले बाड़न। अइसे तन का कृत्रिम चेष्टा के कायिक अन्तःकरण का भावना के अनुकूल मन में हरख-विषाद आदि से उद्वेलन के मानसिक अउर मन में जब जइसन भाव पैदा होखे, ओकरा अनुकूल तरह-तरह के कृत्रिम वेश रचना के आहार्य कहल जाला।[9]

संचारी

धनंजय कहले बाड़न कि "विशेषादिभिमुख्येन चरन्तोव्यभिचारिण, स्थायिन्युन्मानमितांग्ना: कल्लौलाइव वारिधौ" मतलब कि जे भाव विशेष रूप से स्थायी भाव का पुष्टि खातिर तत्पर भा अभिमुख रहेला आ स्थायी भाव का भीतरी आवीर्भूत आ तिरोहित होत देखाई देवेला, ऊ संचारी (व्यभिचारी) भाव कहाला। संचारी भाव मुख्य रूप से स्थायी भाव के समुन्दर में लहर अइसन उठत-गिरत रहेला। संचारी भाव स्थायी भाव के पोषक होला। स्थायी भाव स्थिर ह, त संचारी संचरणशील आ अस्थिर। पछीमी विचारक शैन्ड प्रत्येक भाव के एक तरह के व्यवस्था चक्र मनले बाड़न। असल भाव अपना द्वारा प्रवर्त्तित आन भाव सबका आविर्भाव का समय आपन रूप त्याग देवेला। संचारी भाव खाली सहायके का

---

७. साहित्य कोश (भाग-१)—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ११६

८. साहित्य दर्पण—श्री विश्वनाथ कविराज, पृ० ६३।

९. साहित्य कोश (भाग-१)—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० २६-२७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप में काम ना आवेला, बलुक स्वतंत्र रूप में भी उनकर अभिव्यक्ति होला। ओइसन हालत में ओके खाली भाव के संज्ञा दिहल जाला। आचार्य लोग संचारी भाव के संख्या तेंतीस निश्चित कइले बाड़न। भरत जवना तेंतीस संचारियन के प्रस्ताव कइले बाड़न, ऊ कम-बेसी रूप में आ कबहुँ-कबहुँ बदलल नाम से सर्वमान्य हो गइल बाटे। ई संचारी भाव निम्न प्रकार बा—(१) निर्वेद, (२) आवेग, (३) दैन्य, (४) श्रम, (५) मद, (६) जड़ता, (७) औग्रय, (८) मोह, (९) विबोध, (१०) स्वप्न, (११) अपस्मार, (१२) गर्व, (१३) मरण, (१४) अलसता, (१५) अमर्ष, (१६) निद्रा, (१७) जवहित्था, (१८) औत्सुक्य, (१९) उन्माद, (२०) शंका, (२१) स्मृति, (२२) मति, (२३) व्याधि, (२४) संत्रास, (२५) लज्जा, (२६) हर्ष, (२७) असूया, (२८) विषाद, (२९) धृति, (३०) चपलता, (३१) ग्लानि, (३२) चिंता आ (३३) वितर्क। सुखात्मक भाव के साथ सुखात्मक संचारी आ दुखात्मक भाव के साथ दुखात्मक संचारी आपस में अविरुद्ध भइल होई। एही प्रकार सुखात्मक भाव का साथे दुखात्मक संचार विरोधी होई। कवनो भाव के पुष्ट करेवाला मनोविकार ऊहे होई, जे भाव के लक्ष्य अउर प्रवृत्ति से हटे वाला ना होई। भरत भाव के तीन भेद मनले बाड़न—स्थायी, सात्विक आ व्यभिचारी। ऊपर एह बात के संकेत दिहल जा चुकल बा कि सात्विक भाव व्यभिचारी भाव के अन्तर्गत आ जाला। संचारी के प्रतीतिकाल में अनुभाव सब के उदय होला। इनकरे बाहरी संकेत अनुभाव ह। आश्रय आ रचयिता के भाव चाहे अनुभूतियन के संगे जब सामाजिक के पूर्ण तादात्म्य होला, तब कवनो भाव रस अवस्था तक पहुँचेला। रस के अवस्था तक पहुँचावे वाला भाव ही स्थायी भाव होला। "रसावस्थापरं भावः स्थापिता प्रतिपाद्यते" पर जब आश्रय के शंका, लज्जा, ईर्ष्या वगैरह के अभिव्यक्ति होई, तब पाठक भा सामाजिक एह भाव से आपन तादात्म्य स्थापित ना कर पावेला। तादात्म्य स्थापना ही ऊ रेखा बा, जे स्थायी आ संचारी भाव के विभाजित करेला। बाकिर कवनो भाव रस के अवस्था तक विभाव, अनुभाव आ संचारी भाव का मदद से ही पहुँचेला। कवनो स्थायी भाव के रस के अवस्था तक पहुँचावे में संचारी के योग जरूरी बा। बाकिर जब संचारी अकेले वर्ण्य विषय होला, तबहुँओं विभाव, अनुभाव आ संचारी (संचारी के संचारी योग) देखाई पड़ सकेला। तबो आश्रय के रस संचारी भाव से पाठक चाहे सामाजिक के तादात्म्य ना हो पावे। अइसन हालत में एकरा के खाली भाव कहल जाला, स्थायी भाव ना कहल जाला। एह तादात्म्य का हालत के आधार मान के आचार्य लोग कुछ भाव के स्थायी आ कुछ के संचारी कोटि में रखले बा।[10]

१०. साहित्य कोश (भाग-१)—डॉ॰ धीरेन्द्र बर्मा, पृ॰ ८४९-५१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थायी-भाव

अइसन हालत में पण्डितराज जगन्नाथ के कहनाम कुछ वेसी सफाई के संगें स्थायी भाव के महिमा बतलावत बाटे—जवना भाव के सरूप सजातीय आ विजातीय भाव से तिरस्कृत ना हो सके आ जब तक ले रस के आस्वादन हो सके, तब तक जे वर्त्तमान रहे, ऊ स्थायी भाव कहल जाई—"सजातीय-विजातीयैरतिरस्कृत-मूर्त्तभाः यावद्रसं वर्त्तमानः स्थायीभाव उदाहृतः।"

काव्य चाहे नाटक के अनुशीलन भा प्रेषण के अवधि में सामाजिक के चित् कतना तरह के अवान्तर प्रसंग का बिचहूँ ओह मूलगत भाव का प्रतीति से चमत्कृत होत रहेला। भरत अपना नाट्यशास्त्र में जवना ४९ भाव के चर्चा कइले बाड़न, ओहमें तेंतीस गो संचारी भाव बाटे। आठ सात्विक आ शेष आठ गो स्थायी बतलावल गइल बा। स्थायी भाव अउरी सब भाव के तुलना में जादा शक्ति आ गुरुत्व राखेला। इहे उचित परिस्थिति में रस-रूप में परिणत हो जाला। जब जरूरत से जादा ओकर उद्रेक सामाजिक के अन्तःकरण में हो जाला, जवना चर्वणा में ऊ निम्न हो उठेला, तब स्थायी भाव रस कहाए लागेला। स्थायी भाव के मुख्य विशेषता बा,--(१) आस्वाद्यत्व, (२) उत्कृटत्व, (३) सर्वजन सुलभत्व, (४) पुरुषार्थोपयोगिता, (५) उचित विषय निष्ठत्व। स्थायी भाव में एह सब गुण के एक साथ मिल गइल जरूरी बा, काहे कि तबहीं ऊ काव्य में चित्रित होके सहृदय-संवेद्य हो सकेला। यही सब विशेषता के आधार पर रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह भय, जुगुप्सा, विस्मय आ शम चाहे निर्वेद, नौ स्थायी भाव मानल गइल बा। बाद में भक्ति आ वात्सल्य के स्थायी में सामिल कर लिहल गइल बाटे। एह में से प्रत्येक एक रस के स्थायी बाटे। ई भाव सब अपना नियत रस में ही स्थायी के संज्ञा प्राप्त करेला, काहे कि शुरू से आखिर तक आस्वादित होत रहेला। वास्तविक स्थायी भाव के उदाहरण आन जगहा ना, रस के परिपक्वावस्था में ही मिल सकेला।

रस-संख्या

स्थायी भाव, अनुभाव, विभाव आ संचारी भाव के स्थिति, प्रवाह, चरमोत्कर्ष आ परिणति के ध्यान में राख के काव्याचार्य लोग काव्य में रस के संख्या नौ मनले बाड़न,—वीर, शृंगार, करुणा, हास्य. अद्भुत, वीभत्स, रौद्र, भयानक आ शांत। बाद के आचार्य लोग एह में दू गो अउरी रस के वृद्धि प्रबल तर्क के आधार पर कइले बाड़न—भक्ति आ वात्सल्य। भक्ति रस के महत्ता आ ओकर सरूप 'भागवत' में स्थान-स्थान पर व्यक्त भइल बा। शाण्डिल्य भक्ति-सूत्र में भक्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के पुरानुरक्तिश्वरे रूप में परिभाषित करत ओकरा के द्वेष के विरोधिनी आ 'रत' से प्रतिपाद्य होखला के कारण भी राग स्वरूपा कहल गइल बा।

मधुसूदन सरस्वती के 'भक्ति रसायन' नामक ग्रन्थ में भक्ति के अलौकिक महत्त्व आ रसत्व के विशद निरूपण करत ओके एक ओर दसवाँ रस बतावल गइल बा त दोसरा ओर सब रस से श्रेष्ठ भी मानल गइल बा। ओकरा रसांग सब के निर्देश भी भक्ति रसायन में मिलेला। 'भगवद्भक्ति चन्द्रिका' नामक ग्रन्थ के रचयिता भी परा-भक्ति के रस कहले बाड़न—"पराभक्ति प्रोक्तारस इति" (अमृत रसोल्लास)।

गौडीय सम्प्रदाय के प्रतिष्ठित आचार्य रूप गोस्वामी (१५-१६ श० ई०) कृत 'हरिभक्ति रसामृत सिन्धु' में काव्य-शास्त्रीय दृष्टि से भक्ति रस के विस्तार एगो सुनिश्चित व्यवस्था के साथ कइल गइल बा। 'भागवत' के बाद भक्ति रस का मान्यता के सबसे बड़ श्रेय रूप गोस्वामी के ही बाटे।

भक्ति रस के महत्त्व आन-आन रस के तुलना में बतावत हरिऔध जी के कह-नाम बा—'परमात्मा के नाम ह। श्रुति कहत बा—रसो वै सः। रस शब्द के अर्थ बा—यः रसयति आनन्दयति स रसः। वैष्णव लोग खातिर माधुर्य उपासना परमप्रिय बा, एही से भगवदनुरागारूप भक्ति के रस मानल जाला। कन्हैयालाल पोद्दार एह समस्या पर विचार करत 'भक्ति भाव ह कि रस' 'आपन मत बलपूर्वक देले बाड़न भक्ति का रसत्व के पक्ष में—दुख आ अचरज बा कि जवना साक्ष्याभास शृंगारादि रस में चिदानन्द का अंशांश के स्फुरण भर से रसानुभूति होला अउर ओकरा के रस के संज्ञा दिहल जाला। जे साक्षात चिदानन्दात्म भक्ति रस ह, ओकरा के रस ना मान के भाव मानल गइल बा। पोद्दार भक्ति रस का रसांग के व्याख्या नीचे लिखल रूप में निर्धारित कइले बाड़न आ सबके अलौकिक मनले बाड़न। "स्थायी भाव-भगवद् विषयक अनुराग। आलम्बन विभाव—भगवान राम, कृष्ण आदि के अखिल विश्व-सौन्दर्य निधि दिव्य-विग्रह। अनुभाव—भगवान के अनन्य प्रेमजन अश्रु, रोमांच आदि। व्यभिचारी भाव—हर्ष, सुख, आवेग, चपलता, उन्माद, चिन्ता, दैन्य, धृति, स्मृति आ मति"[११]

"वात्सल्य' शब्द 'वत्स' से उत्पन्न आ पुत्रादि विषयक रति के पर्याय बा। एकर प्रयोग रस का अपेक्षा भाव खातिर जादा उपयुक्त बा। साइत एही से पुरान आचार्य लोग 'वात्सल्य रस' ना लिख के 'वत्सल रस' लिखल आ वत्सलता चाहे वात्सल्य के ओकर स्थायी भाव मानल, जइसे—भोजराज (११वीं श० ई० पूर्व)—'शृंगार वीर करुणाद्भुत रौद्र हास्य विभत्सवत्सल भयानक शान्तनाम्नः'। वात्सल्य स्नेह एकर स्थायी भाव होला आ पुत्र वगैरह आलम्बन।…बाल-सुलभ चेष्टा के संगे-संगे

११. साहित्य कोश (भाग-१)—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ४४६-४४७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकर विद्या, शौर्य दया आदि, विशेषता उद्दीपन ह। आलिंगन, अंग-स्पर्श, माथा-चूमल, देखल, रोमांच, आनन्दाश्रु, वगैरह अनुभाव ह, अनिष्ट के आशंका, हर्ष, गर्व वगैरह संचारी मानल जाला।"[12]

विभिन्न विभाव, अनुभाव आ संचारी एक से जादहूँ रस में संचरित होखत मिल सकेला, बाकिर, स्थायी भाव के संतरण ना होखे। हरेक काव्य में मुख्य रूप से एगो रस शुरू से आखिर तक प्रवाहित होला। कवनो दोसर रस ओकर सहयोगी हो सकत बा, बाकिर. विजातीय रस रस के निष्पति में बाधा डाल सकत बा। रस के परि-पाक में बाधा अइला से कवनो जरूरी अनुभाव, विभाव, संचारी का अभाव में चाहे गलत ढंग से अइला के चलते रस-दोष उत्पन्न हो जाला आ कवहुँ-कवहुँ रसाभास भी होला, जवना से काव्य-कोटिच्युत होके अपना स्तर से गिर जाला।

रस-सिद्धांत

विभाव (आलम्बन आ उद्दीपन), अनुभाव, संचारी, भाव के जब स्थायी भाव के साथ संयोग होला, तब रस के निष्पत्ति होला। एह परिभाषा में विभाव, अनुभाव आ संचारी भाव (जेकर विवेचना पहिले हो चुकल बाटे) स्थायी भाव के ही रस में बदल देवेला। बाकिर, भारतीय काव्याचार्य लोग में 'संयोग' आ 'निष्पत्ति'—एह दूनू प्रत्यय पर मतान्तर बा, जे विभिन्न दार्शनिक पृष्ठाधार पर सरणीकृत बा अउर ओह में प्रक्रिया आ परिणाम के अलग-अलग ढंग से व्याख्या-यित कइल जात रहल बा। भरत के एह रस सूत्र के व्याख्या करत भट्ट लोलट जवना सिद्धांत के निरूपण कइलन, ओके उत्पत्तिवाद कहल जाला। एह सिद्धान्त के पृष्ठ-भूमि भट्ट लोलट के सांख्यदर्शन बा जवना के प्रयोग ऊ रस-निष्पत्ति में करत बाड़न। उनका अनुसार जब विभावानुभाव संचारी स्थायी भाव के सन्निकर्ष होला, ऊ ओकरा प्रभाव से अपने उत्पन्न हो जाला, काहे कि उनका अनुसार निष्पत्ति के अरथ उत्पत्ति चाहे पुष्टि ह। आलम्बन, उद्दीपन विभाव के चलते उत्पन्न रति आदि भाव अनु-भाव आदि कार्य से प्रतीत का योग्य होके व्यभिचारी सहकारी से उपचित होला, तब रस रूप के प्राप्त करेला, जवन मुख्यतः अनुकार्य में होला। बाकिर, अनुसंधान-वश नट में प्रतीयमान होला। भट्ट लोलट संयोग के तीन अर्थ में स्वीकार कइले बाड़न। स्थायी भाव विभाव के साथ उत्पाद-उत्पादक सम्बन्ध से उत्पन्न होला। अनुभाव अनुभाव्य-अनुभावक सम्बन्ध से ओकर अनुमिति करावेले आ संचारीभाव पोषक-पोष्य-भाव सम्बन्ध से रस रूप में ओकर पुष्टि करावेले। न्याय-दर्शन के आचार्य शंकुक अनुमान-प्रमाण के आधार पर 'अनुमितिवाद' के स्थापना कइलन। उनका हिसाब से विभावादि कारण, अनुभावादि कार्य, व्यभिचारी भावादि

१२. उहे, पृ० ७६९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संचारियन के द्वारा प्रयत्नपूर्वक अर्जित भइला पर वास्तविक रामादिगत स्थायीभाव, अनुमान के बल से अनुकरण रूप में अनुकर्त्ता में कृत्रिम भइलो पर मिथ्या ना भासत प्रतीयमान होखेला। विभाव सब के काव्य के द्वारा, अनुभाव सब के शिक्षा के द्वारा आ व्यभिचारी भाव सब के अनुभाव ज्ञान के द्वारा अनुसंधान (अर्थ प्रतीति) होखेला। सांख्यदर्शनाचार्य भट्टनायक एह भरत सूत्र के व्याख्या करत प्रतिपादित कइले बाड़न कि काव्य में दोष भाव, गुण आ अलंकार रूप आ नाटक में चतुर्विध अभिनय रूप विभावादि कारण के द्वारा अभिधार्थ से ग्रहण कइल गइल निविड निजत्व के मोह आ संकट आदि के निवारण करेवाला भावकत्त्व रूप में शब्द के दोसर शक्ति साधारणीकरण आ अपना भावन व्यापार से एह निजत्व मोह के दूर करके रस के भावनावान करेला आ भावना योग्य बनावेला। रस सूत्र के चउथा व्याख्याता अभिनव गुप्त का अनुसार सामाजिक का अन्तःकरण में वासना रूप सस्कार के कल्पना करके रस के सामाजिक का भाव से सीधा सम्बन्ध स्वीकार कइल गइल बा। अभिनव गुप्त के अनुसार रस निष्पत्ति खातिर सामाजिक में अनादि वासना जरूरी बा, आ ई वासना सब में मिलेला। वासना का बादे रस के हेतु बा। एही संस्कार के सब के स्थायी भाव के संज्ञा दिहल गइल बा।[13]

साधारणीकरण

रस का निष्पति के बारे में पूर्व चर्चित आचार्य लोग के मतभेद आ चिन्तन-सरणी के देखला के बाद रस के भोग, अनुमान, चर्वण आ उपचय के स्थिति बनत बा। भट्ट नायक के सिद्धान्त में आइल साधारणीकरण के परवर्त्ती आचार्य लोग बहुत हद तक मनले बाड़न। आधुनिक भारतीय काव्यालोचक आ मनोवैज्ञानिक भी एह साधारणीकरण के बहुत हद तक मान्यता देत बाड़न।

जब पाठक चाहे दर्शक काव्य चाहे नाटक के अभिधार्थ के ग्रहण कर लेवेला, ओकरा हृदय में भावकत्व शक्ति के द्वारा सत्व के प्रधानता होला। एह हालत में ओकरा हृदय में 'मैं' आ 'पर' के द्वंध खतम हो जाला। ऊ प्रदर्शित चाहे वर्णित घटना चाहे पात्र के ओकरा स्थिति-विशेष में ग्रहण ना करे। ऊ उनकरा के अपना व्यक्तित्व से सम्बद्ध चाहे असम्बद्ध भी ना समझेला आ एही स्थिति के फल बा कि सहृदय भोजकत्व शक्ति के द्वारा उद्‌वुद्ध भाव के रसास्वादन करेला। असल में ई परिस्थिति-विशेष जवना व्यापार से सम्भव होला, ओकरे के साधारणीकरण[14] मानल गइल बाटे। साधारणीकरण के दूगो स्तर बा।

---

१३. साहित्य कोश (भाग-१)—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ५२१-२८।

१४. उहे, पृ० ६०८-११।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक स्तर पर विभावादि के व्यक्ति विशिष्ट सम्बन्ध छूट जाला आ दोसरा स्तर पर सामाजिक के व्यक्तित्व बंधन नष्ट हो जाला; मतलब कि विभावादि के साथ स्थायी भाव के साधारणीकरण होला। ई साधारणीकरण सामाजिक के वासनारूप में स्थित स्थायी भाव के आधार पर सम्भव होला। साधारणीकरण के प्रक्रिया कथा-वस्तु के कल्पना में ग्रहण करावही में सहायक ना होखे, बलुक प्रेक्षक-पाठक के भावनात्मक स्थिति के स्थायी भाव का साधारणीकृत हालते में ग्रहण करेला। एक ओरी ओकरा से कल्पना खातिर मुक्त आधार मिलेला त दोसरा ओरी पाठक का मन में भावनात्मक स्थिति वासना रूप में स्थित स्थायी भाव का साधारणीकृत रूप के ओरी संकेत करेले। मतलब ई कि एह अभिव्यक्त भावात्मक स्थिति के ग्रहण से पहिले संचित स्थायी भाव का व्यापक आधार पर ही सम्भव बाटे। अइसहीं; काव्य का अर्थ-ग्रहण का साथे पाठक का मन में कल्पना का सहारे भावनात्मक स्थिति व्याप्त हो जाला (जवना के आधार ओकरा अपना वासना के भीतर भरल भाव बाटे)। ई काव्य के अभिव्यक्ति का सौन्दर्य आ चमत्कार का साथे निरपेक्ष भइला के चलते आनन्दानुभूति से सम्वद्ध हो जाला।

मधुमति भूमिका

साधारणीकरण के चरम परिणति के भूमि मधुमति भूमिका ह। मधुमति भूमिका[15] चित् के ऊ विशेष अवस्था ह, जवना में वितर्क के सत्ता ना रह जाय। पार्थक्यानुभव के अपर-प्रत्यक्ष कहल जाला। जवना अवस्था में सम्बन्ध आ सम्बन्धी विलीन हो जाला, खाली वस्तु के आभास मिलत रहेला, ओकरा के पर-प्रत्यक्ष चाहे निर्वितर्क कहल जाला। चित् के ई समापत्ति सात्विक वृत्ति के प्रधानता के परिणाम बाटे। जवना समय हमनी का वस्तु के पर-प्रत्यक्ष होला, ओह समय शोचनीय चाहे अभिनन्दनीय, सब प्रकार के वस्तु बस हमनी के सुखात्मक भाव के आलम्बन बन के हाजिर होला। कविता आ काव्यानन्द के आस्वादन करेवाला पाठक अनिष्ट रजस चाहे तमस का नीचे उतरतहीं ओकरा से नीचे उतरत जाला।

रसांग-विवेचन का क्रम में काव्याचार्य लोग में जे बहुत तरह के मतान्तर रहल बा, ओकरा विवरण में ना जा के, जादा से जादा मान्य रस-रसांग के संक्षेप में आगे दिहल गइल सरणी विवेचन खातिर हृदयंगम कइल जा सकेला—

---

१५. साहित्य कोश (भाग-१)—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ४७०-७१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रैस-रसांग-सरणी

रस	स्थायी भाव	आलम्बन विभाव	उद्दीपन विभाव	अनुभाव	संचारी भाव
शृंगार १. संयोग (सम्भोग) २. वियोग (विप्रलम्भ)	रति	मधुर, सुकुमार, रूप-यौवन से धनी, तन्वंगी आ तरुण वगैरह ।	चाँद, चाँदनी रात, एकान्त स्थान, वसंत, वर्षा, भ्रमर-गुंजार आदि ।	स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, कम्प आदि ।	लज्जा, उत्सुकता, त्रास, शंका, चिंता, हर्ष, विषाद वगैरह ।
वीर १. युद्धवीर २ दानवीर ३. दयावीर ४. धर्मवीर	उत्साह	शूर, वीर, बलिदानी, त्यागी, सत्याग्रही, विक्रमशील, सत्य सम्पन्न, तीर्थ, पर्व आदि ।	युद्ध के आह्वान, शत्रु के पराक्रम, ललकार, याचक के दीन दशा वगैरह ।	शस्त्र-ग्रहण, गर्वीली वाणी, रोमाञ्च, दया के शब्द आदि ।	गर्व, स्वेद, आवेग, औत्सुक्य हर्ष, स्मृति, दया आदि ।
करुण	शोक	कृष, विषण्ण, मलिन, रोगी, दुखी, दरिद्र, शोषित जनता, कृषक, बन्धु-विनाश, प्रिया-वियोग, पराभव ।	दुख के कारण, दुखी के अवस्था, यश भा गुण के स्मरण, वस्त्र, भूषण, चित्र, शव वगैरह ।	रोअल, बिलखल, छाती पीटल, दैव-निंदा, भूइयाँ गिरल ।	आवेग, ग्लानि, मोह, चिंता, उन्माद आ विषाद ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रस	स्थायी भाव	आलम्बन विभाव	उद्दीपन विभाव	अनुभाव	संचारी भाव
रौद्र	क्रोध	बहुबाहु, बहुमुख, भीमद्रष्ट, क्रूर, उद्धत आ शठ, विरोधी व्यक्ति, शत्रु।	दुश्मन के कइल अपकार, अनिष्ट कार्य, अपमान भरल कठोर वचन।	आँख के लाल भइल, भौंह के टेढ़ भइल, दाँत आ ओठ के चबावल, कठोर वचन कहल, हथियार से वार कइल।	आवेग, अमर्ष, गर्व, उग्रता, चपलता।
भयानक	भय	भीषण दृश्य, भयानक जंतु, भयकारी सूना स्थान, बलवान शत्रु।	हिंसक जीव के भयानक चेष्टा, शत्रु के व्यवहार, विस्मयोत्पादक ध्वनि, अन्धकार।	कांपल, पसीना आइल, मुँह के रंग उड़ गइल, भागल, दउरल, एने-ओने देखल, गला रूँधाइल।	अपस्मार, शंका, दीनता चिंता, आवेग, मूर्च्छा, त्रास, जड़ता।
अद्भुत	विस्मय	विचित्र आकृति आ आचार वाला, विचित्र दृश्य, अचरजी काम।	ओकरा गुण के वर्णन, विचित्रता।	टिकटिकी लगा के देखल, मुँह बवले रह गइल, दाँते अंगुरी आ जीभ काटल, रोमाञ्च भइल।	चपलता, हर्ष, बितर्क, भ्रांति, आवेग, चिंता, जड़ता वगैरह।
वीभत्स	जुगुप्सा घृणा	निन्दित आकृति, वेष, कर्म; रोगी, पिशाच, देशद्रोही, श्मसान, शव, चर्बी, मांस वगैरह।	दुर्गन्ध, मांस नोचल, मक्खी भिनभिनाइल, कीड़ा पड़ल।	नाक सिकोड़ल, थूकल, नाक मुँह बन्द कइल, मुँह फेरल आ उलटी कइल।	अपस्मार, आवेश, मूर्च्छा, रोग, दैन्य, ग्लानि, निर्वेद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रस	स्थायी भाव	आलम्बन विभाव	उद्दीपन विभाव	अनुभाव	संचारी भाव
हास्य	हास (हँसी)	विकृत आकार वाला, नकल उतारेवाला।	विकृत वेष, आकार आ चेष्टा।	स्वरभंग, कम्प, आँख में हँसी के आँसू।	आलस्य, चपलता, आवेश हर्ष।
शांत	शम	संसार के अनित्यता, वस्तु जगत के निस्सारता, परमात्मा का सरूप के ज्ञान।	आश्रम, तीर्थ-स्थल, रम्य एकान्त वन आ सत्संग।	रोमाञ्च।	हर्ष, निर्वेद, स्मरण, मति, उन्माद, जीवधारी पर दया।
भक्ति	भगवद्-विषयक अनुराग	भगवान राम-कृष्ण आदि के अखिल-विश्व-सौन्दर्य, निधि दिव्य-विग्रह आदि।	परमेश्वर के अद्भुत, कार्य, अनुपम गुणावली, भक्तन के सत्संग वगैरह।	नेत्र-विकास, गद्गद् वचन, भगवान के अनन्य प्रेमजन्य अश्रु, रोमाञ्च वगैरह।	हर्ष, सुख, आवेग, चपलता उन्माद, चिन्ता, दैन्य, धृति, स्मृति आ मति।
वात्सल्य	वत्सलता, पूर्णस्नेह	पुत्र, बच्चा वगैरह।	लइका के चेष्टा, तोतराइल, गिरत-पड़त चलल, हठ कइल वगैरह	लइका के चुम्मा लिहल, ओकरा के गोद में लिहल, ओकरा ओरी ताकल, ओकर बात सुन के पुलकित भइल, खुश होखल।	हर्ष, उत्सुकता, आवेग, अनिष्ट के आशंका वगैरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संचारियन के संक्षिप्त परिचय

१. **निर्वेद**—गरीबी, अपमान, व्याधि, इष्ट वियोग, जरनी, तत्त्वज्ञान वगैरह के कारण अपना के कोसल चाहे धिक्कारल निर्वेद ह।

२. **ग्लानि**—मन के मरुआइल, मलिनता, खँउझइला से ग्लानि पैदा होला।

३. **शंका**—इष्ट हानि आ अनिष्ट के अंदेशा भइला से शंका के संचरण होला।

४. **असूया**—दोसरा के उन्नत्ति के ना सहल आ ओकर हानि के प्रयास असूया के संचरण करेला।

५. **श्रम**—शरीर के आ मन के थाकल श्रम ह।

६. **मद**—मद्यपान चाहे आउर नशा से पैदा मस्ती चाहे अल्हड़पन मद के संचरण करेला।

७. **आलस्य**—जगला से जे उत्साहहीनता पैदा होला ऊ आलस्य ह।

८. **धृति**—विपत्ति में भी चित्त अगर अहथीर रहे, त धृति कहल जाला।

९. **विषाद**—इष्ट हानि से अनुताप आ अनुत्साह के विषाद कहल जाला।

१०. **मति**—शास्त्रादि के अनुसार कवनो बात के निर्णय मति ह।

११. **चिन्ता**—इष्ट आ अनिष्ट वस्तु के प्राप्ति आ अप्राप्ति से घबड़ाहट चिन्ता ह।

१२. **मोह**—भय, वियोग आदि से उत्पन्न चित-विक्षेप के चलते यथार्थ ज्ञान के खतम भइल मोह ह।

१३. **स्वप्न**—जगलो में सपना में वर्त्तमान चित्त का दशा के स्वप्न कहल जाला।

१४. **विबोध**—अज्ञान के दूर भइला पर सचेत भइला के विबोध कहल जाला।

१५. **स्मृति**—बितल बात के इयाद के स्मृति कहल जाला।

१६. **अमर्ष**—निन्दा आदि के कारण पैदा भइल मन के चिढ़ चाहे असहिष्णुता के अमर्ष कहल जाला।

१७. **गर्व**—रूप, धन, बल आदि के अभिमान के गर्व कहल जाला।

१८. **उत्सुकता**—अभीष्ट कार्य के तात्कालिक सिद्धि के इच्छा उत्सुकता ह।

१९. **अवहित्था**—लाज से हर्ष भाव के छिपावला के अवहित्था कहल जाला।

२०. **दीनता**—दुख से जनित दुर्दशा के दीनता कहल जाला।

२१. **हर्ष**—मन के खुशी के हर्ष कहल जाला।

२२. **व्रीड़ा**—अनुचित कार्य कइला का लाज के व्रीड़ा कहल जाला।

२३. **उग्रता**—अपमान आदि के कारण उत्पन्न प्रचण्डता के उग्रता कहल जाला।

२४. **निद्रा**—श्रम वगैरह के कारण शारीरिक शिथिलता के चलते चित्त के ऊ स्थिति जवना में विषय के ग्रहण ना होखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२५. व्याधि—रोग, वियोग आदि से उत्पन्न मन का संताप के व्याधि कहल जाला।

२६. अपस्मार—चित्त के ऊ वृत्ति जवना में मिरगी का रोगी के लक्षण देखाई पड़े, अपस्मार कहाला।

२७. आवेग—करुणावश चित्त के व्यग्रता चाहे सम्भ्रम के आवेग कहल जाला।

२८. त्रास—कारण जनित भय के त्रास कहल जाला।

२९. उन्माद—भय, शोक आदि के कारण चित्त के भ्रांति उन्माद ह।

३०. जड़ता—चित्त के विमूढ़ात्मक स्थिति चाहे वृति।

३१. चपलता—चित्त के चंचल भइल चपलता ह।

३२. वितर्क—संदेह के कारण मन में पैदा भइल ऊहापोह वितर्क ह।

३३. मरण—अइसन चित्तवृत्ति जवना में मरन अच्छा लागे।

रस

(परिभाषा, परिचय आ उदाहरण)

शृंगार रस

प्रेमियन के मन में संस्कार रूप से वर्त्तमान रति भा प्रेम रस का अवस्था में पहुँच के जब आस्वाद योग्यता के पा लेवेला, तब ओकरा के 'शृंगार रस' कहल जाला। 'रति' एकर स्थायी भाव ह।

कामदेव के अंकुरित भइला के कारण, जवना के शृंग कहल जाला, ई रस 'शृंगार रस' कहाला। नर-नारी के पवित्र प्रेम के वर्णन होखेवाला एह रस के स्थायी भाव 'रति' ह। शृंगार आदि रस ह अउर 'रस राज' भी। आन रसन के तुलना में ई ज्यादा तीव्र आ प्रभावशाली बाटे। ई शुद्ध प्रेम में बास करेला।

नायक-नायिका के मिलन में 'संभोग-शृंगार' जवना के 'संयोग-शृंगार' भी कहल जाला, होला आ वियोग में 'विप्रलम्भ शृंगार' जवना के 'वियोग शृंगार' भी कहल जाला।

आलम्बन-विभाव

मधुर-सुकुमार रूप यौवन से धनी तन्वंगी आ तरुण

अक्षय यौवन सेसर सुन्दरी, अपसरा श्रेष्ठ सरग ग्रह बासी।
भर विश्व के, यौवन रूप प्रतिनिधि, अइली संगे उर्वशी छवि राशी।।

—सत्यनारायण सौरभ (उर्वशी, पृ० ८)

कन्दर्प से सुन्दर नवही पुरुरवा, संवृत मैथुन रसिक सुज्ञानी।
नारद देव प्रभावित देखि के, इन्द्र सभा सब कहलें बखानी।।

—सत्यनारायण सौरभ (उर्वशी, पृ० ११)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्दीपन-विभाव

चाँद चाँदनी रात—

उजर कास नभ उजर अँजोरिया, उजर चान से राति सोहाइल।
कुसुम चुनरी उर्वशी रंगि पेन्हली, हरसिंगार फूल खोइंछा भराइल॥
—सत्यनारायण सौरभ (उर्वशी, पृ० १६)

वसंत—

प्रकृति प्रभावित रंग उमंग से, साज शृंगार ले फागुन आइल।
वनस्पति में रंग सम्पत्ति जागल, कौनो सुरंगत नाहिं छोड़ाइल॥
सुवास विलास बतास में जागल, पी काहाँ पी पपिहा धुनाइल।
अचेत-सचेत के दुनो के उत्सव, चलीं जा रंगाईं जा प्रकृति रंगाइल॥
—सत्यनारायण सौरभ (उर्वशी, पृ० १५-१६)

गछियो-गछुलियो प आइल मोजरिया,
गमके लागल बाड़ा राहता डगरिया,
गोबर छिटाई गइल हमरे बथान।
—राजकिशोर मिश्र 'किशोर' (विरहिन, पृ० ६)

वर्षा—

सावन मास सोहावन आइल, कदम के डाढ़ी में झूला डलवइली।
कजरारे सुघन कजरारे सजन, कजरारी सखी सँगे काजर कइली॥
सावन के रिमझिम फुहार में, कदम सुगंध में मति उगइली।
कजरी गावत फूल झरावत, पेंग लगाइ के झूलत भइली॥
—सत्यनारायण सौरभ (उर्वशी, पृ० १७)

अइसन त कबो ना घेरलसि बदरिया
दिनवो में लागेला सगरो अन्हरिया
कागद के नाव जाई कइसे के पार
—राजकिशोर मिश्र 'किशोर' (विरहिन, पृ० २४)

अनुभाव

स्तम्भ—

ओहि घरी मुँअना पिहिकल पपिहरा,
खुलि गइल अँखिया हहाइ गइल जियरा
निकलल ना जान बाकी साँसिये टँगाइ गइल।
—राजकिशोर मिश्र 'किशोर' (बिरहिन, पृ० ७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आलिंगन-चुम्बन—

आव सखि, अँकवारी में ले लीं।
लघु-चुम्बन के अदला-बदली करीं
लट के छटकल ए नगिनिअन से खेलीं।

—सत्यनारायण सौरभ (उर्वशी, पृ० १३)

रोमाञ्च—

चुम्बन के मदिरा के प्रवाह में, रोमांञ्च से सिहरत काँपत भइली।
धरती के ओ काम विटप से ऊ सुन्दर, सरग के कामलता लपटइली॥

—सत्यनारायण सौरभ (उर्वशी, पृ० १३)

संचारी भाव

चिंता—

सोचत-सोचत सुख गइल परान,
लवटल ना अब तक बलमुआ नादान।

—राजकिशोर मिश्र 'किशोर' (बिरहिन, पृ० ८)

लज्जा—

देखली लजाई के राजा के ओरिया, प्रेम के लाली से गाल रंगाइल।
पुलक से झुकल पलक से छहलत, राजा के दीठि अलक अझुराइल॥

—सत्यनारायण सौरभ (उर्वशी, पृ० १३)

उत्सुकता—

कतना सुन्नर होइत कि ऊ अइतन हमरा गाँव में,
रसि जाइत मेंहदी के गमक फेरु उन्हका स्वभाव में।
चमकित भोर पहर के लाली, फेरु चढ़ि के आकास पर,
आ जाइत जिनिगी के सपना फेरु अपना अभिलास पर।

—राजकिशोर मिश्र 'किशोर' (बिरहिन, पृ० १२)

हर्ष—

धनि भाग हमार जे परी सरग के, धरती प उतरि के बरसन देली,
सरबस आज नेछावर उनका पर, जे हमार तन-मन हर ले ली।

—सत्यनारायण 'सौरभ' (उर्वशी, पृ० १३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीर रस

जवना विषय में से जहवाँ उत्साह के संचार होखे, मतलब कि 'उत्साह भाव' के परितोष होखे, उहाँ 'वीर रस' होला। 'उत्साह' एकर स्थायी भाव ह।

शत्रु से युद्ध में, दीन लोग के दुर्दशा, देश के दुर्दशा आ धर्म के दुर्दशा देख के उद्धार खातिर समुचित प्रयत्न में धर्म, सत्य, कर्त्तव्य आदि का पालन में, दोसरा के रक्षा में जे 'उत्साह' देखल जाला, एकरे परिपुष्ट रूप का वर्णन के 'वीर रस' कहल जाई।

वीर रस चार प्रकार के मानल जाला—(१) युद्धवीर, (२) दानवीर, (३) दयावीर आ (४) धर्मवीर। एही से एह रस के चार भेद होई। कुछ आचार्य लोग खाली युद्धवीर में वीर रस के स्थिति माने के पक्ष में बाड़न।

आलम्बन-विभाव

शूर-वीर बलिदानी—

सिंह सरूप सिंह का सोझा,
ना साहस केहू ताक सके।
पवरूख सकती सब कुछ अपार,
कवनो जोधा ना आँक सकै॥

—कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' (वीर बाबू कुँअर सिंह, पृ० ८)

कड़ियल ठाकुर जगदीशपुर कऽ,
रण मातल अकुतायल बा।

—चन्द्रशेखर मिश्र (कुँअर सिंह, पृ० १८४-८५)

राजा जसवंत सिंह नामी बा सरदार।
खरग के जोर जेकर जानेला जवार॥

—रामवचन सिंह यादव 'अंजोर' (किरनमयी, पृ० १४)

त्यागी-सत्याग्रही—

भइल मोह नृप का इचिको ना,
रहे सत् से भरल विचार।
बल्कल पहिरी आउर कुछुओ ना,
छोड़ि चलले नृप राजदुआर॥

—मणिराज प्रसाद 'मधुकर' (सच्चाई के पहरूआ, पृ० ६०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्दीपन-विभाव

शत्रु के पराक्रम—

अँगरेजन के बल जानीले
ओकर बा भारत में राज,
सौवाँ बरस बितल आवऽता
ठोस बनल, जम गइल समाज ।।

—हरेन्द्रदेव नारायण (कुँवर सिंह, पृ० ११८)

आइलि बिपति धरम पर भारी
के कइसे बरदास करी।
कलपति बाटिनि धरती मइया
मनवा कवले धीर धरी ।।

—चन्द्रशेखर मिश्र (कुँअर सिंह, पृ० ९६)

युद्ध के आह्वान—

बलिया भर में परचार भइल
हर गाँव टोल तइयार भइल।
आपन-आपन सेना ले-ले
अगहुर सगरे सरदार भइल ।

—प्रसिद्ध नारायण सिंह (भोजपुरी वीर काव्य, पृ० १६०)

ना देर तनिक अब जंग आजादी होई,
आदेश मिली, तब तक ना धीरज खोई ।
सभ सजग रहे, तब तक किछु प्लान रचाता,
कवनो छन बाजी बिगुल कूच के ताता ।।

—सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (कालजयी कुँवर सिंह, पृ० ११८)

ललकार—

बा कोखि जुझावइ के नेवता,
चूरी फोरवावइ के नेवता ।
सेन्दुर पोंछवावइ के नेवता,
बा राँड़ि कहावइ के नेवता ।।

—चन्द्रशेखर मिश्र (कुँअर सिंह, पृ० ११३)

रुके नहीं, झुके नहीं चरन-मरन-हरन करे,
खलन-रणन-दलन-करन-पुरान नाँव धा धरे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवान ! दूध-नीखि-हेतु तीर से कढ़ल चलऽ !
जवान ! तूँ बढ़ल चलऽ, तूफान-माँथ पर चढ़ऽ ।
—सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (कालजयी कुँवर सिंह, पृ० १६५)

याचक के दीन-दशा—

दुर्दिन हमरा पर आइल बा,
हम बानी बिल्कुल लाचार ।
एह राति में हमरा खातिर,
कफन मिलल बाटे दुश्वार ॥
—शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी (सत्यनिष्ठ हरिश्चन्द्र, पृ० ६२)

अनुभाव

गर्वीली वाणी—

देसवा क लाजि बचाइ लेब,
रन में झंडा फहराइ देब ।
गरजब वैरिन की टोली में,
तोहके हुँकार सुनाई देब ॥
—चन्द्रशेखर मिश्र (कुँअर सिंह, पृ० १८५)

ई ह बानर भूमि, हमनी का महावीर के वंशज,
ई बनवासी क्षेत्र, कहाँ से दिक्कू अइल ?
बानर हमनी के गोत्र हमनि का बनदेवी के बेटा,
कबो विदेशिन का आगे ना हमनी झुकलीं ।
—बच्चन पाठक सलिल (जय सिंहभूमि, पृ० १७)

शस्त्र-ग्रहण—

घन-घनन-घनन घन ढोल बजल,
दन-दनन-दनन दन गोल सजल ।
रिपुदल बन्दूकि, किरिच भाला,
खन-खनन-खनन खन खोल चलल ॥
—प्रसिद्ध नारायण सिंह (भोजपुरी वीर काव्य, पृ० ६४)

भर-भर-भर-भर ओंजा भरकल
लह-लह लहकल तरुअरिया बा ।
बगले गैंड़ा खटपट बोलइ,
भरि माथ सोनहुला पगिया बा ॥
—चन्द्रशेखर मिश्र (कुँअर सिंह, पृ० १८८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दया के शब्द—

हरिश्चन्द्र कब रुकिते सुनि के
दर्द भरल ई अकथ कहानी ?
कहले—"जाके जल्दी वापस
आ जा तू नारी दुखिनी"

—शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी (सत्यनिष्ठ हरिश्चन्द्र, पृ० ८७)

रोमाञ्च—

भगवान के लखि के निज सम्मुख,
धनि भाग मनले नृप आप।
देवलोक भइल सुख उन्मुख,
बीति चलल दुःखो के रात।

—मणिराज प्रसाद मधुकर (सच्चाई के पहरुआ, पृ० १६६)

सचारी भाव

गर्व—

तीस कोटि माता भुजदण्ड बा
दुसमन वासते प्रचण्ड बा
जेकर किरीट हिमगिरि हो,
मर्म सब नद धार सरि हो॥
भुज हो हरित गिरि बनवाँ
साल ओ तमाल तानी तनवाँ
जेकर मलय वायु साँस हो
हमनी के जेमें विसवास हो॥
ओकर मुकुट के उतारी हो।
केकर बा वीर महँतारी हो॥

—हरेन्द्रदेव नारायण (कुँवर सिंह, पृ० १०७-१०८)

हर्ष—

फेरि से बिजई डंका बाजल,
फेरि बाबू मोछा पुरलन।
एका एकी भरि अँकवरिया,
जय बजरंग बली कहलन॥
आज़मगढ़ मुसकात रहल,
बाबू कऽ जीत सुनाइल बा।

—चन्द्रशेखर मिश्र (कुँअर सिंह, पृ० २४६-५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवेग—

जागल जोस रोस बाबू का
जमल लहू गरमाइल रे।
अँखियन से बरिसल अँगार
मुँह पर खुनवाँ बढ़ि आइल रे।

—कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' (वीर बाबू कुँअर सिंह, पृ० ४१)

औत्सुक्य—

जयकार उठल बा दादा कऽ,
मारु डंका गूंजल बाटइ।
ना जानी का होई रन में
जगदीशपुर रूठल बाटइ ॥

—चन्द्रशेखर मिश्र (कुँअर सिंह, पृ० २६४)

हर दुआर पर बइठि, सँवागन में होता मन चरचा
के कइ-कइ गो गोरा मारी, केकर कइसन परचा, ?

—सर्वदेव तिवारी राकेश (कालजयी कुँवर सिंह, पृ० १६८)

धृति—

दास डोम के बनते राजा
हो गइले सब विधि पाबंद
भूखि-पियास के इच्छा कबहूँ
ना कइलसि उनका के मन्द

—शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी (सत्यनिष्ठ हरिश्चन्द्र, पृ० ७५)

करुण रस

इष्ट वस्तु के हानि, अनिष्ट वस्तु के लाभ, प्रिय-पात्र के चिर-विरह, धन के हानि वगैरह से जहवाँ 'शोक-भाव' के परिपुष्टि होला, उहाँ 'करुण रस' होला।

करुणा के संवेदना बड़ा तेज होला आ ओकर मात्रा सुख का तुलना में जादा हो जाला।

करुण रस के स्थायी भाव 'शोक' ह। प्रिय विनाश जनित, प्रिय वियोग जनित धननाश जनित, पराभव जनित, वगैरह करुण रस के भेद बाड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आलंबन-विभाव

दुखी, दरिद्र, शोषित जनता—

कांट जस देहिया ना काबू बा सरिरवा में,
सीढ़िया प लचके सरीर।
दादा कहाँ जोस तोर पुरखा पुरनिया के,
काहाँ ऊ जवनका सरीर।

— मधुकर सिंह (रुक जा बदरा, पृ० १०)

टूअर बन बिलख-बिलख घूमे
दुःख लाख-लाख आगू जूमे

—हरीन्द्र हिमकर (रमबोला, पृ० ५)

प्रिया-वियोग—

आजु से इहे सनइबो दईव से
कि प्रेमी प्रिया में वियोग न होखे,
राजा वियोग के सोग भले होखे,
कंत वियोग के सोग न होखे।

—तारकेश्वर मिश्र 'राही' (लव-कुश, पृ० १८)

उद्दीपन-विभाव

दुख के कारण—

कबले जुलुमिया-सितमिया बेगरिया के, चूसी हम सबनी के जान।
जिनगी के बिरवा में रस कब आई राम, कब होई आदमी समान।

—मधुकर सिंह (रुक जा बदरा, पृ० १०)

दुखी के अवस्था अबरी के पेट भइल पतुहा
दुब्बर हो गइल नून सतुआ
जूठन पर जूट पड़ल कुत्ता
जनता पर जूट गइल जूता
राशन कर गइल हजम शासन
परजा के पेट भरल भासन
टूटे लागल सब ध्यान धरम
छूटे लागल जब लाज शरम

—हरीन्द्र हिमकर (रमबोला, पृ० २)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देख सिया हम राम के का कहीं
आँचर फाटे त टाँकल जाला,
साड़ी सरी सरके न सिआय त
पेवन जोरि के साटल जाला
—तारकेश्वर मिश्र 'राही' (लव-कुश, पृ० २१)

यश चाहे गुण के स्मरण—
धरती में डूबला की पहिले जनक लली,
डूबे उतराये लागी पिछला विचार में,
डूबे के त रहे धरती की गहराई में
ऊ डूबे लागी चाँन अउरी जौन्ही की बजार में।
कबों याद आवे सेज फूल वाली ससुरे क
कबो याद आवे जब तपली अंगार में।
—तारकेश्वर मिश्र 'राही' (लव-कुश, पृ० १११)

अनुभाव

रोअल—भूइयाँ देखत हीरा ढर-ढर रोवतारी
सूखे नाहीं अँखिया के धार।
—मधुकर सिंह (रूक जा बदरा, पृ० १५)

छाती पीटल—अम्मा मुक्का मारी लेली, बाबू रे बेहोश भइले
टूटे रे अचके आसमान।
—मधुकर सिंह (रूक जा बदरा, पृ० ३५)

विलाप कइल—
सागर शोक में गागर डूबत, कौन उजागर आजु बचाई
राह न सूझत आह उठे उर, कौन ए भौन में आग लगाई
बात के बाण ई प्राण के बेधत, गारिय देत दुशासन भाई
—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रोपदी, पृ० २१)

संचारी भाव

आवेग—हर-हर खून देखि चलल कपरवा से
कहे बेइमान के सजाय।
सभे के करेजवा में उठेला हहसवा जे,
फेंकि दीहीं काना के उठाय।
—मधुकर सिंह (रूक जा बदरा, पृ० १७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषाद—मालिक दुरगतिया ई कवन करमवा के
कवन चूक भइले अजान।
हतेआ बटोर जनी एतना मनुखवा के
मेंड़ खँसी बुझ मत जान।
—मधुकर सिंह (रूक जा बदरा, पृ० १२)

ग्लानि—जीवन के फटही चुनरी
नित पेवन जोरि के साटत बानी,
बा दुख के गड़हा अगवाँ
संग लइकन लेइ के पाटत बानी।
राजा के रानी कहावे के बा
दिन टाटी पलानी में काटत बानी।
—तारकेश्वर मिश्र 'राही' (लव-कुश, पृ० २४)

चिंता—कबले ठिकदारी चली धरम के धरती के
कबले किसान का घर से सीता हरन चली
कबले सीता का कंचन-मिरगा मोह रही
कबले रावन घर रास राम घर मरन चली
—हरीन्द्र हिमकर (रमबोला, पृ० ३०)

रौद्र रस

जहवाँ विरोधी दल के छेड़खानी, अपमान, अपकार, गुरु-जन-निंदा आ देश अउर धर्म के अपमान आदि से बदला के भावना जागेला, उहवाँ रौद्र-रस पैदा होला। 'क्रोध' एकर स्थायी भाव ह।

भलाई का बदला में बुराई पावे वाला, अनादर पावेवाला, जेकर इच्छा पूरन ना होखे, जे विरोध सहन ना कर सके; अइसन लोग जल्दा खीसिया जाला।

वादा भूल जाए वाला, प्रार्थना ठुकरावेवाला, चिढ़ावेवाला, केकरो आदरणीय विषय पर अश्रद्धा राखेवाला, उलटा व्यवहार करेवाला, क्रोध के पात्र होला।

आलम्बन विभाव

वहुवाहु, वहुमुख, भीमद्रष्ट, क्रूर, उद्धत, शठ, विरोधी व्यक्ति आ शत्रु—
बर पावत मद में हद कइल, सतवाँ नभ प चढ़ गइलऽ।
कुल कलंक बन गइल रावन अधमाई पर पग धइलऽ॥
विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' (रावन-अंगद संवाद, पृ० १५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइल हुड़ाहड़ गजब पड़ापड़
धावा लागि जमि के मारि
राछछ गोल बान्हि के आइल
रहे निठाह करे तकरारि

—अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' (कौशिकायन, पृ० ६७)

झपटलि बवले मुँह निसाचरी
जाई लीलि, पवनसुत जनले

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी (सेवकायन, पृ० ६८)

उद्दीपन-विभाव

शत्रु के कइल अपकार, अनिष्ट कार्य, अपमान भरल कठोर वचन आदि—

"बेटा हमार हऽ इन्द्रजीत,
जेकर गूँजत बा विजयगीत,
समरथ प्रभु रहते अगर तोर,
तोके ना पठवते हाथ जोर

तापस से हमरा कवन त्रास।
हम कल्प वृक्ष, ऊ हवन घास॥

"रे मूढ़ अधिक मत मारु गाल
तोरे पर वाजी तोर ताल
धरनी पर लुढ़की मूंड तोर
कोई न पोंछी तोर लोर

करि क्रोध चलइहें राम बान।
उड़ जाई तन तज तोर प्रान॥

—विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' (रावन अंगद संवाद, पृ० २०)

तोरल जे धनुही कहीं साँच कि आपन काल बोलावल जानी
उबरी कइसों नाहीं प्रान कि लेई बँचाई के अइसन मानी

—रामवृक्ष राय 'विधुर' (सीता स्वयंवर, पृ० १९)

सींझि रहल रोआँ-रोआँ, चूल्हा पर चढ़ल करेज
पाकि उठल अब घाव भितरिआ अति के करत अङेज

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी (सेवकायन, पृ० १२३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुभाव

आँख के लाल भइल, भौंह के टेंढ़ कइल, दाँत आ ओठ के चबावल, कठोर वचन कहल, हथियार से प्रहार कइल।

धम से चित गिरल लइका
अनचितले में भहरा के
तुरत उठल लाल सीता के
गेहुअन अस फोंफिया के
खट दे बान चढ़ा के लागल
बरखा अस बरिसावे।

—कुंज विहारी 'कुंजन' (सीता के लाल, पृ० ३५)

अंगद खिसिया के, फटकटा के जब धरनी पर,
मरले भुज-दंड उहाँ कसि के धड़ाक से।

—विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' (रावन-अंगद संवाद, पृ० २२)

लाल-लाल अंगारा अँखिया कइके रावन बोल उठल
गरज उठल अइसन की उहवाँ के डगमग धरती डोल उठल

—विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' (रावन अंगद संवाद, पृ० १६)

सचारी-भाव

आवेग, अमर्ष, गर्व, उग्रता, चपलता—

आवेग—लाल-लाल मुँह कइले बा,
बा बड़ा जोर खिसिआइल।
चलत पसेना बड़हिन जइसे
डूबकी मार नहाइल।

—कुंज विहारी 'कुंजन' (सीता के लाल, पृ० ७०

अमर्ष—जागल जोस रोस बाबू का
जमल लहू गरमाइल रे।
अँखियन से बरिसल अंगार
मुँह पर खुनवाँ बढ़िआइल रे।

—कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' (वीर बाबू कुँवर सिंह, पृ०

गर्व—काल समान छुटी फरुहा जब त्राहि कि त्राहि सभे गोहराई
जाई अकारथ प्रान सभे के कि मान-गुमान छने में हेराई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक घरी ठहरे रन में केहू बीर बुझात सभा बीच नाहीं
आगि बरी अब ताकवि जेने बुताई बुतावे से केहूका नाहीं

—रामवृक्ष राय 'विधुर' (सीता स्वयंवर, पृ० २०)

उग्रता—

बेरि कि बेरि कहीं तोहँसे हमसे लड़ले भल ना कबो होई
बाड़ तूँ काहे के काल बोलावत, जाई भुलाई छने में ढिठाई

रामवृक्ष राय विधुर (सीता स्वयंवर, पृ० २१)

चपलता—

हो के बड़ पण्डित, खंडित कइले खल ऊच कर्म,
भइले बीप्र वंश में तें लेंढ़ा कटहर के ।

—विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' (रावन-अंगद-संवाद, पृ० २४)

रौद्र के सम्पूर्ण उदाहरण एक साथ—

काँपत बा कर, डाँफत नाहर, मातल बा गलगोंछ दुधारी,
पीसत होंठ, घसीटत सोट, पसीजत क्रोध पसेनन वारी,
भौंह चढ़ाइ, तिरे तरनाइ, धधाइ उठा जनु बाजल तारी,
ठीक ई लागल, जय हनु जागल, आसल हास कपी मन भारी !
जूध में फानबि, राज के आनबि, खानबि गोरन लट्ट बनाई,
सुरसहि ताड़ि के, राछछ गाड़ि के, मारत मूकहि खून उकाई,
भेदिन भेदले, माइ के खोजले, सोझले, गोरन संग लड़ाई,
ठीक बुझाइ, कि कुँवर आइल, लाल कपीस के भेख बनाई !

— डॉ० सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (कालजयी कुँवर सिंह; पृ० १८९)

भयानक रस

भयदायक वस्तु के देखला भा सुनला से, चाहे प्रबल शत्रु के विद्रोह आदि कइला पर जब हृदय में वर्त्तमान भय परिपुष्ट होला, त भयानक रस उत्पन्न होला। 'भय' भयानक रस के स्थायी भाव ह ।

भय सहचर भावना ह आ ओकर आसान प्रवृत्ति पलायन चाहे विसर्जन ह। भय के सामना करे के ताकत ना भइला के चलते भागे के मजबूरी होला ।

भयानक रस अदमी के अधीर बनावेला । एह में शत्रु मित्र हो जाला आ मित्र शत्रु । जादा डर मनई के शिथिल बना देवेला आ ओकरा में आत्म रक्षा के भाव गायब हो जाला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आलम्बन विभाव

भीषण दृश्य, भयानक जंतु, भयकारी सूना स्थान, बलवान शत्रु—

झपटल बवले मुँह निसाचरी
जाई लील, पवन सुत जनले
—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी (सेवकायन, पृ० ६८)

एक सेर प नयना गड़ल,
घोड़ा डरनि नाहीं बढ़ल।
—रामवचन शास्त्री अँजोर (किरनमयी, पृ० ११०)

रोंआ सिहर उठल राजा के—
देखले जब ऊ ओइसन व्यक्ति;
ऊपर गोड़ टँगल सिर नीचे,
लउके जेह सें तनिक न शक्ति ।।
रहे रूप सुन्नर ओहू के,
लट लमहर, सिर चन्दन लाल।
नीचे बाकिर रहे ओहू के
धन्हकत कुंड अगिन के ज्वाल ।।
—मणिराज प्रसाद मधुकर (सच्चाई के पहरुआ, पृ० १३७)

उद्दीपन विभाव

हिंसक जीव के भयानक चेष्टा, शत्रु के भयोत्पादक वेवहार विस्मयोत्पादक ध्वनि, अंधकार वगैरह।

मउअति कऽ कुइयाँ सतिन, मुँह देखाइल बा डेरावन।
काल सरवस लीलि के सब, फेरू ह चाहत ओड़ावन ।।
गरिजल जानवर जोम से,
राजा जे रोसिया गइल।
बाघ छाती तानि पछिली—
धरियो के सिकुड़ा गइल ।।
—रामवचन सिंह यादव 'अँजोर' (किरनमयी, पृ० ११२)

बरत आग रहलि दुनों आँखि लाल
चमक दाँत में बिजुली के विकराल गाल
सुघर चाम ना, जल हथिनी के ओढ़ि खाल
रहलि 'सिंहिका' मछरिन सधे छछात काल
—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी (सेवकायन, पृ० ५८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुभाव

काँपल, पसीना आइल, मुँह के रंग उड़ल, भागल, दउरल, एने ओने देखल, गला रून्हाइल वगैरह ।

डहर में ऊ अड़िया गइल,
डरनी दलकी कठुआ गइल ।।

\+ \+ \+

थरथरा के खून सूखल आ बरफ अस जमि गइल ।
बागि ना जेकर थम्हाले भरक दरिए थम्हि गइल ।।

—रामवचन सिंह यादव अँजोर (किरनमयी, पृ० १२०-२१)

काँपत पँजरा आइ जनवले
कौशिक राछछ के उतपात
तवले करिआ बादरि अइसन
गइलि ताड़िका झलकि हठात
चमकावति अङार अँखियनि में
लउकल जइसे काल छछात

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी (कौशिकायन, पृ० ६४)

संचारी भाव

अपस्मार, शंका, दीनता, चिंता, आवेग, मूर्च्छा, त्रास, जड़ता—

अहजह लागल तनी राम के
चटकल वीर लखन के चानि
जाके अवले रहे लुकाइलि
कवनो खोहे खनि के मानि
ढाही मारे धावलि धइ
मरखाही राँड़ि साँढ़ के बानि

—अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' (कौशिकायन, पृ० ६४)

गइलि लीलि बुझला, लउकत ना ओरो छोर
अब जुझार पटुआइल, नेवर बनल सोर
घटल बेग बउसाव हवा के भइल थोर
कँवल नाल पर घहराइल ह 'बजर घोर
सुगबुगात नइखे हलफी, ना उठत लहर
बनल जोह अमरित के बुझला आज जहर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चकर चाल बदलत ना लागल घरी पहर
मुरुदाघाट पहुँचवलसि ना जिअतार डहर

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी (सेवकायन, पृ० ५८-५९)

अद्भुत रस

विचित्रता के देखला-सुनला से जब आश्चर्य के परितोष होखे, तब अद्भुत रस के प्रतीति होला। विस्मय चाहे अद्भुत के सहज प्रवृत्ति जिज्ञासा ह। एकर समावेश बौद्धिक भावना में होला। देखला, सुनला, वर्णन आ अनुमान द्वारा अद्भुत के भाव प्रकट कइल जाला।

स्थायी भाव—विस्मय

आलम्बन विभाव—विचित्र दृश्य, अचरजी काम।

उदाहरण—

धूत कवन घट, अवघट जागल,
उलट टाङ शिर बाँसा गाड़ल,
हँकरि-डँकरि पारल सिसिकारी !
हे ! हे ! हाँक लगावल !

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ०-८९)

'अररर' अरकि अवनि हीय फाटल,
अगिन पखान गलल 'भभ' भभकल,
उड़ल फुल्लिग गगन ले सोटल,
घुरुमि गगन बरमावल।

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० ९५)

उद्दीपन विभाव

ओकरा गुण के बरनन, विचित्रता—

दुनु जनि मनपुर पइसि पुरुख के,
देखलि अद्भुत साधन सुख के,
कतहीं किछु लवलेस न दुख के,
मानस जगत छुआवल

मन संसार पुरुख विस्तारल,
शांत मनोरम सुखद सँवारल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वन-उपवन जनपद चन्द्रावलि,
दुधिया चन्द्र तनावल।

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुवोध' (के०, पृ० ७१)

झींगुर साज सरंगी साधल,
दादुर मिलि जुलि कोरस गावल,
ता-ता-थेइ-थेइ, नाचल मोरवा
वन मंगल मङ्लावल

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुवोध' (के, पृ० ५४)

अनुभाव

टिकटिकी लगा के देखल, मुँह बवले रह गइल, दाँते अँगुरी भा जीभ काटल, रोमाञ्च भइल।

उदाहरण—

रहल पुरुख के जे छवि भू पर,
बइठल, फटिक शिलासन बरतर,
से छवि निरिखत आसा मनपुर,
रोआँ ठाढ़ करावल।

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुवोध' (के०, पृ० ७३)

दिवस न रात न बार महीना,
रितु सम्वत् सर रहल कहीं ना
के नित अमित अनन्त काल में
अन्तर आल बनावल

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध' (के पृ-७)

होत उदित विसवत रवि राहुल,
हरख-विसादल आकुल-आकुल,
आवत-जात मड़इया छावत
संसृति इ चकरावल

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुवोध' (के०, पृ० ८३)

सचारी भाव

हर्ष, चिंता, जड़ता, क्तिर्क आ औत्सुक्य।

उदाहरण—

हास-विलास उलास उमंगल
शोभा दिग्वधु उपवन मंगल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गावल कनक कमलदल कुंकुम,
रतिपति तिलक लगावल।

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० ५४)

हमरा मानस निर्मल सर में,
शरद निशा का शान्त प्रहर में
कुमुद खिलल पूनम चाननि तर
चन्द्रसुधा सितियावल।

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० १)

शून्य चतुर्दिक रहल विराजत,
नाद अनाहत अविरत बाजत,
जनल जनक तव के स्रष्टा के
रचना पाठ पढ़ावल !

—रघुनाथ शरण शुक्ल, 'कुबोध' (के, पृ० ६)

ममते तू जननी कि माया,
महामोह की वैष्णवी छाया,
के परचो युग-युग से हमरा
तहरा से करवावल।

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० १२)

कब से ठाढ़ि छितिज पर यामिनी
केकर बाट निहारल कामिनी;
के चुम्बन के नभ के पाहुन
छिति पर अधर झुकावल

—रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ० २३)

वीभत्स रस

घिनाए वाला वस्तु के देखला-सुनला से जहाँ घृणा के भाव जागे, उहाँ वीभत्स रस होई। वीभत्स खातिर ई जरूरी नइखे कि मसान, शव, लहू, माँस, हड्डी के वर्णन होखे, अइसनो वस्तु वीभत्स होला जवना के इयाद कइला, छुअला से घृणा होखे।

स्थायी भाव—जुगुप्सा, घृणा।

आलम्बन विभाव

निंदित आकृति, वेश, कर्म, रोगी, पिशाच, देशद्रोही, श्मसान, शव, चर्बी, माँस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्दीपन-विभाव

दुर्गन्ध, माँस नोचल, माछी भिनभिनाइल, कीड़ा पड़ल।

अनुभाव

नाक सिकोड़ल, थूकल, नाक-मुँह वन्द कइल, मुँह फेरल, उलटी कइल।

सचारी-भाव

अपस्मार, आवेश, मूर्च्छा, रोग, दैन्य, ग्लानि, निर्वेद।

उदाहरण—

डनवर-सहित पाँच सौ गोरा खेत परल मछिआइल,
कौआ, गीध, सियार, चील्हि, कुकुरन के दिन उतराइल।

गोर-गोर चमड़ी चोंचन से विधुनि रहल अस लागल,
फुल जटायु रावन-कुल से सतपुहुता बदला जागल।
पंजन से छाती ओदारि के चोंच मारि गड़िहारे,
गरदनि घुसा-घुसा के चाभत गीध मासु गटकारे।
घींचि-घींचि अँतरी लमताहुर पंजन से सरियावे,
मारि झपट्टा चील्हि लगे नभ धामिनि चोंच उड़ावे।
काँ-किच, काँ-किच हाँच उड़ल बा भुअर-भुअर पुतरी के,
कोदो दरा रहल माटी पर, गींजनि बा अँतरी के।

खून-मास-माटी सउनाइल कतो जमल, उतराइल,
सुरुकि रहल बा चोंच लगा के कउआ मन अगराइल।
घिसिरावत बा लास कतो, कतहीं ठठरी ठठरावे,
चभर-चभर चाभत हबुआ के कुकुरा मास उड़ावे।
हो झाड़ी में हाड़ चबावत लँगड़ा एक अकेला,
टाँग टाँगि के भागल जाले सियरन पाँड़े रेला।

—सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (कालजयी कुँवर सिंह, पृ० २०६)

लहू के बीच सूवर मुंड लोटे।
बिना मूड़ी के अनगिन रुंड लोटे॥
हाल देखल न जा हय हाथियन के,
न गिनल जात मिरतक झुंड लोटे॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखि जाला न ऊ धारा लहुन के।
पितामह माथ धइलन हाल सुन के ॥

—रामबचन सिंह यादव 'अँजोर' (निरधन के धन स्याम, पृ० १३२)

हास्य रस

जहाँ विकृत वेश-भूषा, रूप, वाणी, अंगभंगी के देखला-सुनला से हास स्थायी भाव पैदा होखे, उहाँ हास्य रस होला। हास्य एगो मानसिक क्रिया ह। हास्य रस के हँसी प्रशस्त आ सहृदयात्मक मनोभाव के रूप में होला। एह में शारीरिक क्रिया अनिवार्य बा।

स्थायी भाव

हास्य-हँसी।

आलम्बन विभाव

विकृत आकार वाला, नकल उतारे वाला।

उद्दीपन विभाव

विकृत वेष, आकार आ चेष्टा।

अनुभाव

स्वरभंग, कम्प, आँख में हँसी के आँसू।

संचारी भाव

आलस्य, चपलता, आवेश हर्ष।

उदाहरण—

एही जड़कलवा में घमवा में लोभ-बस
बहरे लागल दरबार फुल-बगिया,
कुँवर के अगल-बगल से गोलाइए में
लगल आसन सरदार के पगिया,
बीच में मसखरा कहत किछु जात रहे
उठत ठहाका से ठहकेला बगिया,
लाग कि बइठकी बा हसही हँसावे लागि
तनिको गँभीर ना चहुँपलो प लगिया।
ओही बीचे बाहर से गँधिया आइल एगो
अतर के पोटरी सुँघावे किछु असरा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलि-खोलि सिसिया ढँकनवा से घँसत जाय
सबके कलइया, तरहथी का उपरा
बाबू के सुँघावत बखान करे बार-बार
एक ना अनेक गंध काहा लगे चुपरा,
आइल मसखरा के जब ऊ नगीच तब
हँसत-हँसत सब लोट-पोट भुपर ।

देवे खाती अतर मसखरा नगीच जब
गधी गइल, त ऊ अँजुरी बढ़वलस,
सिसिया उझिलि के मसखरा के चुरुआ भर
हँसत बिहाइ लोग, मुँहवा बनवलस,
ठहुना में मलत चिरुअवा के देखि, बाबू
पूछले कि अरकी के चलनी चलवलस ?
कहेला मसखरा कि जड़वा के राति बाबू !
नकिया ठेहुनिया से सखिया धरवलस ।

गाँसा-जोरि, हाथ-बाँह कनया बचावे ले त
ठेहुने सटाइ नाक मारि के मुरुकिया,
राति भर अतर सुँघत सपनाइला कि
सरग में बिहरीला, आवेला हुचुकिया,
तले त इनर जी के नोकर लउफले हा,
देखते मातर लिलिकारेले फुफुरिया,
भगलीं हा ढिमिलात ठेहुना फुटल बाबू !
कहेलन स छँवड़ा कि जाड़हीं से गतिया ।

सुनत मसखरा के ताना बेअंग बात
कुँवर के भहुँआ तड़ाक दे तनइले,
जँचले खजंचियो से "ससुरा मसखरा के
जाड़ा के कपड़ा ना काहे सिअइले ?"
तुरते जड़ावर अढ़ाई सै के सिक्का माँगि
हँसते मसखरा के अँजुरी भरइले ।
सबमे सराहत बखानत उदार मन
उकुती समुझ जेही कुँवर जी पइले ।

—सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (कालजयी कुँवर सिंह, पृ० २१-२३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ 'मसखरा' आलम्बन, 'चिरुआ भर अतर ठेंहुना में मलल' उद्दीपन, 'हँसला' आ 'बोले में आवाज बदल गइला' में अनुभाव, कुँवर सिंह के आवेश में आइल, मसखरा के चपलता, जड़ावर मिलला के खुशी में संचारी भाव के कारण हास्य पैदा भइला से हास्य रस के उदाहरण मिलत वा।

शांत रस

संसार से अत्यन्त निर्वेद भइला पर चाहे तत्त्व ज्ञान द्वारा वैराग्य के उत्कर्ष भइला पर शान्त रस के प्रतीति होला। जहाँ ना दुख वा ना सुख, ना द्वेष वा ना मात्सर्य, जहाँ खाली समभाव बा, उहें शांत रस बाटे।

स्थायी भाव

शम।

आलम्बन विभाव

वस्तु जगत के निस्सारता, संसार के अनित्यता।

गउतम के मन समुझि गइल कि—
मउत आखिर धरी एक दिन,
जीव देंहि के छोड़ि पराई;
छुटी दउलति महल अँटारी,
छुटिहन जोड़ू-जाँता;
माता-पिता पूत-परिवार !

—दण्डीस्वामी विमलानंद सरस्वती (बउधायन, पृ० ३१)

देखि जगत के छनभंगुरता,
राज कुँवर मनवाँ में सोचत,
राजभवन के गइलन !
बिसयन के बयराग !
राग रंग के त्याग !!

—दण्डीस्वामी विमलानंद सरस्वती (बउधायन, पृ० ३७)

उद्दीपन-विभाव

एकांत वन, आश्रम, सत्संग, तीर्थ-स्थान।

"चलीं अकेल जगही में कतहीं,
बइठी ध्यान लगाईं।
दुख के दूर करे के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जतन जुगुति कुछ पाईं ।"
इहे सोचि साथिन के,
कहीं रोकि ठहरा के;
थोरे दूर पहुँचि बन भीतर,
हरियर सघन सुघर जामुन तर ।
हरी मखमली—
दइबी सेज बिछावल,
नीलम मनि गाँथल धरती पर,
तुरत बइठलन पलथि मारि !
सभ परपंच बखेड़ा टारि !
ध्यान लगा के सोचे लगलन,
जनम-मरन के गूढ़ सवाल !

—दण्डीस्वामी विमलानंद सरस्वती (बउधायन, पृ० ३६)

ओह आसरमवासी,
सभ तपसी लोगन के
ओहि जा उनका,
किसिम-किलिम का,
अरचा-पूजा-तप साधन के,
लउकि गइल मजिगर तसवीरि
मन में सोचि विचारी कुँवर तब,
सहज पियासल ततु ग्यान के,
हाँथ-जोरि के माथ नवावत,
एगो तपसी मुनि से कहलन—
"पहिले-पहिल आज हमरा के,
भइल तपोवन के शुभ-दरशन
धरम नेह हम जानत नइखीं,
रउरा मन में भाव बसल जे,
जवना के शुभ सवतुक जानीं,
बूझि विचारि तउलि के मानीं,
हमरा के अब उहे बताईं
शुद्ध बोधि के डहर देखाईं !!

—दण्डीस्वामी विमलानंद सरस्वती (बउधायन, पृ० ५४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बइठल राजकुँवर के मुनिवर
आदर नेह भरल नयनन से
पीयत जनुक ध्यान लगा के,
सवतुक सुरस बचनियाँ कहलन—
हे बड़भागी !
चतुर पारखी
कठिन काल गति परखे वाला
हमके मालूम भइल कि रउरा
मातल हाथी नियन अभय हो
भारी बन्हन तोरि निकललीं।

—दण्डीस्वामी विमलानंद सरस्वती (बउधायन, पृ० ६२)

गंगा-वरुना का संगम पर,
जहवाँ केतने संत सिरोमनि,
मनी महरसी तपसी साधक,
पंडित निपुन विचारक ग्यानी,
सरधा भगति विनय के मूरति,
बहती विमल ग्यान धारा में,
बुड़की लगा ध्यान में लीन।
सुगति-मुकुति का—
ओही जनम-धरतिया,
परम पवित्तर,
कासीपुरी धरम-नगरी में,
बजा नगारा शंख धरम के,
विमल शांति सुखदाई;
सवतुक सुगत-शील के
नया धजा फहरावे खातिर;
जाई रहल बानी हम घूमत,
देखत-ताकत, समझत-बूझत,
दुखी लोग का इच्छा खातिर,
बहुमत जनता का हित साधन;
शांति चैन सुख खातिर।

—दण्डीस्वामी विमलानंद सरस्वती (बउधायन, पृ० १२६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुभाव

रोमांच।

जब ऊ विमल बउध हो गइलन,
धरती घूमलि;
मद में माँतलि नारि समान,
सोधन का संग—
दसो दिसन में फइलल तेज;
हँसल अकास नगारा ठनकल,
मगन होई के,
देवता लोग बजावल।
बरखा बरिसल बे बदरी के,
बहलि बयारि मंद सुखदाई,
असमय बिरिछ गिरवलन,
उनका कुटिया का चउगिरदा,
गिरल सरग से,
सुबरन हीरा मोती,
मनि मानिक आ—
नंदन बन के फूल सुगंधित,
पारिजात मंदार !
नदी तीर का,
विमल शांत जंगल के
सोभा भइलि विचित्तर।
जहाँ उगल कंचन फुलवारी,
चंपा जूही चटक चमेली,
अलबेली बेइलि के

—दण्डीस्वामी विमलानंद सरस्वती (वउधायन, पृ० १२१)

संचारी भाव

प्राणी पर दया, इयाद, हर्ष, मति।

फुलवारी में हंस गिरल जब,
लागल देवदत्त के बान।
तब सिद्धारथ दउरि उठवलनि,
धोवलनि ओकर घाव।

—दण्डीस्वामी विमलानंद सरस्वती (वउधायन, पृ० १६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ओहि जगहि में—
हम ई रहलीं,
ओइजा से गिरि एह जा अइली.'
एह तरह से—
उनका सहजे,
परतछ देखला नियर—
हजारन,
जनम के बतिया परलि इयादि।
बात तवना-तवना जनमन में,
जनम जनम के सुमिरन कइके,
महापुरुस ऊ परम दयालु,
कइलन दया दुखी जीवन पर!

—दण्डीस्वामी विमलानन्द सरस्वती (वउधायन, पृ० ११४)

कामदेव का
सेना सहित हार के भगले,
कालरूप अज्ञान असुर के,
मुलुक बान्हि के पटके वाला,
मुनि का विजयी भइले,
सोहल चान सहित आकाश,
नई नगद अलबेली—
बिहँसत नारि समान।
अउरी मंगलमय सुखदायी,
फूल सहित पानी बरसवलसि,
खुश हो विमल सुवासित!

—दण्डीस्वामी विमलानंद सरस्वती (वउधायन, पृ० ११२-१३)

कारन अइसन कारज होला,
ई त साफ जनाता।
तब निरगुन जे सहज सुभावन,
सगुन सरूपी बदले वाली,
तिरगुनियाँ दुनियाँ के,
कारन कइसे होइ सकेला?
'जब सुभाव अविकारी,
जग के कारन होइ सकेला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन मानल जाय
तब कारज समकठा जगत ई,
कइसे बनी बिकारी ?
जो ई कहल जाय कि
नित्त सनातन सहज सुभाव,
हऽ पैदा करवइओ,
ए से कारन होइ सकेला,
तब तऽ कारन झुंड झोंटइला—
जटा-बरोहि कठिन के
कबे नास ना होखल चाहित !

—दण्डीस्वामी बिमलानन्द सरस्वती (बउधायन, पृ० १५६)

भक्ति रस

जहँवा ईश्वर विषयक प्रेम विभाव आदि से परिपुष्ट होला, उहाँ भक्ति रस जानल जाला। भक्ति रस में धार्मिक भावना काम करेला। एह में भय आ स्वार्थ मिलल रहेला। भक्ति में श्रद्धा के तत्व प्रधान होला।

स्थायी भाव

ईश्वरानुराग चाहे ईश्वर विषयक अनुराग।

आलम्बन

परमेश्वर, राम, कृष्ण, अवतार आदि।

हे राम, नमीं तोर रूप महा, केहि भाँति से चित सें धारीं तूँही।
ज्ञानी कहऽ चक्रधारी कहऽ, धरा के धरैया बाड़ होऽ तूँही॥
सत्य निखार के सार तूँही, हवऽ ज्ञान विज्ञान के तत्तो तूँही॥
धर्म के सार, कर्म प्रसार, कर्त्तव्य हवऽ, नित्य ब्रह्म भी तूँही॥

—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (साहित्य रामायण अयोध्या कांड, पृ० १)

राम चन्द्र बाप मोर, रामचन्द्र भाई हवे,
रामचन्द्र अग्रज-अनुज आ बहीनियाँ।
रामचन्द्र भरतार, रामचन्द्र प्रेमिका आ,
सीतापति रामचन्द्र मोर दुलहीनियाँ॥
रामचन्द्र पूत-धिया, रामचन्द्र हीत-मीत,
चेला अरु गुरु रामचन्द्र के चरनियाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम रामचन्द्र-दास, दास रामचन्द्र मोर,
नाता सब आन झूठ, झूठ सब दुनियाँ ।।
—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीराम कथा, पृ० २४)

होखल पुत्र अनोखा रूप, तेज पुंज शीतल पुर्णेन्दु ।
बाल सुलभ चंचलता साथ, सुन्दरता सिमटलि बनि बिन्दु ।।
निराकार के तेज महान, नराकार में धइलसि रूप ।
विश्वंभर मानवता पाइ, खेलि फरी जस छाया-धूप ।।
—चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' (नारायण, भाग १, पृ० ४६-४७)

राम-लछुमन के कहे रच्छक सभे संसार के
पाँव पूजे जोग बा 'नरसिंह' रूप लखार के
—अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' (कौशिकायन, पृ० ६६)

लोग अनेकन भाव अनेक से राम के रूप हिया बीच लेखे
डाही, सनेही, उदार, उधारक आदि अनेकन रूप निरेखे
—रामवृक्ष राय 'विधुर' (सीता-स्वयंवर, पृ० १३)

उद्दीपन-विभाव

परमेश्वर के अद्भुत कार्य आ अनुपम गुण ।

निरगुन सगुन विसम समरूपा । ज्ञानेन्द्री जे अगम अनूपा ।।
निरमल पूर्न दोस से रीता । चिदानन्द सत ज्ञान अतीता ।।
लीला करत मनुज तन धारी । प्रगटि क माया जगत खरारी ।।
—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह नाथ' (आरण्यकांड, पृ० २१३)

राम भद्र लेखा जग होई के विवेकी सब
लोग के जे बूझे निज बन्धु के समान बा ।
नृप सुत होई अधिकार के न धारे कबो,
दीन से बराबरी करे जे से महान बा ।।
ऊँच-नीच, भेद घृणा केहू से न मनला के,
नगर में घर-घर होत गुण-गान बा ।
राखे समभाव जाति-पाँति छोड़ि लोग कहे—
पूत अवधेश के बुला का भगवान बा ।।
—श्रद्धानन्द पान्डेय (श्रीराम कथा, पृ० ४५)

शरद् काल के वन में कान्हा साधल बेणु बजावे ।
उठ बेणु से सुर रसीला जग के ताप मिटावे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होखे मुग्ध चराचर छन में देव मुग्ध सुरनारी।
कामदेव छोड़े पंतचिका पयीं पतंग भिखारी।
यमुना छाड़े धार तरंगित-पशु पक्षी टक लावे।
वन उपवन मुसकाई फूल में लतिका फूल गिरावे।

—चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' (नारायण, प्रथम भाग, पृ० ८९)

तेहीं अवसर मोहन ले मुरली,
करुनानिधि भक्त के भाव में अइलें,
दिहलें फल-फूल के फेंकि सजी,
वन बइरि त छुअबो नहिं कइलें।
गुलेनार गुलाब के हार तूरे,
इनके व्यवहार से ना मनुसइलें,
गाँठर खोलि सुधारस बोलि,
ऊ चाउर चारि भुजा ले खइलें।

—दूधनाथ शर्मा 'श्याम', पृ० ३३

लागल गाँथे रोब, क्रोध में अटपट बोले।
हरि लउकवलन रूप, धरनि-नभ-दस दिसी डोले ॥
भोज छपन परकार, प्रभु देलन झटकारी।
खात बिदुर घर साग, लोक पालक हितकारी ॥

—रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (निरधन के धन श्याम, पृ० ५५)

हाथ उठा मुरदा के हरिजी, हाथे पर कइ दिहले दाह।
राखि छिटाइल भू मंडल में, चकित देखि सबही नर नाह ॥

—रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (निरधन के धन श्याम, पृ० १४७)

अनुभाव

नेत्र-विकास, गद्गद् वचन, रोमांच।

असमंजस में भरल नयनवाँ
सीता के बनि गइल चकोर
मुनि का पंजरा लछुमन जवरे
रहले रामचन्द्र चितचोर

—अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी' (कौशिकायन, पृ० ९५)

बेरि कि बेरि बिलोकीला बाकिर नैन तबो कबहूँ ना अघाले
शोभा सरोरुह के मकरन्द कि आँखिन में सखि नाहीं समाले

—रामवृक्ष राय 'विधुर' (सीता-स्वयंवर, पृ० १५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टेंढ़ नयन करि तिरिछा देखत।
पति बतलवली राम संकेतत।

—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (साहित्य रामायण, अयोध्याकांड, पृ० ११५)

भीमसेन सरदार, हरि से मिलें ऽठठाइ के।
'धन्य हईं करतार, दरसन दिहलीं आइके।।

—रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (निरधन के धन श्याम, पृ० ७३)

पाँव धइ सोझ सुग्रीव कइले अरज
"माथ पर बा चढ़ल नाथ ! अनघा करज
खास हमरा गरज एक महिमा धनी।
सूदि में सेवकाई करे द तनी।

—अविनाशचन्द्र विद्यार्थी (सेवकायन, पृ० १३२)

अइलऽ चला भल कइलऽ बड़ा,
न त का गति होत हमार कन्हइया !
जौले न आयल तू रहलऽ,
एन्हने जनले हम धाने क पइया।

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० ११५)

सुनते राम आगमन धावलि। निज जीवन धन-धन अनुभावलि।।
आतुर भाव धाई पग गीरलि। रूप निरेखत प्रेम भुलाइलि।।
बचन न कन्ठ कसहूँ बहिराइल। कहे क रहल से बेत भुलाइलि।।

—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (अरण्यकांड, पृ० २८६)

भंग भये धनु संग सखी सियजी चलली, हियरा हुलसाला।
राजधिया डलली प्रभु के कर में अंगुठी गर में बरमाला।।
भूप सुता पहुना अवलोकत एक टके पुर लोग सिहाला।
देत अशीष निहाल हिया अति स्नेह-सना रसना लपटाला।।

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० ६८)

रउवा ना बेटा केहू के, ब्रह्म जीववश देही भइलीं,
रउवे पुत्र-पिता-मिता जग के भक्तन खातिर नाथ कहइलीं।

—चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' (नारायण, दूसरा भाग, पृ० ३०१)

संचारीभाव

हर्ष, निर्वेद, गर्व।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुर नभ दुंदुभि झूंकि अघइले । जय जयकारत फूल बरिसलें ॥
हरखित जग ब्रह्माण्ड हरखलें । विस्व धरातल नभ मन मोहलें ॥
—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (साहित्य रामायण, लंकाकांड, पृ० १५४)

सोहत एक लगे नव दम्पत्ति चार निहारि सभे अगराले ।
बात सहेलिन के मधु पागल के रस पा दुलहा मुसकाले ॥
—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० ७०)

राम क राज भरत कस भोगी ? राजा भरत राम बन जोगी ।
× × × ×
चातक के जग मोर समाना । व्यर्थ दोस जे बिही डरहना ।
—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (अयोध्याकांड, पृ० १४०)

मोहि आजु लागेला, सूना संवसार बाइ
पतियन में केहू ना पातिव्रत जरि गइल
—चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' (नारायण, पृ० ३३३)

जो केहु सकी सभा पद टारि ।
फिरिहें रघुवर सिया क हारि ॥
—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (साहित्य रामायण, लंकाकांड, पृ० ३७)

अगर राम बधिहें तहरा के त उनकर लघुता होई ।
मगर धरम के छत्री के जाई, अगर क्रोध उनकर जो सोई ।
गूंज रहल बा शब्द विजय के हमरा स्वामी डंका में ।
—विश्वनाथ प्रसाद शैदा (रावन-अंगद संवाद)

तब सभे मिलि सोचे आप में,
सभ चले उद्धव के सामने,
सभ चले पूछे ओ पथिक से,
का सनेसा आइल श्याम के ।
—चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' (नारायण, पृ० १५१)

वात्सल्य रस

जहाँ पुत्र आदि के प्रति माता, पिता के वात्सल्य से भरल स्नेह के पुष्टि होला, उहाँ वात्सल्य रस होला । छोट-छोट बच्चन के चेष्टा आकर्षित करेला आ ओकरा एह चेष्टा से ओकरा प्रति एगो सनेह उभरेला । इहें वात्सल्य रस झलक जाला ।

स्थायी भाव

वात्सलतापूर्ण सनेह ।

आलम्बन विभाव

पुत्र, बच्चा वगैरह ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्दीपन विभाव

लइका के चेष्टा, तोतराइल, गिरत-पड़त चलल, हठ कइल वगैरह।

अनुभाव

लइका के चूम्मा लिहल, गोद में लिहल, ओकरा के निहारल, ओकर बात सुन के खुश भइल।

संचारी भाव

उत्सुकता, हर्ष, आवेग, अनिष्ट के आशंका वगैरह।

उदाहरण

बाजत ढोलक गीत गवात, भये ललना अति होत बधाई।
बैठि झुलावत होरिल के पलना अगरा प्रभु के सब माई॥
तेल लगा अबटाइ सुदेह व काजर दे लिलरा प लगाई।
चूषत बाल कवो दुधुआ अस बा अपने अँगुठा मुँह लाई॥
दाँत बिना बिहँसे ललना मुख देखि हिया हुलसा अगराला।
रेशम के अस केस कपार प, अंक लगावत जीव जुड़ाला॥
घूमल चाहत पारल कान्ह परीकल बा अति बाल बुझाला।
माँ कइ मागत, नोहत-नोचत, आन करे खिसिया चिचिआला॥
भा बनि घूरल राम चले, कछु पाइ करे कसिके किलकारी।
ठेहुन जात छिलाइ त रोवत, धा तब गोद धरे महतारी॥
पोंछत घूल, कपोल विचूमत, लोरल आँख हँसे कचरारी।
पा मणि से बढ़ि पुत्र अमोल, सराहत भाग सभे नृप नारी॥
बालक राम बढ़े जइसे शशि, शोभित भाल लगावल रोली।
घूँघुर बाजत बा कटि में, अगरात हिया सुनि तोतर बोली॥
बन्धु संगे घर-बाहर घूमत ले गुड़ आ भुँजुना भरि झोली।
धाइ धरे तितली कबहूँ हरि गोल बनावत खेलत गोली॥

—श्रद्धानन्द पांडेय (श्रीरामकथा, पृ० ३४४)

इहाँ 'राम के बाल रूप' आलम्बन; बालक राम के 'अंगूठा चूसल', 'विहँसल', 'घुटना के बल चलल', 'कान्ह पर चढ़े के हठ', 'तोतरा के बोलल' वगैरह उद्दीपन विभाव; 'अंक लगावला', 'गोदी उठवला', 'बालक राम के मुँह निहरला' 'चूम्मा लिहला' में अनुभाव, आ 'हिया हुलसइला-जीव जुड़इला', में हर्ष संचारी; झट से गोद उठवला में आवेग संचारी के कारण वात्सल्य रस के प्रधानता बा।

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी काव्य में छन्द

छन्द : परिभाषा आ परिचय

अक्षर, अक्षरन के संख्या आ क्रम, मात्रा के गिनती अउर यति-गति वगैरह से सम्बन्धित विशिष्ट नियम सब से नियोजित आ संयमित पद्य-रचना के 'छन्द' कहल जाला। 'छन्द' शब्द 'छद्' धातु से व्युत्पन्न भइल बाटे। एकर अर्थ ओढ़ावल, ढाँकल आ प्रसन्नता पहुँचावल होला।

छन्द काव्य के बाहरी वेष-भूषा के साधन ह, तवहुँओ छन्दन में आपन एगो विलक्षण सौन्दर्य आ आकर्षण होला। छन्दोवद्ध रचना में सुघरपने ना प्रभावो जादा होला। एही से इतिहास वतावत वा कि विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' छन्दमय बाटे आ आदिकवि बाल्मीकि के पहिला रचना—

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शास्त्रतीः समाः।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमबधीः काम मोहितम्।"

छन्दे में निकलल रहे।

छन्द शब्द के पहिला चर्चा ऋग्वेद में मिलत बाटे। वेद के छव अंगन में शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, ज्योतिष के संगे-संगे छन्दो के वेदांग रूप में प्रतिष्ठा बाटे। पिंगलाचार्य के 'छन्दः सूत्र' आ 'अग्नि पुराण' में छन्द के दुगो विभाग 'वैदिक' आ 'लौकिक' कइल गइल वा। एह दुनो वर्ग में छन्दन के विभाजन शास्त्रीय ना हो के व्यावहारिक जादा बाटे, जवना के आधार छन्दगत विशेषता, ऊ साहित्य बाटे, जेकरा में वर्ग विशेष का छन्दन के प्रयोग भइल बाटे। वैदिक साहित्य में प्रयोग में आवे वाला छन्दन के 'वैदिक' आ ओकरा से अलग लौकिक साहित्य में प्रयुक्त छन्दन के 'लौकिक' मानल जाला।

वैदिक देववाद के अनुरूप वैदिक छन्दन के कल्पना भइल बाटे। छन्दन के विशेष महत्त्व के कारण 'छंदांसि' शब्दे वेद के बोध करावे वाला हो गइल। 'वैदिक छन्द' वैदिक देवता के अइसन उपास्य, वन्दनीय, अलौकिक शक्ति से भरल-पूरल मानल गइल वा। 'छंदांसि वै देविकाः' चाहे 'छंदांसि देव्यः' जइसन कतना उक्ति वैदिक साहित्य में जगह-जगह पर आइल बाटे। वैदिक छन्दन के रूप-विधान में तत्कालीन वातावरण के स्वच्छन्दता साफ-साफ लउकत वा।

वैदिक युग के सामाजिक आ आध्यात्मिक चेतना के वैदिक छन्द समर्थता का साथे वहन करत बा आ ओकरे से अनुप्राणित होके उनकर विकास भी भइल बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकरे फल ई बा कि वैदिक छन्द बाद का संस्कृत साहित्य का छन्दन के तुलना में जादा स्वछन्द आ मुक्त बुझात बाटे। ओह में ना वर्ण के गुरु-लघुक्रम के निश्चित नियोजन मिलत बा आ ना चरण भा पाद के व्यवस्थित संख्या। खाली वर्ण के संख्या निर्धारित बुझात बाटे। स्वराघात के साथ गेयता वैदिक छन्दन के एगो अउर खासियत बाटे। सामवेद छन्दोवद्ध वैदिक मंत्रन के गान खातिर सुविख्यात बाटे। इहे परम्परा आगे चलके लोकगीतन में मिलत बा। काहे से कि लोकगीतन में लोकधुन के प्रधानता बा। लय के साथ गायन लोकगीतन के प्रमुख विशेषता बाटे। लोकगीतन में भी ना त मात्रा के गिनती के आग्रह बा, ना तुक के आग्रह बा आ ना वर्ण के गिनती वगैरह के। लय आ तरज के कारन ही लोक धुनन के पहचान हो जात बा। एकर स्पष्ट कारन बा, आज का लोकभाषा सब के जड़ वेद में मिलत बा। वेद के भाषा भी लोके भाषा ह। वैदिक कालीन लोकभाषा के साहित्यिक रूप छन्दोवद्ध होके, छन्द आ वैदिक साहित्यिक भाषा होके अहथीर हो गइल, बाकिर, लोकभाषा आगे बढ़त गइल।

'लौकिक छन्दन' के क्षेत्र बहुते बड़का बाटे। सब के सब मात्रिक छन्द एही में आवेला। १ से २६ वर्ण तक के सब वृत्त अइसे त वैदिक मानल जाला, बाकिर पाद व्यवस्था वैदिक नियम के अनुसार ना भइला पर ऊ लौकिक मान लिहल जाई। लौकिक छन्द प्रायः चार चरण के होला। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश अउर हिन्दी में लौकिके छन्द प्रयुक्त भइल बा। एकर आपन अलग गेयता के परम्परा बा। बाकिर, वैदिक गेयता वाला स्वच्छन्दता एह में नइखे मिलत। संस्कृत के वार्णिक वृत्तन के छोड़ के, प्रायः बाचल सब लौकिक छन्दन में तुकान्त के विधान मिलत बा। वैदिक छन्दन के अपेक्षा लौकिक छन्दन में नियमन आ स्थिरता के आग्रह जादा बा।

भोजपुरी लोकभाषा ह, एह से एकरा में वैदिक परम्परा के लोक धुनन के प्रचुरता बा आ भोजपुरी जातीय जीवन में छान्दसिक स्वच्छन्दता पेहम बा। आगे चलके हिन्दी-संस्कृत के काव्य रूप से प्रभावित होके चाहे पिंगलशास्त्र, छन्दोमंजरी, वृत्तरत्नाकर आ छंद प्रभाकर के प्रभाव में अपना छंदन का ज्ञान के प्रस्तार भोजपुरी कवि कइले बाड़न। खास करके भोजपुरी में प्रबंधकाव्य लिखे वाला लोग के ध्यान एह तरफ जादा रहल बा। एही से भोजपुरी का काव्य साहित्य में लोक धुन के साथ-साथ लौकिक छन्दन के उपयोग प्रचुरता में मिलत बा। बाकिर, कवि शिक्षा के अभाव, व्यक्तिगत अनुशासन में ढीलाई आउर परिश्रम का कंजूसी के कारने कवि लोग छन्द के बन्धन तूड़े में बहुत दूर ले सफल भइल बाटे।

अब त, भोजपुरी में विदेशी छन्दन के प्रभाव भी साफ-साफ लउकत बा आ एकर पोढ़ परम्परा बन गइल बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्द शास्त्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द

वर्ण—वर्ण दू तरह के होला—स्वर आ व्यंजन। छन्द शास्त्र में वर्ण के गिनती करत समय व्यंजन के ना गिनल जाए, खाली स्वर के गणना होला। जइसे 'स्त्री' शब्द (स्+त्+र्+ई=स्त्री) में चार वर्ण बाटे, बाकिर, एकरा के एक ही गिनल जाई। काहे से कि एके गो स्वर-ई बाटे।

मात्रा

छन्द शास्त्र में स्वर के मात्रा कहल जाला। स्वर कहला से स्वर से युक्त व्यंजन भी लिहल जाला।

ह्रस्व-स्वर—एक मात्रा वाला स्वर के ह्रस्व कहल जाला। जइसे—अ, इ, उ, ऋ। जइसे—मुनि।

दीर्घ-स्वर—दू मात्रा वाला स्वर के दीर्घ स्वर कहल जाला। जइसे—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ। एह स्वर सब के उच्चारण में एक मात्रा वाला स्वर से जादे समय लागेला। उदाहरण खातिर—गीना।

एह तरह से ह्रस्व के एक मात्रा आ दीर्घ के दू मात्रा मानल जाला।

संख्या आ क्रम

मात्रा अउर वर्ण का गिनती के संख्या कहल जाला।

लघु आ गुरु

जवना वर्ण के एक मात्रा होखे आ ऊ अनुस्वार अउर विसर्ग से रहित होखे, ओके 'लघु' कहल जाला। मतलब कि अ, इ, उ, अउर ऋ वगैरह ह्रस्व आ इनका साथ मिलल एक, दू, तीन चाहे एकरा से अधिक व्यंजन के लघु मानल जाला। जइसे—'नयन' में तीन वर्ण लघु बा।

चन्द्रबिन्दु ँ वाला ह्रस्व स्वर भी लघु मानल जाला। जइसे—'हँसी' में 'हँ' लघु बाटे।

आ, ई, ऊ, ॠ वगैरह दीर्घ स्वर आ इनका से मिलल व्यंजन वर्ण 'गुरु' होला। जइसे—नाना, मीता।

ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर से मिलल व्यंजन वर्ण गुरु होला। जइसे—पैसा, पैना, लेखा।

अनुस्वार वाला सब वर्ण गुरु होला। जइसे—लंगा, चंगा, रंगा।

विसर्गान्त सब वर्ण गुरु होला। जइसे—दुःख।

संयुक्त वर्ण से पहिले के लघु वर्ण भी गुरु मानल जाला। जइसे—'सत्य' में 'स' 'कर्म' में 'क'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हल् अक्षर से पहिले के लघु वर्ण भी गुरु मानल जाला। जइसे—'सत्' में 'स' गुरु बा।

पाद के अन्त में होखे वाला लघु वर्ण के भी कबहुँ-कबहुँ जरूरत का मोताबिक गुरु मानल जाला।

यति

'विराम' के यति कहल जाला। विराम से मतलब ई बा कि जहाँ कुछ देर खातिर ठहरल जाए।

गति

छन्द में पढ़े वाला लय के गति कहल जाला। मात्रा के संख्या पूरा भइलो पर 'गति' भा 'लय' के बिना छन्द ना बने।

तुक

पाद का अन्त में स्वर सहित वर्ण का आवृति के तुक कहल जाला। तुक का प्रयोग से कविता में एगो विशेष कर्ण-प्रियता आ कमनीयता आ जाला। तुक के ही अलंकार में 'अन्त्यानुप्रास' कहल जाला।

पाद भा चरण

कवनो पाद के चउथा भाग के पाद भा चरण कहल जाला। छन्दशास्त्र का नियम के अनुसार कतहीं-कतहीं एक पद्य के चार से वेसी चरण होखेला। जइसे— छप्पय में छव गो चरण होला।

छन्द के भेद

चरण का गति के आधार पर वार्णिक छन्द आ मात्रिक छन्द के तीन भेद कइल जाला—सम, अर्द्धसम आ विषम।

जवना छन्द के चारों चरण मात्रा आ वर्ण के दृष्टि से समान होखेला, ओके सम कहल जाला।

जवना छन्द के पहिला आ तीसरा आउर दूसरा आ चउथा चरण समान होखे, ओके अर्द्धसम कहल जाला। दोहा-सोरठा एकर उदाहरण बा।

जवना छन्द का चरण में कवनो नियमित समानता ना होखे, ओके विषम कहल जाला।

भोजपुरी कवितन में प्रयुक्त कुछ लौकिक छन्द, ओकर परिचय आ उदाहरण

दोहा—ई मात्रिक अर्धसम छन्द ह। 'प्राकृत पैंगलम' (१।७८) के अनुसार एह छन्द का पहिला आ तीसरा पाद में १३-१३ मात्रा आउर दूसरा आ चउथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाद में ११-११ मात्रा होखेला। यति पाद के अन्त में होला; विषम चरण का शुरू में जगण ना होखे के चाहीं। अन्त में लघु होखे के चाहीं। जइसे—

तीरथ राज प्रयाग जा, नहा त्रिवेणी नीर।
पाँव पूजि मुनि-लोग से, हाल कहे रघुवीर॥

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० १७१)

जय जय जय जयकारि कर, अतुल तुमुल ध्वनि बोलि।
हरख उमँग उतसाह से, दल गरजल दिल खोलि॥

—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (साहित्य रामायण, लंकाकांड, पृ० ४३)

सोरठा—ई मात्रिक अर्धसम छंद ह। 'प्राकृत पैंगलम' में सोरठा अपभ्रंश सोरट्टा आ सौराष्ट्रम के दोहा का उलटा कहल गइल बा (१:१७०)। एकरा विषम पाद में ११-११ आ समपाद में १३-१३ मात्रा होला। तुक पहिला आ तीसरा पाद में मिलेला। कतहीं-कतहीं दूसरा आ चउथो में मिल जाला। जइसे—

समर जीति दशशीश, सिया छुड़ा पुष्पक चढ़ल।
रामचन्द्र जगदीश, लौटि रहल बाड़े अवध॥

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० १७०)

श्यामल-मेघ-शरीर, लोचन लाल-विशाल के।
भजु मनुवाँ रघुवीर, दूर करू भव जाल के॥

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० १२८)

चौपाई—ई मात्रिक सम छन्द ह। प्राकृत आ अपभ्रंश का १६ मात्रा के वर्णनात्मक छन्दन का आधार पर विकसित हिन्दी आ आधुनिक भारतीय भाषा के सर्वप्रिय आ आपन छन्द ह। पाद का अन्त में दू गो गुरु होला। तुक पहिला चरण के दोसरा से आ तीसरा के चउथा से मिलेला। यति पाद के अन्त में होला। जइसे—

जब से राम ब्याहि घर अइलें।
अवध मोद मंगल नित बढ़लें॥
देस नगरपुर राज पनपलें।
प्रजा मुदित सुख सगर बरिसलें॥

—दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (साहित्य रामायण, अयोध्या आ आरण्य काण्ड, पृ० ५)

टूटल ताहि समय मुनि ध्याना।
देखहिं राजकुमार समाना॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिशु किशोर बालक बनवासी ।
शिलाखण्ड बइठल संन्यासी ॥

—अर्जुन सिंह 'अशान्त' (बुद्धायन, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, जुलाई, ९०, पृ० २)

राधिका—राधिका २२ मात्रा के छन्द ह। १४ मात्रा पर यति होला। एकरा के लघु गुरु कवनो से शुरू कइल जा सकेला। उदाहरण—

लोगन में कुछ सनसनी बुझाए लागल।
शिशुपाल सभा का बहरी जाए लागल।
हो गइल उपस्थित दृश्य प्रलय का क्षण के।
चिन्ता बढ़ियाइल कुन्ती का पुत्रन के॥

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, पृ० ६२९)

सार—मात्रिक सम छन्द के ई एगो भेद ह। एकरा प्रत्येक चरण में २८ मात्रा होला, जवना में १६ आ १२ पर यति होला अउर अन्त में दू गो गुरु होला। उदाहरण—

लछिमी जवना घर में रहली
सुरसती जवरे चेरी
दुअरा तवना रहे चमाचम
मनि कंचन के ढेरी।

—अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी' (सेवकायन, पृ० ७२)

गीतिका—ई २६ मात्रा के छन्द ह। १४ पर यति होला। गुरु वर्ण से आरम्भ होला। उदाहरण—

देवकी के कंस नाता में परत भाई रहे।
हो गइल गोविन्द से आखिर धाराशायी रहे॥
घोर अचरज एक पति बा आठ वामा के भइल।
देवकी के लाल बा हत्यार मामा के भइल॥

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, पृ० ५४०)

हरिगीतिका—ई २८ मात्रा के छन्द ह, जवना में १६ आ १२ मात्रा पर यति होला। अन्त में लघु-गुरु होखे के चाहीं। उदाहरण—

भरल पाप-घट सिर पर धइलीं, मल से मन नहववलीं।
पर निंदा घरफोरी कइलीं, केहू के ना भवलीं।
अनका पथ के रोड़ा बनलीं, आपन गरज पटवलीं।
जीवन आपन तोर मोर का 'झगड़ा' में बिनसवलीं॥

—कुलदीप नारायण राय 'झड़प' (दीपदान, पृ० ४७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोला—खास करके वीर रस आ वर्णनात्मक काव्य में प्रयोग में आवे वाला एह मात्रिक छन्द का प्रत्येक चरण में २४ मात्रा होला। ११ आ १३ मात्रा पर विराम होला। अन्त में दू गुरु चाहे दू गो लघु होखे के चाहीं। उदाहरण—

बीतल बारह बरिस, पंडवन के वन माही।
मधुसूदन के छोड़ि, न लउकल केहू दाही॥
खतम भइल अज्ञात, विराटे का रजधानी।
परगट भइले बीर, बिता सऊँसे हलकानी॥

—रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (निरधन के धन श्याम, पृ० ५५)

आल्हा—एह मात्रिक छन्द के प्रत्येक चरण में एकतीस मात्रा रहेला आ १६ अउर १५ मात्रा पर विराम होला चाहे ८, ८ आ १५ पर विराम होला। प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु-लघु होखे के चाहीं। उदाहरण—

तब छाती पर भार दिआवसु, पाँच जने के एके बार,
बीसन नवहा हुमचु दबावसु, फुँलचि उठेले सभ्के झार।
घंटन रहे सगल रोजाना, कवन लगाई बल के थाह,
कइ हाथिन के बल फाटत बा, उपटल नवहा माल सोखाह।

—डॉ० सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (कालजयी कुँवर सिंह, पृ० २३)

सरसी—ई सताईस मात्रा वाला मात्रिक छन्द ह। एकरा १६ आ ११ मात्रा पर विराम होला। अन्त में गुरु-लघु होखे के चाहीं। उदाहरण—

मुनिवर अगहर होई उतरले, लछुमन राम पछात,
मनगर रहस अवध से लवटल, ले के लगन छछात।
डेग बढ़ल धरती पर फरहर, धइ पछमाहुत राह,
राज-कुँअर सङ दहिने-बाँये घूमत भरल उछाह।

—अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी' (कौशिकयान, पृ० ५७)

बरवै—ई अर्धसम मात्रिक छन्द ह। एकरा में चार चरण होला। एकरा पहिला आ तीसरका चरण में १२-१२ मात्रा होला आ दुसरका आ चउथा चरण में ७-७ मात्रा होला। उदाहरण—

लहरल धह-धह सउँसे दुनियाँ जात।
ठहरल तनिका सभके जहर जनात॥
केहू ना केहू के दुख पतियात।
अपने आगी काठी जरे जमात॥

—अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी' (भोजपुरी अकादमी पत्रिका, बरिस-४, अंक-१, पृ० २८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीयूषवर्ष—१९ मात्रा के छन्द ह, जवना में १० आ ९ पर यति होला आ अन्त में लघु आ गुरु होला। एह छन्द के आरम्भ गुरु वर्ण से ही होई। उदाहरण—

जन्म बा दू पुत्र के घर में भइल
मत्स्य गंधा के बढ़ल सम्मान बा।
देवतन के हो गइल जइसे कृपा
पुत्र पाके चन्द्र कुल बलवान बा।

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, सभा पर्व)

उल्लाला—२६ मात्रा के छन्दह, जवना में १३ मात्रा के वाद यति होला। दोहा के प्रथम चरण के चार आवृत्ति पर दू पंक्ति उल्लाला के बनेला। उदाहरण—

जिनगी तहरा हाथ में हमरा ऊपर ध्यान द
चन्द्रवंश अवतंश के खुश होके वरदान द।

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, संभव पर्व)

सुमेरु—सुमेरु १९ मात्रा के छन्द ह। पंक्ति के बीच में यति के कवनो विधा नइखे। ई १०, ९ पर चाहे १२, ७ पर भी हो सकेला। एकर आरम्भ गुरु वर्ण से ना हो के लघु वर्ण से होला। उदाहरण—

समर के धूरि बीरन के चटा के
बहुत अति रथिन के विस्मित बना के
गिरल बेहोश जब राधेय रण में
फटे अध्याय जइसे व्याकरण में

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत पृ० १०५१)

दिक्पाल—ई २४ मात्रा के छन्द ह। एह में १२-१२ पर यति होला। उदाहरण—

इतिहास कुछ ऋषिन के कतना पवित्र बाटे।
बाकिर कथा जनम के उनुका विचित्र बाटे॥
कुछ लोग तथ्य सुनि के विश्वास ना करेला।
मुस्कात चुप रहेला, बकवास ना करेला॥

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, पृ० २५३)

मानव—ई १४ मात्रा चाहे २८ मात्रा (१४, १४) वाला छन्द ह। उदाहरण—

लड़िके वसिष्ठ से जहिया संग्राम पराजय खइलन।
मुनि विश्वामित्र तपस्या खातिर जंगल में गइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनुका बहरा भइला से घर में आ गइलि गरीबी।
नाता हिगरावे लगलन सभ रिश्तेदार करीबी।

—गणेशदत्त 'किरण'

पंझटिका—ई मात्रिक छन्द ह। एह में १६ मात्रा के चरण होला। उदाहरण—

आनी बानी सब बीत गइल
रतना के बिरहा गोत गइल
दुनिया के निहसावल छूटऽ
चमकल जे भाग रहल फूटल

—हरीन्द्र हिमकर (रमबोला, पृ० २७)

ताटंक—ई मात्रिक छन्द ह। एह में ३० मात्रा होला। एकरा में १६, १४ पर यति होला। उदाहरण—

एह समइया दान दिहल बा,
राजसूय यज्ञ से बढ़ि के।
आउर के दोसर दानी बा ?
रउआ से जग में बढ़ि के ?

—मणिराज प्रसाद 'मधुकर' (सच्चाई के पहरुआ, पृ० ७०)

डमरू ताटंक—ताटंक छन्द में २ मात्रा बढ़ा दिहला पर डमरू ताटंक हो जाला। बाकिर, मात्रा अन्त में बढ़ावे के चाहा। उदाहरण—

अतना बात बतावत अचक्के द्रोण खड़ा भइलन तरना के
गुल्ली गिरल निहारे खातिर लगले झुकल कुँआ में झाँके
चला सींक के वाण मंत्र से बिना हिचक गुल्ली छेदेलन
दोसर तीर चला के पहिला मारल सींक बेधेलन

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, पृ० ३१२)

महाताटंक—ई १६+१६=३२ मात्रा के छन्द ह। उदाहरण—

अपना बल पर विश्वास रहे ना पहिले से आभास रहे।
आक्रमण अचानक हो जाई ना अइसन तनिको आस रहे॥
पांचालन का सांसन में जइसे बहत पवन ओनचास रहे।
अभिमान रहे कुल गौरव पर आपन जानल इतिहास रहे॥

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, पृ० ५२५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपगीतिका—२६ मात्रा के छन्द ह। १४, १२ पर यति होला। उदाहरण—

मिलल जीविका के साधन तूफान घटे लागल।
रात साफ हो गइल रहे व्यवधान घटे लागल॥
घोर अन्हार, मिटल जिनिगी के बा उजास आइल।
बीति गइल हेमन्त दुआरे मधु बतास आइल॥

- गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, पृ० २३५)

उपगीति—ई २१ मात्रा के छन्द होला। बीच में यति के कवनो विधान नइखे। बाकिर, हमेशा गुरु वर्ण से शुरू होला। उदाहरण—

द्रोण में बा धीर नइखीं खीस देखत।
वीर हम नइखीं धरा पर बीस देखत॥
पुत्र के हत्या सुनत जब शोक होई।
अस्त्र छूटी द्रोण के परलोक होई॥

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, पृ० ८५६)

धाता—ई २६ मात्रा के छन्द ह। लघु वर्ण से आरंभ होला आ १४, १२ मात्रा पर यति। उदाहरण—

कहे अर्जुन मयासुर से तनी सा मुस्कुरा के।
कवन नेकी भइल बा अग्नि से जीवन बचा के॥
अरे, अतना कइल त धर्म मानव जाति के बा।
भलाई के दीन के सत्कर्म मानव जाति के बा॥

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, पृ० ३१२)

विधाता—ई २८ मात्रा के छन्द ह। एह में १४ मात्रा के बाद यति होला। ई लघु से आरम्भ होखे के चाहीं। उदाहरण—

द्रुपद का राजधानी के बहुत सुन्दर बसावल बा।
दुकानन पर जिनिस कतना करीना से सजावल बा।
मकानन के मनोहरता बढ़ल बा चित्रकारी से।
झरोखा में बइठि युवती निहारेली अटारी से॥

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत, पृ० २६६)

विष्णुपद—ई २७ मात्रा के छन्द ह। सम गीति के अस होला। अन्त में गुरु-लघु के योजना होखे के चाहीं। उदाहरण—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात सुनि के द्रोण का मन में रहे जागल दुराव।
जानि गइलन जे परल बा शिष्य पर आपन प्रभाव।
बेकपट कइले बनी ना पार्थ सभसे तेज वीर।
एक लक्ष्य महान बा इतिहास में पारी लकीर॥

—गणेशदत्त 'किरण' (महाभारत पृ०, ४६४)

कुंडली—एह मात्रिक छन्द में एगो दोहा आ एगो रोला होला। ई संयुक्त छन्द ह। दोहा के चउथा चरण के अन्तिम शब्द रोला का पहिला चरण के पहिला शब्द होला आ दोहा के पहिला चरण के पहिला शब्द चाहे शब्द समूह रोला के अन्तिम चरण होला। उदाहरण—

बा विनती सिरी 'श्याम' से, मन पावन हो थीर।
गुन गाईं हम झूमि के, मन मोहन यदुवीर॥
मनमोहन यदुवीर, बखानी जसुमति छइया।
द्वापर के सिर मउर, हरि निरधन के भइया॥
करत पाप अरु मोह, रटन कइला प नाम से।
रहूँ चरन चितलाय विनय बा इहे श्याम से॥

—रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (निरधन के धन श्याम, पृ० १७)

कवित्त—ई वार्णिक दंडक छन्द ह। एह में २६ से लेके ३३ तकले वर्ण प्रत्येक चरण में होला। अन्त में गुरु-लघु-गुरु के कतहीं-कतहीं भेद कर लिहल जाला। ३१ अक्षर के कवित्त मनहरण, ३२ के जलहरण आ रूप घनाक्षरी अउर ३३ के देव घनाक्षरी कहाला।

घनाक्षरी (३१ वर्ण); अन्त में गुरु होला।—एकरा होलहवाँ वर्ण पर चरण का अन्त में यति होला। उदाहरण—

सारी बहुआरी बाटे विविध किनारी बाटे,
सलमा सितारी बेल बूटी धूप छहियाँ।
फीक बाटे, गाढ़ बाटे, लागल पहाड़ बाटे,
मखमली पाढ़ बाटे सिलिक मखनहियाँ।
रखवा जउ होत आजु आगे ठाढ़ि होई जात,
पूछि लेत कान्ह से पकड़ि बूनऊँ बहियाँ।
मोरे आगे कमरी तू ओढ़ के चरउल गाइ,
बोल कान्ह सारी कहाँ पउल रेसमहियाँ।

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० १२५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपघनाक्षरी— एह छन्द का प्रत्येक चरण में ३२ वर्ण होला, जवना में १६वाँ वर्ण के बाद यति होला। आखिरी वर्ण लघु होला। उदाहरण—

जौने कुरुवंश क धुजा अकास फहरलि,
एकरे कुकरम से भूईं लथराइ गैल।
सांतनु कुमार सुरसरि सुत भीषम के,
गलवा प आजु अलकतरा पोताइ गैल॥
पागल बनाइ देला धन मद मनई के,
लोलुप भयल पाप मन में समाइ गैल।
स्वारथ में चूर धृतराष्ट्र अस भैल भाई,
पूत मोह जीति गैल भायप भुलाइ गैल॥

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० ३१)

देवघनाक्षरी—एह छन्द का प्रत्येक चरण में ३२ वर्ण होला। शुरू से आठवाँ, सोरहवाँ आ चउबीसवाँ अक्षर के आगा विराम होला। अन्त में तीन वर्ण लघु होला। अन्तिम पद प्रायः द्विरुक्त होला। उदाहरण—

बनवाँ क सुधि कइसे मनवाँ से भूलि गइलऽ,
नील रंग वाला नभ कहाँ छोड़ि अइलऽ ?
पुरुब जनम में भयल होई भारी पाप
लोहन के पिंजरा में आई के समइलऽ ?
पिहुँकब, कुहुँकब, चहँकब सब छोड़ि,
हमरी बिपतिया में मौन होइ गइलऽ।
जानि गइली हम तूहूँ भीखम बाबा की नाईं
पापिन क अन्न खाइ पापी बनि गइलऽ ?

—चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ० ६५)

सवैया—सवैया के कवनो एगो लक्षण नइखे। एकर चरण २२ से २६ वर्ण वाला होला। व्रजभाषा का एह प्रचलित छन्द के आन-आन भाषा का पद्य-रचना खातिर खूब उपयोग भइल बा। एकर प्रमुख भेद—पाँच-छव गो बाटे। २२ अक्षर के मालिनी भा मदिरा सवैया में सात भगण (ऽ।।) आ एगो गुरु होला। २३ वर्ण का मतगयंद सवैया में सात गो भगण (ऽ।।) आ अन्त में दू गो गुरु होला। एकरा के मालती सवैया भी कहल जाला। २४ अक्षर वाला दुर्मिल सवैया में आठ गो सगण (।।ऽ) होला। किरीट सवैया (२४ वर्ण) में आठ गो भगण (ऽ।।) होला। सुन्दरी सवैया (२५ अक्षर) में आठ गो सगण (।।ऽ) आ एगो गुरु रहेला। सुख सवैया २६ वर्ण के होला, जवना में आठ गो सगण (।।ऽ) आ अन्त में दू गो लघु होला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के कवि लोग मतगयंद या मालती सवैया के रचना प्रचुरता के साथ कइले बा। भोजपुरी में खोजला पर दुर्मिल आ किरीट सवैया के उदाहरण भी मिलेला। उदाहरण—

मतगयंद (मालती)—

पाहन ऊपर राज निदेश लिखा 'सगरो रखले रघुराई
वञ्चक चोर लुटेर तथा नर घातक के शिर काटि टँगाई
जे अनुशासन ना मनिहें अपवाद बिना चढ दण्ड बियाई
मोर निहोर न धर्म विरुद्धल काज करीं कबहीं पुर माई

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० १६१)

दुर्मिल—

सुखदायक नेहत जे सबके हितकारक मातु-पिता हुउवे
जग के मरुभूमि-पियासल आकुल हेतु सुधा सरिता हुउवे
जवना सिय नायक के महिमा लखि लाजत कल्पलता हुउवे
उनुके पद पुष्प चढ़ावल पाठल सप्त शती कविता हुउवे

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० २२३)

किरीट—

पोषल-सुन्दर-तेज कुरंगम, रावण मारिच के बहकावल
देखि सिया भइली अति लोभित, हेम लजावत लेप लगावल
हे प्रभु स्वर्णमृगा तन छाल हमें हति दी अनघा मन भावल
ई सुनते रघुनायकजी धनुसायक ले गइले अनु धावल

—श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्रीरामकथा, पृ० १२३)

लोकधुन—भोजपुरी में लोकछन्द आ लोकधुन होला। भोजपुरी में लोकगीत के भंडार भरल बाटे। हर संस्कार, हर ऋतु, व्रत-त्योहार, जाति, क्रिया के साथ-साथ भजन-कीर्त्तन के अलग-अलग गीत के चलन भोजपुरी प्रदेश में बाटे। एही से अनगिनत धुन के प्रचलन भोजपुरी में बाटे। एह धुन सब के पहचान ओकरा खास लय आ तरज के कारण होला। प्रचुर मात्रा में भोजपुरी के कवि लोग अपना रचना खातिर भोजपुरी लोकधुन के प्रयोग कइले बाटे।

कुछ प्रसिद्ध लोकधुन के प्रकार आ उदाहरण

बिरहा—ई मुख्य रूप से प्रेम आ विरह के उपयुक्त व्यंजना खातिर सार्थक लोकधुन बा। वियोग श्रृंगार के अधिकांश अभिव्यक्ति बिरहा में भइल बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह लोकधुन के जन्म भोजपुरिये प्रदेश में भइल बाटे। बिरहा के १६ गो लोक प्रचलित प्रकार बा। बाकिर, एह में से एक, जवना में दू चरण होला। दूसरा चरण के अन्त गुरु (ऽ) आ लघु (।) होला। साहित्यिक कृतियन में एह प्रकार के प्रचलन जादे बाटे। कुछ उदाहरण—

लजिया दबावे मनमथवा सतावे मोसे एको छन रहलो न जाय।
लखि बल बिरवा जमुनवा के तीरवा री हियरा के धीरवा नसाय॥

—रामकृष्ण वर्मा 'बलवीर' (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० १४१)

नगीचे बहत रहे नदिया जमनवा से बबी लेली लोटवा उठाय।
सुनत नू बाड़ मोती मजुवा कहनिया हो पार ना हुँकारी चितलाय॥

—मधुकर सिंह (रूक जा बदरा, पृ० १६)

पूरबी—एहू छन्द के जनम भोजपुरी भूईं में भइल बा। एकरा के प्रचलित करे वाला रहीं—महेन्द्र मिश्र जी। वियोग का मनोदशा के चित्रण करेवाला ई छन्द के लय आ तर्ज मनोहारी होला। एकर अनेक प्रकार प्रचलित बा। इहाँ दू प्रकार के पूरबी के उदाहरण परोसल बा—

प्रिया मोरा गइले रामा पूरबी बनिजिया,
कि देके गइले ना, एक सुगना खिलौना।
कि देके गइले ना॥
उड़ल - उड़ल सुगा गइले कलकतवा
कि जाइके बइठे ना, ओही सामीजी के पगिया
कि जाइके बइठे ना॥
पगरी उतारी सामी जाँघे बइठवले,
कि कह सुगा ना, मोरे घर के कुसलतिया।
कि कह सुगा ना॥
माई तोर कुटनी, बहिनि तोर पिसनी,
कि जइया कइली ना, तोर दोउरी दोकनिया।
कि जइया कइली ना॥

—महेन्द्र मिश्र (भोजपुरी साहित्य का इतिहास, पृ० १६२)

नेहवा लगा के दुखवा दे गइले रे परदेशी सइयाँ
अपने त गइले पापी, लिखियो ना भेजे पाती
अइसे निठुर श्याम हो गइले रे परदेशी सइयाँ

—महेन्द्र मिश्र (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० २१७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोगिरा—एह धुन के माध्यम से व्यक्तिगत सामाजिक, राजनीतिक गाभी मारल जाला। ई दू पाँति के होला। अन्त में लये के साथ ओकर निचोड़ कहल जाल। उदाहरण—

भोजपुरी से नाक सिकोड़ल बाटे हिन्दी सेवा,
बोल चाल अगरेजी ई सभ अंगरेजन के बेवा।
इहाँ के के बा।

एही लेखा हिन्दी के भो होखत रहे विरोध,
अंगरेजी से साहब लो' का होखे पहिले बोध।
से त आजो काल बा!

—लोक प्रचलित जोगीरा

मंगल—शुभ अवसर पर गावल जाए वाला ईश्वर वंदना का गीतन के मंगल कहल जाला। एकर लय आ तर्ज अलग होला। उदाहरण—

सुनीं एऽ वरऽ रउरे दोहाई ॥
चनन चउकिए चननियाँ,
मोतीअन चउका पुराई ॥ सुनी० ॥

—आचार्य विश्वनाथ प्रसाद (राधा मङ्गल, पृ० २७)

झूमर—लोकगीतन में, खास करके भोजपुरी लोकगीतन के ई प्रिय गीत प्रकार ह, जवना में श्रृंगार का दूनू पक्ष के वर्णन आवेला। एकर लय मस्ती से भरल होखेला। उदाहरण—

का जनिहैं का जनिहैं का जनिहैं हो
दुख मोर कन्हइया का जनिहैं

बीच डहरिया में फोरले गगरिया
घरवा में अइले प मरलीं मतरिया
गागर के दमवा चुका जइहैं ॥ दुख० ॥

—रामसूरत राम (गोपी विरह, पृ० ५६)

सोहर—ई लमहर बहर वाला छन्द प्रकार ह, जवन औरत के गर्भाधान के बाद से लेके पुत्र जनमला के बाद तक गावल जाला। हर पाँति के अन्त में 'हे' चाहे 'हो' जरूर गावल जाला। हर दोसरका पाँति में 'ए ललना' चाहे अउरू कवनो सम्बोधन कहल जाला। जइसे—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवहु मोर परोसिन, गोत दयादिन हो,
ललना होरिला जनमवा के सोहर, गाइ सुनावहु हो ।
—लोक प्रचलित गीत (भोजपुरी लोकोक्ति और मुहावरे, पृ० २६)

आनन्द घर-घर अवध नगर नौबत बाजत हो,
ललना बढ़ि अइले हिया से हुलास सुमंगल साजत हो ॥१॥
रघुकुल कमल दिनेस अवध में उदय लेलन हो,
ललना खिली गइल जस सब लोक सुनत मन मोद भइल हो ॥२॥
—कवि हरिनाथ (भोजपुरी कवि और काव्य, पृ० १६३)

फगुआ—बसंत में गावल जाए वाला गीत ह, जवन आपन अलग लय आ ताल राखत बा । इहो दू तीन तरह के होला— धमार, झूमटा आ होरी । जोगीरो जादा तर फगुआ के अवसर पर ही गावल जाला । धमार में दूइये पाँति के चढ़ा उतार के देर तक गावे के प्रचलन बा । उदाहरण—

हे गोरी, तोहर बड़ी-बड़ी अँखिया
नैना कजरवा शोभेला । —लोक प्रचलित फगुआ से

एही जगहिआ के ब्रह्मा ।
ब्रह्मा ! होखीं ना सहाय ।
—लोक प्रचलित फगुआ से

होरी के पद्य तनी लम्मा होला—
आजु सदाशिव खेलत होरी
जटाजुट में गंग बिराजे, अंग में भसम रमोरी ।
—लोक प्रचलित होरी

चइता—चैत माह में चइता गावे के प्रचलन बा । एकर पद्य अपना ढंग के होला । एकरा के गावे के लय अलग होला । अक्सरहाँ पाँति के शुरूआत 'रामा' से कइल जाला आ अंत में निश्चित रूप से 'हो रामा' कहल जाता । उदारहण—

रामा चइत की नीनिया बड़ी बइरिनिया
हो रामा, सुतलो बलमुआ,
नाहीं जागे हो रामा,
सुतलो बलमुआ । —लोक प्रचलित चइता

चइत के दूगो अउर भेद बा— घाँटो आ चइतावर । घाँटो अपेक्षाकृत लम्बा होला जबकि चइतावर एक पाँती के । इहाँ दूनों के एक-एक उदाहरण प्रस्तुत बा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घाँटो -

छोटीमुटि ग्वालिनि सिर ले मटुकिया हो रामा चलि भइली।
गोकुला सहर दहिया बेचन हो रामा, चलि भइली।।
एक बन गइली, दूसर बने गइली, रामा तीसर बने।
कान्हा मोर घरेला अँचरवा हो रामा तीसर बने।।
छोड़ु छोड़ु कान्हा रे हमरो अँचरवा हो रामा।
पड़ि जइहें दही के छिटिकवा हो रामा, पड़ि जइहें।।
तोरा लेखे ग्वालिनि दही के छिटिकवा हो रामा, मोरा लेखे।
अगर चनन देव वरिसे हो रामा, मोरा लेखे।।
दास हो बुलाकी चइत घाँटो गावे हो रामा, गाई गाई।
बिरहिन सखि समुझावे हो रामा, गाई, गाई।।

—बाबा बुलाकी दास (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० ६१)

चइतावर—

घाट छोड़ू बाट छोड़ू भइया सौदागर,
हो राम धनी चिरवा खोल के नहाएब। —लोक प्रचलित

कजरी—कजरी वर्षा-ऋतु के गीत ह। एकरो कतना तरह के लय आ तरज बाटे। गाँव-गाँव में गावल जाए वाला कजरी के प्रचलित रूप के अतिरिक्त बनारस आ मीरजापुर के इलाका में कजरी के लिखवइया-गवइया शायरन के भरमार रहल बा, जवन कजरी-दंगल के रूप में विकसित भइल रहे। उदाहरण—

एक—

गोरी करके सिंगार चोली पहिरे बूटेदार
जिया मारेली गोदनवा गोदाय के, नयनवाँ लड़ाय के ना ।।१।।
बनी है सूरत कटीली गोल, बोले मीठी-मीठी बोल
मोर फँसौले जाली मनवाँ मुसकाय के, नयनवाँ लड़ाय के ना ।।२।।

—वटुकनाथ (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० १७६)

दू—

कल्हियाँ झलक देखाय चल गइलू रतियाँ कहाँ बितवलू ना।
बसन गुलाबी धानी पहिने हमें फँसवलू ना ।। कल्हिया ।।
कलबल सें बलखाय के जनिया छलबल कइलू ना ।। कल्हिया ।।

—शिवदास (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० १०६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन—

ऐसे मौसिम में मुलायम जियरा धड़-धड़-धड़कै ना।
दमकि-दमकि दामिनि दईमार तड़-तड़ तड़कै ना॥

—रसिले (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० १९७)

चार—

जो पिया बनिहैं रामा, देशवा लागि जोगिया,
हमहूँ बनि जइबों तब जोगिनिया ए हरी।
देशवा का नौंनिया रामा सोइबों आ जगइबो,
देहिया में रमइबो भलु भभूतिया ए हरी।

—लोक प्रचलित (भोजपुरी लोकोक्ति और मुहावरे, पृ० ३१)

जँतसार—जँतसार भोजपुरी इलका में गावल जाए वाला विरह आ करुणा के गीत बा, जवना के विरहिन जाँता चलावत समय गावेली। उदाहरण—

पिया बटिया जोहत दिन गैलों।
तोरि खबरिया न पाइलों॥
केसिया अपने गुधाइला।
मंगिये सेन्दुरा भराइला॥
पिया के सुरतिया लाइला।
जियरा हमार रूंधेला॥
नैना नीरवा ढरि गैलो॥१॥

—राम मदारी (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० ११७)

बारहमासा—ई बरसात में गावल जाए वाला गीत ह, जवना में बारहो महिना के चर्चा आवेला। एकर आपन अलग लय आ तरज बा। प्रचलित बारहमासा का धुन के उदाहरण खातिर कुछ पाँति लिखल जा सकत बा—

प्रथम मास असाढ़ हे सखि साजि चलले जलधार हे।
एही प्रीति कारण सेतु बाँधल सिया उदेश सिरी राम हे॥
सावन हे सखि सबद सुहावन रिमझिम बरसत बुन्द हे।
सबके बलमुआ रामा घरे-घरे अइले हमरो बलमुआ परदेश हे॥

—जोगनारायण 'सूरदास' (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० १६९)

एही तरह से संस्कार गीतन के जतना प्रकार बा, चक्की-चरखा के गीत बा, धार्मिक गीत, माई गीत, पीड़िया गीत बाटे, ऋतु सम्बन्धी गीत बा, खेती सम्बन्धी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत बा, श्रमगीत—रोपनी, सोहनी के गीत बाटे, सबके आपन-आपन लय-तरज आ धुन बा। एहमें से प्रसिद्ध धुन के उपयोग भोजपुरी कवि लोग अपना-अपना रचना खातिर कइले बाड़न।

उर्दू-फारसी से अपनावल गइल छन्द

शेर आ गजल—मोटा-मोटी उनइस गो प्रसिद्ध 'बहर' बाटे जवना में शेर आ गजल के रचना कइल जाला। बहर' के 'वजन' भी कहल जाला। गजल के सब शेर एके 'बहर' में होखे के चाहीं। शेर दू पाँति के होला। दूनू पाँति के 'मिसरा' कहल जाला। पहिला पाँति 'मिसरा-ए ऊला' आ दोसरका पाँति 'मिसरा ए-सानी' कहाला। एक शेर में कवनो बात पूरा-पूरा कह दिआला। पाँच भा पाँच से अधिका शेर से गजल बनेला। गजल के पहिलका शेर के दुनों मिसरा के तुक जवना के 'रदीफ' कहल जाला मिले के चाहीं। बाद के शेर सब में दोसरका पाँति में रदीफ मिले के चाहीं। 'रदीफ' से पहिलहूँ पाँति में तुक मिलेला, जवना के 'काफिया' कहल जाला। गजल के पहिला शेर के 'मतला' आ आखिरि शेर जवना में गजलगो के नाम रहेला 'मक्ता' कहल जाला। गजलगो के नाम चाहे उपनाम के 'तखल्लुस' कहल जाला। दुगो उदाहरण अलग-अलग बहर के देखल जाए—

लोग मस्ती में खूब गावत बा
बेसुरा बाँसुरी बजावत बा
खाक जरि के भइल बा पहिले से
आग मन में के अब लगावत बा
पीट हियरा में बुला सींझि गइल
लोर अब नयनवाँ पसावत बा
जगह के हो गइल किल्लत बुझाला
केहू के मन में के बसावत बा
नेह का गाँव से जाईं कहँवाँ
लोग, देखीं ना दुरदुरावत बा

जगन्नाथ (भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल, पृ० २६)

केतना कदम के डार हम रहनी अगोर के
तबहूँ तोहार बाँसुरी बाजल ना भोर के
अइसे तोहार चाल ई बाटे बहुत पुरान
जालऽ छटक करेज के कनखा खँखोर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तबहुँ दिया उमेद के बाटे जरत अशांत
कबहूँ त पँख प्रान ई थिरकी नू मोर के

—अर्जुन कुमार सिंह 'अशांत' (भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल, पृ० ३३)

विदेशी छन्द

मुक्त छन्द—मुक्त छन्द के प्रयोग हिन्दी काव्य क्षेत्र में एगो विद्रोह के प्रतीक बा। एकरा के स्वच्छन्द छन्द भी कहल जाला। बाकिर मुक्त छन्द छन्दशास्त्र का अनेक परम्परागत सर्वस्वीकृत नियमन के उल्लंघन करत दिखाई देत बा। चरण के अनियमित भइल, असमान स्वच्छन्द गति आ भावानुकूल यति विधान, इहे मुक्त छन्द के विशेषता बा। एह छन्द के भोजपुरी कवि लोग भी बखूबी अपना ले ले बा, बाकिर एह लोग के ई कोशिश बाटे कि लयात्मकता बरकरार रहे। ई यूरोपीय 'फ्री वर्स' 'चाहे' ब्लैंकवर्स' के भारतीय रूप बा। उदाहरण—

रात भर कुकुर लगले स
कवनो चोर आइल रहे साइत।
लोग फुसफुसा के रात भर बतिआवल
अबहीं भोर में जोर-जोर से बोलल लोग—
'साइत चोर आइल रहे
रात भर कुकुर लगले ह स'।

—पाण्डेय सुरेन्द्र (भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, नवम्बर ९०, पृ० ७)

जबले खरहा अस भागेब,
तबले शिकारी कुत्ता पिठिआई,
बीच में कवनो रास्ता-मध्यम मार्ग
हमरा खातिर नइखे।
भागत गोड़ के ठहरा के,
एक बार, आखिरी बार।
जोर लगा के, पीछा फिर के
लड़े के होई—
पहिले सपना से,
फेर अपना से
फेर चिह्नल-जानल मुद्दई से,
नान्यः पन्थाः।

—डॉ० रिपुसूदन प्र० श्रीवास्तव (आगे-आगे)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक अउर उदाहरण देखल जा सकत बा—

बहुत दिन से
हम चउखट जइसन
चुपचाप पड़ल
अपनहीं अड़ल
खात अइलीं लात
बात - बेबात !
जेही आइल
से लाँघि गइल
भा चाढ़ के माथा पर
एड़ी दरकच्चति
हुमचि के छाती का पार भइल

—व्रजकिशोर (बूँद भर सावन, पृ० २३)

सॉनेट—सॉनेट अँग्रेजी कविता के सर्वप्रिय छन्द हा। एह में ४-४ पाँति के तीन छन्द होला आ अंत में २ पाँति के एक छन्द होला। प्रत्येक छन्द के पहिला आ तीसरा अउर दूसरा आ चउथा पाँति के तुक मिलेला। अन्तिम दू पाँति भी तुकांत होला। उदाहरण—

अहिंसक बाघ जो होखे लड़ाई सब करी ओकर
अहिंसा के महातम के सुनी बकरी के मुँहें से
पुजाली देस में दुर्गा सवारी बाघ ह जेकर
नहालें व्यालमाली नित्य गंगाजल से दूबे से
समूचा देस होके एक बोले एक सुर से जो
खड़ा हो तानि के सीना चढ़ा कें भौंह जो तिरछा
पहाड़ो काँपि जाई आदमी के बात के कहो
सुटुकि जाई सजी अणु बस तनिक जे बोलि दे कड़खा
चिरउरी हो रहल बाटे घिनावन हो गइल बाटे
अहिंसा वीर के भूषण वपउती ह सनातन से
अबे सझुरा रहल जे-जे उहे अझुरा रहल बाटे
वफादारी में गद्दारी-समाइल बा सिंहासन से

कुरुसिया एक, एक्के पर लदाई सब, त का होई
ई कुरुसी टूटि जो गइल, त का इतिहास ना रोई

—मोती बी० ए० (काव्या, पृ० १५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाइकू—ई जापानी छन्द ह। भारतीय साहित्य में एकर प्रयोग हो रहल बा। एह में तीन पाँति होला ५-७-५ वर्ण के। आधा अक्षर के गिनती ना होखे। उदाहरण—

साँझ नदी में
रोज फिसल जाला
सूर्य के पाँव।

—कुमार कौशल (पीड़ा के उसाँस, पृ० २३)

हमार गाँव
केवट कठौता में
राम के पाँव।

—सुनील कुमार पाठक (नेवान)

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखक-परिचय

डॉ० ब्रजभूषण मिश्र

शिक्षा : बी.एस-सी. (1974), एम.ए. (हिन्दी) आ पी-एच.डी. (1991)

रचना-गतिविधि : (क) लेखन–(1) 'भोजपुरी प्रबंध काव्य : वस्तु आ शिल्प', पी-एच.डी. शोध प्रबंध, अप्रकाशित। (2) 'घाटी की आवाज', 1985, में हिन्दी के 2 आ भोजपुरी के 5 कविता संकलित-प्रकाशित । 'दू रंग', 1982, स्फुट कवितन के संग्रह प्रकाशित । (4) 'आगे-आगे', 1988, विहार विश्वविद्यालय के भोजपुरी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम के पुस्तक में पाँच गो भोजपुरी कविता संकलित-प्रकाशित । (5) 'टुकी-टुकी जिनिगी', 1990, में पाँच गो लघुकथा संकलित-प्रकाशित । (6) 'दस रतन', 1990, में 'पं. गणेश चौबे के व्यक्तित्व कृतित्व' पर निबंध संकलित-प्रकाशित । (7) 'अचके कहा गइल', 1992, 31 गजलन के संग्रह-पुस्तक प्रकाशित। (8) एकरा अलावे विहार राष्ट्रभाषा परिषद् के 'परिषद पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स' (पटना) 'लोक सारथी' (उरई, उ.प्र.), 'दर्शन मंथन' (मुजफ्फरपुर), 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' (पटना), 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' (पटना), 'भोजपुरी लोक' (लखनऊ), 'भोजपुरी माटी' (कलकत्ता), 'भोजपुरी परिवार पत्रिका' (पतरातू थर्मलपावर), 'भोजपुरी कलम' (पटना) समेत अनेकन पत्र-पत्रिका, स्मारिका, स्मृति-ग्रंथन में हिन्दी आ भोजपुरी के निबंध, समीक्षा, संस्मरण, कहानी आ कविता प्रकाशित।

(ख) सम्पादन–(1) 'कोइल', भोजपुरी मासिक, के 1985 से लगातार संपादन कार्य । (2) 'हिमेशिया टाईम्स', हिन्दी साप्ताहिक (मुजफ्फरपुर) के संपादकीय विभाग में लगभग दू साल तक कार्य । (3) 'भोजपुरी परिवार पत्रिका' (पतरातू थर्मल) के सम्पादक-मंडल में। (4) 'दर्शन-मंथन', हिन्दी मासिक (मुजफ्फरपुर) के सम्पादक-मंडल में । (5) 'हिरामन', अनियतकालीन भोजपुरी पत्रिका के सह-संपादक। (6) 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' मासिक, के सम्पादक मंडल के सदस्य। (7) 'देहाती कवि का ठेठ देसंज आ किसानी संस्कार' (व्यक्तित्व-कृतित्व) नामक ग्रंथ के सम्पादन में रत। (8) 'सेवेन एसेज ऑफ फोकलोर स्टडिज बाई पं. गणेश चौबे' नामक ग्रंथ के संपादन में रत।

साहित्यिक गतिविधि : (1) आकाशवाणी, पटना से दर्जनन कहानी, कविता आ वार्त्ता प्रसारित । (2) अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 10वाँ अधिवेशन में 'भोजपुरी पत्रकारिता : स्थिति आ संभावना' संगोष्ठी के विषय प्रवर्तन । (3) अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 11वाँ, 12वाँ आ 13वाँ अधिवेशन में विषय-समिति के संयोजन-कार्य । (4) 'गिरिराज किशोरी छात्र कविता पुरस्कार', 'पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह कहानी पुरस्कार' आ 'रामनगीना राय कविता पुरस्कार' के निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में कार्य । (5) 'भोजपुरी मंच' (मुजफ्फरपुर वाष्पशक्ति प्रतिष्ठान, काँटी), 'सेवाती' (भोजपुरी साहित्य मंच, मुजफ्फरपुर), 'भोजपुरी साहित्य परिषद' (साहेबगंज), 'वातायन' 'विद्यापति गोष्ठी' आ 'भोजपुरी परिवार' (पतरातू, हजारीबाग) के अनेक गोष्ठियन, कवि-सम्मेलन आ सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजनन में अग्रणी भूमिका। (6) विश्व-भारती (शान्ति निकेतन, प. बंगाल) में 11वाँ इंडियन फोकलोर कांग्रेस में भागीदारी । (7) मुजफ्फरपुर, काँटी, साहेबगंज, कुल्हरिया, पतरातू, भभुआ आदि जगहन पर दसियन संगोष्ठी, कवि-सम्मेलन आ सांस्कृतिक कार्यक्रमन के मंच-संचालन । (8) दर्जनन कवि-सम्मेलन आ विचार गोष्ठिन में काव्य पाठ आ विचार के आदान-प्रदान ।

संगठन : (1) लगातार चार बरिस तक 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के संगठन मंत्री के कार्य, आ अबहीं (2) 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के प्रचार मंत्री के पद पर कार्यरत (3) 'भोजपुरी मंच' (मुजफ्फरपुर वाष्पशक्ति प्रतिष्ठान, काँटी) के सचिव । (4) 'सेवाती' (भोजपुरी साहित्य मंच, मुजफ्फरपुर) के महासचिव । (5) 'भोजपुरी साहित्य परिषद' (करनौल, मुजफ्फरपुर) के साहित्य मंत्री । (6) 'वातायन' (पतरातू थर्मल पावर) के सदस्य ।

सम्मान : 'भोजपुरी संगीत परिषद्', भोजपुर-रोहतास के 24वाँ वार्षिक अधिवेशन आ बलिया जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सोहवाँ अधिवेशन में सम्मानित ।

फिलहाल : श्यामनन्दन सहाय कॉलेज, मुजफ्फरपुर के भोजपुरी विभाग में व्याख्याता के कार्य।

पत्राचार पता : ई-18/3, मुजफ्फरपुर वाष्पशक्ति प्रतिष्ठान, काँटी, मुजफ्फरपुर - 843130

—किरण सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.